मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 54 | अंक : 6 | दिसम्बर, 2013 | मूल्य : ₹10

शिविरा, दिसम्बर–2013
चित्र समाचार

स्काउटिंग

राजस्थान राज्य भारत स्काउट एवं गाइड, झालावाड़ के स्काउटों के द्वारा शैक्षिक भ्रमण के दौरान चित्तौड़गढ़ किले में उनका फोटो ग्रुप।

विज्ञान

श्री खेताजी धनाजी राजकीय माध्यमिक विद्यालय, दादाई (पाली) के छात्रों ने उदयपुर में तकनीकी भ्रमण व अवलोकन किया।

निर्देशन

श्री गोविन्द राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, रायपुर में निर्देशन प्रदर्शनी में लगी सामग्री का अवलोकन करते शिक्षक व अतिथिगण।

एन.एस.एस.

राजकीय बालिका उ.मा.विद्यालय, अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर) की स्वयं सेविकाओं ने 1500 रु. का ड्राफ्ट निराश्रित बच्चों की मदद हेतु भेंट किया।

वाक्पीठ

राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय, विकास नगर (बूंदी) में आयोजित प्रधानाध्यापक वाक्पीठ में निर्वाचित वाक्पीठ।

पुरस्कार

राजकीय प्राथमिक विद्यालय, नांगल गोविन्द (दौसा) के स्काउट शिक्षक रामबाबू शर्मा को सम्मानित करते जिला कलक्टर।

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 54 | अंक : 6 | मार्गशीर्ष -पौष २०७० | दिसम्बर, 2013

प्रधान सम्पादक
डॉ. वीना प्रधान

❁

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

❁

सहायक
सांग सिंह
मुकेश व्यास
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंकड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय है।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प
- हेल्प लाइन बने शिविरा पत्रिका 5

आलेख
- महर्षि अरविन्द का शिक्षा-दर्शन 6
  अंजुम फातिमा
- शिक्षा का काम है चरित्र गढ़ना 7
  शंकर लाल माहेश्वरी
- विश्व एकता में ही जीवन की सार्थकता 9
  अरनी रॉबर्ट्स
- सूर सूर तुलसी शशि उड़गन केशवदास 11
  ओमप्रकाश सारस्वत
- विद्यालय में हो पारिवारिक परिवेश 13
  सत्य नारायण पंवार
- शैक्षिक दायित्व एवं स्कूली शिक्षा की अपेक्षाएं एवं चुनौतियां 15
  दुलीचन्द शर्मा
- शिक्षा और समाज 18
  विद्यानिधि त्रिवेदी
- उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम् 20
  महेश चन्द्र श्रीमाली
- शिक्षा में मानव मूल्य 21
  शशिकान्त द्विवेदी
- बालिका शिक्षा के सरोकार 24
  साँवलाराम नामा
- श्रीमद्भगवद्गीता का शैक्षिक महत्व 28
  वृद्धिचन्द गोठवाल
- हमारी प्राथमिक शिक्षा 29
  मुंशी प्रेमचन्द
- गणित का रोचक शिक्षण 32
  अभिनव कुमावत
- कदमों और कलाई से रची कालजयी कविता और रुबाई 34
  प्रकाश पंड्या
- रचना कार्य में मौलिकता के विकास हेतु कथा पाठों की भूमिका 38
  सुरेन्द्र माहेश्वरी
- आओ विद्यालय वाटिका लगाएं 40
  विष्णु कुमार गुप्ता
- पर्यावरण संरक्षण-हमारी जिम्मेदारी 42
  किशनलाल प्रजापत

हमारी सांस्कृतिक धरोहर
- थार मरुस्थल की शान है बीकानेर 35
  करणी दान कच्छावा

हमारे संस्थान
- राजकीय सेठ आनन्दी लाल पोद्दार मूक बधिर संस्थान, जयपुर 37
  योगेन्द्र सिंह नरुका

स्तम्भ
- आदेश-परिपत्र 25
- शिविरा पंचांग 28
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 31
- चतुर्दिक समाचार 48
- हमारे भामाशाह 49

श्रद्धांजलि 44-45
- नहीं भूल पाएंगे बिज्जी आपको
  ओमप्रकाश सारस्वत
- राजेन्द्र यादव : हँसा मानसरोवर छूटा
  मदनलाल पुरोहित

इस माह का गीत
- बोलो जय-जय भारती 19
  बल्लभेश दिवाकर

पुस्तक समीक्षा 46-47
- बोध कथाएं : कलानाथ शास्त्री
  समीक्षक : सुनीता चावला
- फिर कभी बतलाएंगे : माधव नागदा
  समीक्षक : ओमप्रकाश सारस्वत
- बागवान : लोकेश शुक्ल
  समीक्षक : डॉ. उषा किरण सोनी

विविध
- जज्बे को सलाम 10
- हिन्द देश के निवासी-गीत 13
- गालिब की याद में 17
- कार्टून 19
- रवीन्द्र को नोबल पुरस्कार का शताब्दी वर्ष 23

प्रतिध्वनि
- शिक्षा और शिक्षक 50

आवरण :
अविनाश कुमावत, जयपुर
मो. 09261355185

▼ चिन्तन

प्रजा सुखे सुखं राज्ञः
प्रजानां च हिते हितम्।
नात्म प्रिय हितं राज्ञः
प्रजानां तु प्रियं हितम्।।

–कौटिल्य

अनुवाद : प्रजा के सुख में राजा (सरकार) का सुख और प्रजा के हित में राजा (सरकार) का हित है। अपने आपको अच्छे लगने वाले कार्यों को करने में राजा (सरकार) का हित नहीं अपितु उसका हित तो प्रजा को अच्छे लगने वाले कार्यों को सम्पादन करने में है।

पाठकों की बात

- एक लम्बी यात्रा के साथ शिविरा में निरन्तर उत्कृष्ट सामग्री के प्रकाशन नवोदित प्रतिभाओं को स्थान, शैक्षणिक एवं वर्तमान समय की अपेक्षानुरूप विभिन्न जुड़े प्रेरणादायक, अनुकरणीय प्रसंगों से पत्रिका अब मन को छू लेती है। संयोग है कि मेरी भावना, मैं इस पत्र में व्यक्त कर रहा हूँ, जिसके साथ 'विश्व एकता दिवस' के संदर्भ में व्यक्त भाव संलग्न है। आप पत्रिका को योजनाबद्ध तरीके से उद्धेश्यों की पूर्ति हेतु मंजिल तक पहुँचाने में सफल हो! यही भाव मन में है। **–महेश चन्द्र श्रीमाली**
  5, प्रभात नगर, उदयपुर
- नवम्बर अंक बहुत अच्छा लगा। इस अंक के आवरण ने तो मन मोह लिया। लेखों व अन्य प्रकाशित सामग्री का चयन, सम्पादकीय, प्रकाशित रचनाओं की सटीक क्रमबद्धता एवं छपाई सब कुछ उत्कृष्ट है। आपका श्रम रंग ला रहा है। मैं तो कहूंगा कि आपने इस पत्रिका में नई जान फूंक दी है। आप स्वयं एक श्रेष्ठ चिंतक, प्रखर साहित्यकार और सबको साथ लेकर चलने वाले व्यक्ति हैं। सभी लेख उत्कृष्ट हैं। भविष्य में भी ऐसा स्तर बना रहेगा, आशा करता हूँ। **–अरनी रॉबर्ट्स**
  भीमगंज मण्डी, कोटा जंक्शन-324002
- मैं शिविरा पत्रिका की पाठक हूँ। अनेक भावों एवं विचारों से ओतप्रोत यह पत्रिका ज्ञानवर्द्धक व मार्गदर्शक है। ज्ञान का सैलाब बहाती व जानकारी से भरपूर शिविरा अपने आप में परिपूर्ण पत्रिका है। **–कीर्ति शर्मा,** व.अ.
  वार्ड नं.-2, नोहर (हनुमानगढ़)
- माह नवम्बर 2013 की शिविरा पत्रिका में निदेशक महोदया के दिशाकल्प में शत-प्रतिशत मतदान के लिए प्रेरित करना, संग्राम सिंह सोढ़ा का आलेख 'अनुशासन की महिमा', नीना राठौड़ का 'मंजिल पाना मुश्किल नहीं', महेश कुमार चतुर्वेदी का आलेख 'मेरे भगवान बालकों में है', विश्वनाथ भाटी द्वारा 'विद्यार्थियों के लिए भी है कानूनी अधिकार' सहित सभी आलेख सुन्दर बन पड़े है। श्री ओमप्रकाश सारस्वत द्वारा 'प्रतिध्वनि' में 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई' सराहनीय रचना है । इस प्रकार शिविरा का यह अंक बहुत ही ज्ञानवर्धक, सर्वांग सुन्दर तथा उल्लेखनीय है।
  –सत्यपाल सिंह यादव, व.अ.से.नि.
  भूपखेड़ा (अलवर)
- शिविरा नवम्बर अंक की सामग्री रोचक, ज्ञानवर्द्धक, प्रेरणाप्रद पढ़ने को मिली। स्वाभाविक है यह महिना बाल दिवस-14 नवम्बर का है, सम्बन्धित लेख बहुत ही सारगर्भित है। दिशा भी दी है, प्रेरणा भी है तो 'कहीं आप ऐसे अभिभावक तो नहीं है'- साभार घटना आत्मचिंतन के लिये गहरी छाप छोड़ती है। दीपोत्सव पर्व पर नरेश शर्मा का लेख अतीत से आज तक ज्ञानवर्द्धक लेख है। नवम्बर माह त्रिवेणी उत्सव बाल दिवस, चाचा नेहरू जन्म दिवस, दीपोत्सव का है। इस अंक में चाचा नेहरू से सम्बन्धित लेख की कमी दिखायी दी। प्रतिध्वनि, प्रेरक ध्वनि हुई है। कुल मिलाकर शिविरा पत्रिका का यह अंक पठनीय सामग्री से भरपूर है।
  –बजरंग प्रसाद मजेजी, प्र.अ.से.नि.
  सांपला (अजमेर)
- शिविरा का नवम्बर अंक पढ़ने को मिला। अंक ने अपनी विषय वस्तु के अनुरूप ज्ञान-अमृत से सराबोर कर दिया। साथ ही अगले अंक के लिए मेरी बेचैनी बढ़ा दी। दिशाकल्प में डॉ. वीना प्रधान के विचार दिल की बात दिल से मिल मानस में मिल जाने से प्रतीत होते हैं। बालकों पर केन्द्रित जीवन दर्शन का प्रतिबिम्ब कराने वाली समस्त रचनाएं प्रेरणादायी व ज्ञानवर्द्धक है। इस हेतु कृष्णा कुमारी, रूपनारायण काबरा एवं ए.पी.जे. अब्दुल कलाम बधाई के पात्र हैं। ऐसी श्रेष्ठ पत्रिका के संपादन हेतु शिविरा के सम्पादक मंडल को हृदय के अन्तःकरण से ढेर सारी शुभकामनाएं।
  –सम्पतलाल शर्मा 'सागर'
  गिलूण्ड (राजसमन्द)
- 'शिविरा पत्रिका' नवम्बर 2013 का अंक अद्भुत है। माह विशेष में विधान सभा चुनाव को देखते हुए निदेशक महोदया ने जो अपीलिंग दिशाकल्प लिखा है, वह तो शिक्षक ही नहीं बल्कि प्रत्येक नागरिक को पढ़ना चाहिए। इसके अलावा बीच-बीच में मतदान सम्बन्धी नारे लिखे गए हैं। स्काउट व गाइड संगठन की ओर से जो मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया, उसको शिविरा की इस पहल से नई जान मिल गई। दिशाकल्प को पढ़ते समय ऐसा लगता है जैसे निदेशक महोदया स्वयं उद्बोधन दे रही है। भाषा, भाव एवं प्रवाह सब सराहनीय है। भविष्य में भी यह परंपरा जारी रहेगी, ऐसा विश्वास है।
  –महेन्द्र कुमार चौधरी, प्रधानाचार्य
  रा.उ.मा.वि., 40 जीबी, श्रीगंगानगर

सत्यमेव जयते

डॉ. वीना प्रधान
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"विद्यार्थी पढ़े और शिक्षक पढ़ाएं। शिक्षक पढ़ाए भी और पढ़े भी। जो जितना पढ़ेगा वह उतना बढ़ेगा। बहता पानी निर्मला की तर्ज पर कहूँ तो जो पढ़ता हुआ पढ़ाएगा, उसका पढ़ाना उतना ही प्रभावी व कारगर सिद्ध होगा। अध्ययन की गहराई शिक्षण में बोलती हैं।"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

हेल्प लाइन बने शिविरा पत्रिका

शिविरा पत्रिका के दिशाकल्प स्तम्भ के माध्यम से प्रतिमाह शिक्षक भाई-बहनों से मुखातिब होते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता होती है। मैं एक-एक विद्यालय में पहुंच कर प्रत्येक शिक्षक से मिलना चाहती हूँ मगर विभाग के विशाल स्वरूप को देखते हुए दैनन्दिन कार्यो में अधिकांश समय एवं शक्ति का लग जाना स्वाभाविक है। ऐसे में आप लोगों तक अपनी भावना एवं अपेक्षा को पहुंचाने का काम दिशाकल्प का यह पृष्ठ करता है-**दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ**। शिक्षकों से होने वाली मुलाकातों एवं पत्रों के माध्यम से दिशाकल्प के बारे में मिलने वाली प्रतिक्रियाओं से मुझे बड़ा सकून मिलता हैं। आपकी प्रतिक्रियाएं एवं सुझाव निश्चय ही विभागीय कार्यो को सुगम एवं प्रभावी बनाने में मदद करेंगे।

मैं चाहती हूं कि शिविरा पत्रिका विद्यालय स्तर से लेकर निदेशालय और बल्कि कहना चाहिए कि राज्य सरकार स्तर तक संवाद का एक माध्यम बनें। विभाग क्या चाहता है और विद्यालयों को वह कब व कैसे करना है, कि अपेक्षा हम उनसे शिविरा के माध्यम से करते हैं। इसके लिए वार्षिक पंचांग प्रति वर्ष शिविरा पत्रिका में प्रकाशित किया जाता है।

विद्यालयों की संस्थागत एवं शिक्षकों की व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान समय-समय पर जारी होने वाले आदेश परिपत्रों में मिल जाते हैं। इसके बाद भी कतिपय शंकाएं रह सकती है। आप उन शंकाओं को सामूहिक हित भाव से लिखकर मुझे भिजवाएं। उन शंकाओं एवं प्रश्नों के समाधान ''निदेशक से सीधी बातचीत'' स्तम्भ से करने का प्रयास किया जाएगा। ऐसा शिक्षकों के प्रति विभागीय कर्तव्य के निर्वहन भाव से किया जा रहा है।

मैं चाहती हूँ कि शिविरा पत्रिका आपके लिए हेल्प लाइन का काम करें। आशा है, शिक्षण के पवित्र कार्य से जुड़े महानुभाव मेरी भावना को समझकर तदनुसार कार्य करेंगे।

यह अंक आपके हाथ में पहुँचेगा तब तक विधानसभा चुनाव सम्पन्न हो चुके होंगे। इस माह में अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं हैं। अब गहनता के साथ पढ़ने-पढ़ाने का समय आ गया है- विद्यार्थी पढ़े और शिक्षक पढ़ाएं। शिक्षक पढ़ाए भी और पढ़े भी। जो जितना पढ़ेगा वह उतना बढ़ेगा। बहता पानी निर्मला की तर्ज पर कहूँ तो जो पढ़ता हुआ पढ़ाएगा, उसका पढ़ाना उतना ही प्रभावी व कारगर सिद्ध होगा। अध्ययन की गहराई शिक्षण में बोलती है।

शिविरा का यह अंक 2013 वर्ष का अन्तिम अंक है। इसके बाद तो हम नए वर्ष में मिलेंगे। इस वर्ष में हमनें क्या पाया और क्या खोया, की समीक्षा करते हुए अगले वर्ष के लिए नियोजन अभी से करना है। जो कार्य के साथ-साथ उसकी समीक्षा करते हुए आगे बढ़ते हैं, वे कभी ठोकर नहीं खाते बल्कि हर कार्य में यथोचित सफलता प्राप्त करते रहते हैं।

मानवाधिकार दिवस एवं हैपी क्रिसमिस इसी माह में हैं। मानवाधिकारों के बारे में मेरा यही कहना है कि हम पहले दूसरों के अधिकारों का सम्मान करें। देखिए, हमारे अधिकारों को सुरक्षा एवं सम्मान मिलता है कि नही । जो दूसरों का भला चाहता है उसका भला चाहने वालों की कमी नहीं रहती। दया व प्रेम के अवतार ईसा मसीह का जन्म दिन क्रिसमिस हमारे जीवन में खुशियों की बहार लाए, यही प्रार्थना है।

शुभकामनाओं के साथ...

(डॉ. वीना प्रधान)

पुण्य तिथि : 5 दिसम्बर 2013

महर्षि अरविन्द का शिक्षा दर्शन

❒ अंजुम फातिमा

महर्षि अरविन्द का जन्म 15 अगस्त, 1872 को घोष परिवार में कलकत्ता में हुआ। अरविन्द की प्रारंभिक शिक्षा दार्जिलिंग के लॉरेंट कान्वेंट स्कूल में हुई। सात वर्ष की आयु में ही आगे की शिक्षा प्राप्त करने हेतु उनको ब्रिटेन भेज दिया गया। वहाँ उन्होंने लैटिन, ग्रीक भाषा की शिक्षा प्राप्त की। केम्ब्रिज के किंग्स कॉलेज में रह कर फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, इटालियन आदि भाषाओं का अध्ययन किया। पिता के कहने पर वर्ष 1890 में भारतीय सिविल सेवा की परीक्षा में बैठे तथा विशिष्ट योग्यता प्राप्त की परन्तु अंग्रेजी दासता में काम न करने की इच्छा के चलते यह सर्विस छोड.दी तथा भारत की स्वतंत्रता हेतु प्रयास प्रारम्भ कर दिये। उन्होंने देश-विदेश की भाषाओं, उनके विचारों एवं साहित्य का गहनतापूर्वक अध्ययन किया परन्तु उन पर गीता और वेदों का विशेष प्रभाव पडा। उन्होंने योग को आत्मज्ञान का साधन माना। उनके अनुसार योग वह साधन है जिसके द्वारा चित्त की प्रवृत्तियों का विरोध किया जा सकता है। वे जीवन का अन्तिम उद्देश्य सच्चिदानन्द की प्राप्ति को मानते थे।

महर्षि अरविन्द का अनेक प्रकार से शैक्षिक योगदान रहा है। उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों को व्यापक रूप में देखा। यदि हम यह कहें कि अरविन्द ने शिक्षा को आध्यात्मिक एवं बौद्धिक क्षमताओं का समन्वय कहा तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। उनके अनुसार आध्यात्मिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये बौद्धिक विकास अत्यावश्यक है। विस्तृत उद्देश्यों के कारण पाठ्यक्रम को भी बहुत व्यापक माना। उन्होंने मातृभाषा की अनिवार्यता के साथ-साथ विदेशी भाषा शिक्षण को भी आवश्यक माना। महर्षि अरविन्द विद्यार्थियों को रुचि एवं योग्यतानुसार शिक्षा प्रदान करने के पक्षधर थे। उन्होंने शिक्षा का केन्द्र बालकों को माना। अनुशासन हेतु अध्यापक तथा शिक्षार्थी दोनों के संयमित जीवन की उन्होंने वकालत की, उन्होंने नैतिकता को सच्चे अनुशासन को एक आधार माना। उनके शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा में योगदान को मानव मात्र के कल्याण की भावना कह सकते हैं।

महर्षि अरविन्द ने अनेक प्रकार के लेख लिखे। उनके लेखों के द्वारा उनके शैक्षिक विचारों का पता लग जाता है। उन्होंने शिक्षा से संबंधित दो पुस्तकें लिखीं। इन पुस्तकों में शिक्षा संबंधी विचारों का उल्लेख किया गया है-(1) ऑन एजुकेशन एवं (2) नेशनल सिस्टम ऑफ एजुकेशन।

महर्षि अरविन्द ने मानव के अन्त:करण के चार स्तर माने-चित्त, मन, बुद्धि और ज्ञान, अत: इन चारों स्तरों का विकास शिक्षा के द्वारा होना चाहिए। मानव की अन्त: शक्तियों का विकास शिक्षा द्वारा संभव है यदि आध्यात्मिक तथा बौद्धिक शिक्षा दोनों पर समान बल दिया जाए। उनके अनुसार शिक्षा मानव के मस्तिष्क तथा आत्मा की शक्तियों का निर्माण करती है और उसमें ज्ञान, चरित्र एवं संस्कृति की जागृति उत्पन्न करती है।

महर्षि अरविन्द ने शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, विद्यालय, अनुशासन, शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध तथा अध्ययन विधि आदि पर विस्तृत विचार व्यक्त किए जिनका उल्लेख निम्नत: किया जा सकता है-

1. शिक्षा का उद्देश्य :- अरविन्द ने शैक्षिक उद्देश्यों की व्यापकता पर बल दिया। शिक्षा को उन्होंने शारीरिक, मानसिक शुद्धि का साधन माना। उनके अनुसार शिक्षा-उद्देश्य निम्न होने चाहिए:-

आध्यात्मिक विकास : अरविन्द के अनुसार मानव जीवन का अन्तिम उद्देश्य दैवीय अंश को खोजना है और उसको पूर्णता की ओर ले जाना है। इसके लिए आध्यात्मिक विकास बहुत आवश्यक है। उनके अनुसार यह शिक्षा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है।

ज्ञानेन्द्रियों का विकास : अरविन्द ने शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानेन्द्रियों का विकास माना, उन्होंने योग साधना में इन्द्रिय निग्रह को प्रथम कदम माना। वे मस्तिष्क को छठी ज्ञानेन्द्री मानते थे।

शारीरिक विकास : अरविन्द शरीर द्वारा आध्यात्मिक जीवन की प्राप्ति मानते थे। अत: शारीरिक शुद्धि पर विशेष बल दिया। शरीर में अशुद्धि होने पर योग साधना नहीं की जा सकती अत: शिक्षा का उद्देश्य शरीर शुद्धि हेतु मानव के शारीरिक विकास पर बल देना है।

मानसिक विकास : अरविन्द के अनुसार मानव की कल्पना, स्मृति, तर्क, चिन्तन, निर्णय आदि शक्तियों का विकास शिक्षा के उद्देश्यों में माना, बिना इन शक्तियों के मानव ज्ञानेन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं रख सकता। अत: बालक की मानसिक क्षमताओं का विकास प्रारम्भ से ही करना चाहिए।

अन्त: करण का विकास : अरविन्द ने शिक्षा के उद्देश्यों में अन्त: करण के विकास को प्राथमिकता दी तथा इसके चार स्तर-चित्त, मन, बुद्धि तथा ज्ञान को मान्यता दी।

नैतिक विकास : अरविन्द ने नैतिकता को शिक्षा उद्देश्यों में रखते हुए उन पर अत्यधिक बल दिया। वे बालक की प्रवृत्ति, उसकी आदतों तथा भावनाओं को प्रारम्भ से ही नैतिक बनाना चाहते थे।

विशिष्ट क्षमता का विकास : अरविन्द मानते थे कि सभी मनुष्यों में कुछ विशिष्टताएँ होती हैं। अत: शिक्षा का उद्देश्य बालक के अन्दर छिपी इन विशिष्ट क्षमताओं का अधिकाधिक प्रकाशन एवं परिमार्जन करना है।

2. पाठ्यक्रम :- महर्षि अरविन्द ने शिक्षा के उद्देश्यों को विस्तृत अर्थ में लिया। परिणामत: उन्होंने पाठ्यक्रम भी विस्तृत माना। उन्होंने पाठ्यक्रम में उन सभी क्रियाओं पर तथा विषयों पर बल दिया जिनके द्वारा उद्देश्यों की प्राप्ति संभव हो सके। उन्होंने आध्यात्मिक तथा रोचक पाठ्यक्रम पर बल दिया। उन्होंने पाठ्यक्रम को निम्न प्रकार स्पष्ट किया :-

प्राथमिक स्तर : प्राथमिक स्तर पर अरविन्द ने मातृभाषा के साथ-साथ अंग्रेजी तथा फ्रेंच भाषा का अध्ययन आवश्यक माना, साथ ही गणित, सामान्य विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, चित्रकला आदि विषयों का अध्ययन आवश्यक समझा।

माध्यमिक स्तर : इस स्तर पर अरविन्द ने मातृभाषा के साथ अंग्रेजी, फ्रेंच, गणित, सामाजिक अध्ययन, चित्रकला के साथ-साथ भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भू-गर्भ विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान जैसे विषयों के अध्ययन पर बल दिया।

विश्वविद्यालय स्तर : विश्वविद्यालय स्तर पर अंग्रेजी, फ्रेंच साहित्य के साथ-साथ

गणित, भौतिक, रसायन, जीवविज्ञान, सभ्यता का इतिहास, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शन, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध के अध्ययन पर बल दिया।

3. विद्यालय :– अरविन्द के अनुसार विद्यालयों में विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। उन्होंने योग साधना के केन्द्र के रूप में विद्यालय को मान्यता दी। विद्यालय के द्वारा मानव सेवा एवं श्रम की भावना का विकास किया जाना चाहिए। विद्यालय विश्व बन्धुत्व की भावना का प्रसार करने का साधन होना चाहिए।

4. अनुशासन :– अनुशासन के संबंध में अरविन्द ने बताया कि अनुशासन शारीरिक एवं मानसिक दोनों ही प्रकार की क्रियाओं पर नियंत्रण का नाम है। वे मानते थे कि अनुशासन हेतु सहानुभूतिपूर्ण तथा प्रेम पूर्ण व्यवहार आवश्यक है। उन्होंने अनुशासन हेतु नैतिकता पर बल दिया। उनके अनुसार विद्यार्थियों के सम्मुख अध्यापक आदर्श आचरण प्रस्तुत करें। आदर्श आचरण से विद्यार्थी स्वत: ही अनुशासित हो जायेंगे।

5. शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध :– उन्होंने शिक्षक–शिक्षार्थी के मध्य मधुर एवं सहयोगात्मक संबंधों की बात की। उनके अनुसार शिक्षक एक उत्तम पथ–प्रदर्शक होना चाहिये। वह मनोविज्ञान एवं अध्यात्म का ज्ञाता हो तथा उत्तम योगी भी होना अनिवार्य है। अध्यापक को चाहिये कि वह शिक्षार्थियों को स्वयं ज्ञान प्राप्त करने एवं आंतरिक शक्तियों का विकास करने में सहयोग प्रदान करें। विद्यार्थियों के लिए सत्य की खोज में मदद हेतु अच्छे पर्यावरण पर भी बल दिया। वे विद्यार्थी की रुचि, रुझान योग्यता आदि पर भी बल देते थे।

6. अध्ययन विधि :– महर्षि अरविन्द प्राचीन विद्यालयों को नवीन रूप देने के पक्षधर थे। वे रटने की विधा को उत्तम नहीं मानते थे। परन्तु प्रवचन, व्याख्यान, उपदेश आदि के प्रयोग को स्वीकार किया। वे चाहते थे कि बालक ज्ञान को स्वयं आत्मसात् करें। प्राथमिक स्तर पर उन्होंने कहानी विधा को उचित बताया, वे पाठ्यपुस्तक प्रकार के भी समर्थक थे। वे मानते थे कि पुस्तकें सहायक एवं सन्दर्भ ग्रन्थों के रूप में होनी चाहिये न कि रटने के लिये। वे सीखने की उत्तम विधि योग–क्रिया को मानते थे। शिक्षण विधि में उन्होंने बालको की शारीरिक, मानसिक क्षमताओं व उनकी रूचियों को मुख्य माना, साथ ही बालकों के क्रिया करने तथा अनुभव करने पर बल दिया। अध्ययन विधि हेतु उन्होंने माना कि बालकों के साथ सहानुभूति एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार करके सीखाना चाहिए। साथ ही उन्होंने कहा कि अध्ययन विधि कोई भी हो शिक्षक एवं मातृभाषा के माध्यम से प्रदान की जानी चाहिए। कुल मिलाकर महर्षि अरविन्द ने शिक्षा को व्यापक अर्थ में लिया। उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों की विस्तृतता का वर्णन किया। इठत्तर वर्ष की अवस्था में 5 दिसम्बर 1950 को उनका स्वर्गवास हुआ। उनके योगदान से भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जगत सदैव ऋणी रहेगा।

–द्वारा राशिद जमाल
नाना साहब का बाड़ा, धौलपुर–328001

मानवीय मूल्यों की शिक्षा

शिक्षा का काम है चरित्र गढ़ना

❒ शंकर लाल माहेश्वरी

मूल्यों की शिक्षा का उद्देश्य वैयक्तिक जीवन में शुचिता, पवित्रता, सच्चरित्रता, समता, उदारता, सहकारिता उत्पन्न करना है। अपनी छोटी–छोटी आदतें यदि परिष्कृत हैं तो उसका प्रभाव परिवार, पड़ोस से प्रारम्भ होकर दूर तक फैलता है। व्यक्तिगत जीवन में हर मनुष्य व्यवस्थित, चरित्रवान, सद्गुणी, सद्प्रवृति सम्पन्न हो। समय की पाबन्दी, नियमितता, श्रमशीलता, स्वच्छता, वस्तुओं की व्यवस्था जैसी छोटी–छोटी आदतें व्यक्तित्व को निखारती, उभारती हैं। व्यक्तित्व की दृष्टि, आस्था और आकांक्षाओं का स्तर निकृष्ट हो जाने से उसका चिन्तन विकृत हो गया हैं।

आलसी और उत्साही, कायर और वीर, दीन और समृद्ध, दुर्गुणी और सद्गुणी, तिरस्कृत और प्रतिष्ठित, पापी और पुण्यात्मा, अशिक्षित और विद्वान, तुच्छ और महान्, का जो आकाश–पाताल का अन्तर हैं इसका प्रमुख कारण मानव की मानसिक स्थिति है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा हैं 'शिक्षा तुम्हारे दिमाग में भरी जाने वाली सूचनाओं की मात्रा नहीं है जो वहाँ सड़ती रहती है और जीवन भर पचती नहीं है। हमें जीवन बनाने वाला, मानव बनाने वाला, चरित्र बनाने वाला विचारों का रेचन चाहिये। हमें वह शिक्षा चाहिए जिससे कि चरित्र बनता है, मन की शान्ति बढती है। प्रतिभा का विस्तार होता है और आदमी अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।' सभ्यता और संस्कृति का सम्बन्ध अटूट है लेकिन आज हम अपनी सभ्यता व संस्कृति से दूर हो गये हैं कारण हमारे जीवन मूल्यों का पतन होता जा रहा है।

हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपने देश के लोगों की स्वच्छन्द वृति पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि 'सिंगापुर में आप अपनी सिगरेट का टुकडा सड़क पर नहीं फेंकते और स्टोर में खाते भी नहीं हैं। आप शाम पाँच से आठ बजे की बीच आर्थड रोड पर कार चलाने का तकरीबन साठ रुपये भुगतान करते हैं। आपने सिंगापुर में अगर पार्किंग में निर्धारित समय से ज्यादा गाड़ी खडी की हैं तो टिकिट पंच कराते हैं लेकिन यहाँ आप कुछ नहीं करते हैं, क्यों?'

दुबई में आप रमज़ान के दिनों में सार्वजनिक रूप से कुछ भी खाने का साहस नहीं करते। जेहाद में बिना सिर ढके बाहर नहीं निकलते। वाशिंगटन में आप पचपन मील प्रति घन्टा से ऊपर गाड़ी चलाने की हिमाकत नहीं करते और पलट कर सिपाही से यह भी नहीं कहते कि जानता है मैं कौन हूँ, फलाँ हूँ और फलाँ मेरा बाप है। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलेण्ड के समुद्री तटों पर आप खाली नारियल हवा में नहीं उछालते। टोकियो में आप सडक़ों पर पान की पीक नहीं थूँकते।

आप दूसरे देशों की व्यवस्था का आदर और पालन कर सकते हैं लेकिन अपनी व्यवस्था का नहीं। भारतीय धरती पर कदम रखते ही आप सिगरेट का टुकडा जहाँ तहाँ फेंकते हैं। कागज के पुर्जे उछालते हैं। यदि आप पराये देश में प्रशंसनीय नागरिक हो सकते हैं तो आप अपने देश में ऐसे क्यों नहीं बन सकते। अमीर लोग अपने कुत्तों को सड़कों पर घुमाने निकालते हैं और जहाँ तहाँ

गन्दगी बिखेर कर आ जाते हैं। फिर वहीं लोग सड़कों पर गन्दगी के लिये प्रशासन पर दोष मंढ़ते हैं। क्या वे उम्मीद करते हैं कि वे जब भी बाहर निकलेंगे तो एक अधिकारी झाड़ू लेकर पीछे-पीछे चलेगा और जब उनके कुत्ते को हाजत लगेगी तो वह एक कटोरा उसके पीछे लगायेगा? जापान और अमेरिका में कुत्तों के मालिक को उसकी छोड़ी हुई गन्दगी साफ करनी पड़ती है।

परिवार मानव की प्रथम पाठशाला है। बालक परिवार से ही संस्कार अर्जित करता है। मेजिनी के अनुसार बालक को प्रथम पाठ माँ के चुम्बन और पिता के प्यार से सीखने को मिलता है अत: परिजनों का पारिवारिक परिवेश बालक को सुसंस्कृत बनाने में महती भूमिका का निर्वहन करता है। परिवार में ही बालक में दया, ममता, स्नेह, उदारता, क्षमा, प्यार और सेवा भावना के भाव अंकुरित होते हैं। अत: परिजनों का नैतिक चरित्र अनुकरणीय होना आवश्यक है। परिजन ही बालक के लिए नींव के पत्थर हैं जिस पर बच्चों का भावी भवन खड़ा होकर स्थिर बनता है। माता-पिता के बाद बालक शिक्षालयों में गुरुजनों के श्रीचरणों में उनकी छाया तले बैठकर सद्गुण अर्जित करता है।

विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न विषयों में भाषा, गणित, सामाजिक ज्ञान, विज्ञान और कला शिक्षा के माध्यम से बालकों में नैतिक गुणों का आविर्भाव होता है।

भाषा शिक्षण के उद्देश्यों में अभिरुचि और सद्वृत्तियों का विकास विशेष महत्त्व रखते हैं। पाठान्तर्गत व पाठ्योपरान्त शिक्षण में सहज ही उद्धेश्यनिष्ठ विषय वस्तु पर आधृत मानवीय मूल्यों का समावेश सम्भव है। प्रेम चन्द जी की ईदगाह कहानी में हामिद का मेले से दादी के लिए चिमटा खरीदने की विचारणा, गुलेरी जी की 'उसने कहा था' कहानी में बोधा और लहनासिंह का संवाद, हार की जीत कहानी में खड्ग सिंह और बाबा भारती की बातचीत, कविता पाठों में गुप्त जी की भारत माता कविता से 'सुख बढ़ जाता दु:ख घट जाता जब वह बँट जाता।' प्रेमचन्द जी की बूढी काकी, पंचपरमेश्वर की कहानियाँ बालकों में उदारता, दया, करुणा, सेवा भावना, परोपकार तथा त्याग और बलिदान की भावनाओं को प्रोत्साहित करती हैं। रामायण, महाभारत तथा लोककथाओं और बोध कथाओं के पात्र बालक की मानवीय संवेदनाओं को उद्वेलित करते हैं अत: शिक्षक का दायित्व है कि ऐसे प्रसंगों का शिक्षण मूल्यों के अभिवर्द्धन की दिशा में सफलतापूर्वक उपयोग किये जाए ताकि ज्ञात-अज्ञात में कथा प्रसंगों के पात्रों से चरित्र पर पूरा प्रभाव पड़ सके।

शिक्षण संस्थाओं में आयोजित विभिन्न सहगामी प्रवृतियों द्वारा भी बाल मन को पुष्ट व जागृत कर उसे दिशा प्रदान की जा सकती हैं। शैक्षिक भ्रमण, बालमेले, स्काउटिंग, साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन भी चरित्र निर्माण की दृष्टि से हितकर होते हैं। प्रार्थना सभा, साक्षात्कार आदि कार्यक्रमों को विशेष प्राथमिकता दी जानी चाहिए। वर्तमान शैक्षिक पाठचर्या में जीवन विज्ञान विषय भी सम्मिलित हुआ है। जो नैतिक मूल्यों के उभारने में अत्यधिक सहायक है।

प्राचीन काल में भी बिगड़े हुए राजकुमारों में नेतृत्व क्षमता तथा मानवीय मूल्यों के विकास हेतु विष्णु शर्मा जैसे शिक्षकों का सानिध्य मिला है, नालन्दा और तक्षशिला विश्वविद्यालयों में विदेशी लोग चरित्र का पाठ पढ़ने के लिए आया करते थे। इतिहास इस बात का साक्षी है। समाज में व्याप्त बुराईयों के निराकरण तथा शासकों व सामाजिकों के नैतिक उत्थान हेतु चारण भाट तथा जागाओं की ओजस्वी वाणी द्वारा जनजागरण का उपक्रम रहा है। रामलीला, हरिशचन्द्र नाटक तथा कथा वाचकों द्वारा लोक धुनों के आधार पर जन जीवन में जागरण पैदा हुआ है।

'शिक्षा और चरित्र निर्माण को बाँट कर नहीं देखा जा सकता है। यदि शिक्षा की निष्पत्ति चरित्र निर्माण या व्यक्तित्व निर्माण नहीं हैं तो वह सही नहीं है। उसमें कोई न कोई त्रुटि है। उस त्रुटि को पूरा करना शिक्षा से जुड़े हुये लोगों का काम है। विद्यार्थी में बौद्धिक विकास के साथ-साथ अनुशासन, सहिष्णुता, ईमानदारी, दायित्वबोध, व्यापक दृष्टिकोण और व्यापक चिन्तन का विकास अवश्य होना चाहिए। आज ऐसा नहीं हो रहा है।'

-आचार्य महाप्रज्ञ

आज की शिक्षा की सबसे बड़ी खामी यह है कि इसके सामने अनुसरण करने के लिये कोई निश्चित लक्ष्य नहीं हैं। एक चित्रकार अथवा मूर्तिकार जानता है कि उसे क्या बनाना है तभी वह अपने कार्य में सफल हो पाता है। आज शिक्षक को यह स्पष्ट नहीं है वह किस लक्ष्य को लेकर अध्यापन कार्य कर रहा है। सभी प्रकार की शिक्षा का एकमात्र उद्धेश्य मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करना है इसके लिये वेदान्त के दर्शन को ध्यान में रखते हुए मनुष्य निर्माण की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। -स्वामी विवेकानन्द जी

शिक्षक राष्ट्रमन्दिर के कुशल शिल्पी हैं। शिक्षार्थी अनगढ़ मिट्टी के समान हैं। विद्यालय इनको मजबूत ईंटों में ढालने वाली कार्यशाला है। शिक्षा वह विधा है, जिनसे इनको ढाला और राष्ट्रमन्दिर को गढ़ा जाता है। नैतिकता एवं मानवीय मूल्य ही वह भाग हैं, जिससे इन कच्ची ईंटों को मजबूती व सौन्दर्य प्राप्त होता है, अन्यथा इसके अभाव में गढ़ाई की सुन्दरता के बाद भी कच्चापन अवश्यम्भावी है।

मानवीय मूल्यों के अभाव में लूट खसोट चोरी डकैती आतंक तथा उग्रवाद का बोलबाला हो रहा है। जनसमुदाय में आपाधापी का बोलबाला हो गया है। मानवीय संवेदनाओं के अभाव में आज प्रकृति के प्रति भी लोगों का क्रूर व्यवहार बढ़ता जा रहा है। फलस्वरूप प्रकृति भी रूठ गई है और मानव मात्र भय आतंक पीड़ा और दरिद्रता के कगार पर पहुँच गया है।

सामाजिक जीवन बड़ा ही भयावह बनता जा रहा है। दुराचार, भ्रष्टाचार, बेईमानी और कूरता का दानव आतंकित कर रहा है। छल, कपट, दुराचार, दुष्टता और अनाचार से पारस्परिक प्रेम व्यवहार घटता जा रहा है। अत: पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में ऐसी विषय सामग्री का समावेश हो जो बालक को सुनागरिकता का पाठ पढ़ा सके। ऐसी पाठ्य सामग्री का अन्त हो जो दूध में पानी मिलावट से लाभ वाला ज्ञान बताता है।

पन्ना धाय, कर्मवती, दुर्गावती तथा झांसी की रानी के पाठ प्रसंगों से नारी चेतना का भाव पाठ्य सामग्री में बहुलता से प्रस्तुत किया जाए स्वस्थ मनुष्य में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है अत: योग प्राणायाम को भी अनिवार्यत: शिक्षण में समाहित किया जाए।

हमारे इतिहास पुरुष महामानवों की जीवन शैली से बालको को अवगत कराया जाए। शैक्षिक गतिविधियों द्वारा अनुशासन, शारीरिक श्रम, सहकारिता तथा भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित किया जाए संस्कार शिविरों तथा व्यक्तित्व विकास के आयोजन, प्रेरक पुरुषों के वक्तव्य तथा समूह भावना को उद्वेलित करने वाले आयोजन अधिकाधिक हो ताकि आज का बालक कल का संस्कारवान नागरिक बन सके और मानवीय मूल्यों की स्थापना से राष्ट्रीय चरित्र का उत्थान हो सके। -आगूँचा (भीलवाड़ा)

यदि हम अपनी राष्ट्रभाषा खो बैठे तो हमारी राष्ट्रीयता भी लुप्त हो जाएगी। **-राजर्षि टण्डन**

विश्व एकता दिवस

विश्व एकता में ही जीवन की सार्थकता

❒ अरनी रॉबर्ट्स

श्री अरनी रॉबर्ट्स का नाम संवेदनशील व सृजनशील शिक्षक एवं कुशल प्रशासक के रूप में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। आपकी मर्मस्पर्शी रचनाएं शिविरा सहित विभिन्न समाचार-पत्र/पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। आप अनेक संस्थाओं से सम्मानित हुए हैं जिनमें राजकीय राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार सम्मिलित हैं। आपकी चार कृतियां प्रकाशित हुई हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

विश्व के सभी देशों में एकता, प्रेम, सौहार्द और सहअस्तित्व की भावना होना जरुरी है। पिछली शताब्दियों में मानव इतिहास ने विश्व युद्ध और कई देशों के एक दूसरे पर आक्रमण देखे हैं और इसके बाद इनके दुष्परिणाम भी। ये युद्ध मानवीय सभ्यता के दामन पर काले धब्बे दागों के समान हैं जिन्हें मिटाने का केवल एक मार्ग है विश्व एकता, बंधुत्व और प्रेम! मन की सारी कड़ुवाहट को ढाई आखर का यह शब्द दूर करने में सक्षम है। भारत ने अपने ज्ञान के अक्षय भंडार और शिक्षा द्वारा शांतिदूत बनकर विश्व बंधुत्व की श्रेष्ठ मिसाल कायम की है। भारत देश की महानता इसी में है कि इसने आगे बढ़कर कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया है।

दिसम्बर माह में हम विश्व एकता दिवस मना रहे हैं। इसी माह शांति और प्रेम के संवाहक प्रभु यीशु मसीह का जन्म दिवस भी है जिसे संसार क्रिसमिस पर्व के रूप में मनाता है। उनका सबसे महत्वपूर्ण संदेश हे प्रेम का संदेश। इसी कारण प्रभु यीशु को प्रेम के मसीहा के रूप में जाना जाता है। सम्पूर्ण मानव जाति को आवश्यकता है प्रेम की और प्रेम तभी सम्भव है जब ईर्ष्या, वैमन्सय, दुर्भावना, शत्रुता और बदला लेनेकी भावना न हो।

बाईबिल पवित्र शास्त्र की ओल्ड टेस्टामेन्ट की पुस्तक लैव्यवस्था में परमेश्वर का वचन है ''अपने मन में एक दूसरे के प्रति बैन न रखना, पलटा ने लेना और न अपने भाइयों से बैर रखना, परन्तु एक दूसरे से अपने ही समान प्रेम रखना, मैं यहोवा हूं।'' (लैव्य 19:17-18) विश्व शांति को बनाए रखने में सबसे बड़ी अड़चन है। आज कई देशों के पास इतने घातक और रसायनिक संहार करने वाले हथियार और विनाशक बम हैं कि विश्व में तबाही मचा सकते हैं। निश्चय ही ईश्वर ने अब इस संसार का निर्माण किया होगा और मानव की रचना की होगी तो इस बात की कल्पना तक नहीं होगी कि मानव उसके द्वारा रची गई सृष्टि की ऐसी दुर्दशा कर डालेगा और पृथ्वी का विनाश करने के लिए जैविक और रसायनिक प्राण घातक हथियारों का निर्माण कर डालेगा।

राजा डेविड ने अपने भजन में लिखा है ''तेरी व्यवस्था से प्रीति रखने वालों को बड़ी शांति होती है, और उनके कोई ठोकर नहीं लगती।''

प्रभु यीशु मसीह ने अपने उपदेश में कहा ''मैं तुम सुनने वालों से कहता हूं कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, जो तुम से बैर करें, उनका भला करो जो तुम्हें श्राप दें उनको आशीष दो,जो तुम्हारा अपमान करें उनके लिए प्रार्थना करो। जो तेरे एक गाल पर चांटा मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दें।

''यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई। जैसा तुम्हारा पिता परमेश्वर दयावन्त है वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो।'' सेंट लूक (छठे अध्याय से) संसार में हो रही आंतकवादी मनुष्यों का संहार करते हैं, निर्दोष, भोले-भाले व्यक्तियों को मौत के एक ओर मानव सभ्यता का ग्राफ ऊपर चढ़ा है तो दूसरी ओर नर-संहार, युद्ध और अपराधिक प्रवृत्तियां भी उसी अनुपात में बढ़ी हैं। ईश्वर ने मनुष्य को ज्ञान और विवेक का सर्वोत्तम गुण दिया है जो संसार के किसी प्राणी को इतना नहीं दिया, परन्तु इसका उपयोग अच्छे कार्यो और भलाई के साथ-साथ विनाश कार्यो में भी हो रहा है ओर इस प्रकार का विवेक का दुरूपयोग मानव व पृथ्वी के अस्तित्व के लिए भयंकर खतरा है। समय रहते नहीं चेता गया तो न यह संसार रहेगा और न इस पर निवास करने वाले प्राणी ही।

विश्व बंधुत्व के लिए पवित्र शास्त्र बाइबल नैतिक आचरण पर बल देती है। '' सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।'' (इब्रामियों 12वें अध्याय से)

''सब के साथ सहनशीलता दिखाओ। ध्यान रखो कि कोई बुराई के बदले किसी के प्रति बुराई न करें। परन्तु सर्वदा एक दूसरे की तथा सब लोगों की भलाई करने में प्रयत्नशली रहें।''

''हर एक मनुष्य बोलने में धीरजवंत और क्रोध करने में धीमा हो।'' ''जहाँ डाह ओर स्वार्थी आकांक्षा होती है, वहां बखेड़ा तथा हर प्रकार की बुराई भी होती है। (जेकब की पुस्तक से)

''सब प्रकार की कड़ुवाहट, रोष, क्रोध और निन्दा, सब प्रकार के बैर-भाव सहित तुम से दूर किए जाएं। एक दूसरे के प्रति दयालु और करूणामय बनो और परमेश्वर ने मसीह में जैसे तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो। (सेंट पॉल द्वारा लिखित पत्रों से जो बाइबिल के नए नियम की पुस्तिका है)

प्रेम के साथ-साथ अगर आज के मानव में क्षमा करने का गुण हो तो यह संसार स्वर्ग से बढ़कर हो जाए। क्रोधवश इंसान तबाही मचा देता है और बाद में पछताता है।

इसे विडम्बना ही कहा जाएगा कि आज यानी इस समय वर्तमान में अनेकों देश युद्धरत हैं या युद्धके लिए कमर कसे हुए हैं। हमारे ही पड़ौसी देश पाकिस्तान की कथनी और करनी में फर्क है। एक ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाता है तो दूसरी ओर सीमा पर गोली-बारी करवा देता है। यह तो भारत का बड़प्पन है कि वह शत्रुता नहीं पालता वरना स्थिति बिगड़ सकती है। अहिंसा में विश्वास रखने वाले हमारे देश के लिए युद्धरत होना तभी सम्भव है जब सामने वाला हठधर्मिता पर उतर आए। लेकिन सह-अस्तित्व ओर बँधुत्व के लिए आवश्यक है कि युद्ध की सम्भावनाओं को टाला जाए और मित्रता कायम

की जाए।

भारत सहित विश्व के अनेकों देश ऐसे भी हैं जिन्होंने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया। लेकिन दूसरी ओर ऐसे भी देश हैं जिन्हें युद्ध किए बगैर चैन नहीं पड़ता। इस समय संसार को दो, खतरे हैं-एक तो युद्ध करने के और दूसरा आतंकवादी हमलों का। इन सबका एक ही समाधान है-सह-अस्तित्व, शांति और प्रेम का संदेश। भारत में बुद्ध, गांधी और महावीर जैसी महान शख्सियतें हुई हैं जिन्होंने शांति और प्रेम के संदश दिए हैं और इसी का प्रतिफल है कि भारत अहिंसा और सह-अस्तित्व में विश्वास रखता है।

अब तो संसार को इन नारों की जरूरत है ''सोच बदलो, संसार बदलो'', ''जीओ और जीने दो'', ''सबको जीने का अधिकार है।'' इंसानियत भरी नहीं, आज भी जिन्दा है। संसार में बुरे लोग हैं तो अच्छे लोगों की भी कमी नहीं है। प्रभु यीशु मसीह ने अपने शिष्यों से कहा था ''अगर मनुष्य सारे संसार को जीत ले और अपनी अपनी आत्मा को खो दे तो उसे क्या लाभ?'' आज यही हो रहा है संसार लोभ, लालच, धन, पद और झूठी प्रतिष्ठा पाने के चक्कर में कुछ भी कर रहा है और अपनी आत्मा की आवाज को दबा रहा है।

'विद्या ददाति विनयम' अगर विद्या ग्रहण करने और शिक्षित होने के बाद भी व्यक्ति के जीवन में विनय, दया, प्रेम और मैत्री भाव नहीं है तो ऐसी शिक्षा का क्या महत्व ? आश्चर्य तब होता है जब आतंकवादी घटनाओं और विनाश लीला के पीछे मास्टर माइंड, उच्च शिक्षित वैज्ञानिकों, तकनीकी विशेषताओं और इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूर्ण कर चुके लोगों के हाथ होने का पता चलता है। शिक्षा इंसान को जीना सिखाती है और सभ्यता का पाठ पढ़ाती है, पर देखने में आ रहा है कि कई दिग्भ्रमित व्यक्ति पढ़ लिखकर इसका उपयेग विनाशकारी कार्यों में प्रयुक्त कर रहे हैं। यह निश्चय ही शर्मनाक बात है। प्रेम और दया विहीन इंसान खूंखार जानवरों से भी बदतर हैं। बाइबिल के नए नियम में संट पॉल ने प्रेम की व्याख्या बहुत ही सुंदर और प्रभावी ढंग से की है। ''यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं और प्रेम न रखूं तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल और झनझनाती हुई झांझ हूं। और यदि मैं भविष्यवादी कर सकूं, यदि मैं सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को खिला दूं या अपनी देह जलाने के लिए दे दूं, और प्रेम न रखूं तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। प्रेम धीरजवन्त है, कृपालु है, प्रेम डाह नहीं करता, प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, फूलता नहीं, अनरीति से नहीं चलता, कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, वह सत्य से आनन्दित होता है।''

आज सम्पूर्ण विश्व को ऐसे ही प्रेम की आवश्यकता है जो अभिमान और डींग से रहित हो, जो स्वार्थी नहीं परार्थी हो, जो अपनी ही नहीं दूसरों की भी चिंता करे। 'सारा जहां हमारा' वाली भावना जब तक लोगों में नहीं आएगी तब तक जग कल्याण नहीं होगा। जैसे डब्लू.एच.ओ और रेडक्रॉस जैसी संस्थाएं सम्पूर्ण विश्व में जन स्वास्थ्य के मिशन को लेकर काम करती है, जैसे यू.एन.ओ. जैसे संगठन राजनैतिक स्तर पर समस्त देशों को एकता के सूत्र में बांधे रखने की दिशा में कार्यरत है, वैसे सम्पूर्ण मानवता एक दूसरे के दुःख दर्द और कष्टों को समझे ओर उनके कल्याण के लिए कार्य करे तो विश्व बंधुत्व की भावना को बल मिलेगा। जैसे शरीर का एक अंग दुःखता है तो पूरे शरीर को कष्ट होता है, वैसे ही विश्व के किसी भी देश में संकट आए तो सहायता के लिए आगे बढ़ना चाहिए।

''यदि पेड़ को अच्छा कहो तो उसके फल को भी अच्छा कहो, या पेड़ को निकम्मा कहो, तो उसके फल को भी निकम्मा कहो, क्योंकि पेड़ अपने फल से ही पहचाना जाता है।'' (मत्ती रचित सुसमाचार की पुस्तक में प्रभु यीशु के वचन)

अच्छे फलों वाले वृक्ष (अच्छे व्यक्ति) ही संसार को सुखद छाया और फल प्रदान करेंगे। सभी देशों के सभी लोगों में प्रेम, बंधुत्व और एकता होगी तो आतंकवाद भी मिटेगा, विश्व में व्याप्त विनाशकारी शक्तियां भी नष्ट होंगी, युद्ध की सम्भावनाएं भी समाप्त होंगी, अविकसित देशों को विकसित हानेके अवसर भी मिलेंगे, संसार की आर्थिक व्यवस्था भी सुदृढ़ होगी और फिर यह संसार सचमुच चैन से रहने लायक स्थान होगा।

-पोस्ट ऑफिस रोड,
भीमगंज मण्डी, कोटा-324002
मो. 9414939850

जज्बे को सलाम

छियासी वर्ष में एम.ए. की डिग्री

मन में यदि उत्साह और कुछ कर गुजरने का जज्बा हो तो संसाधनों की कमी, अन्य अभाव और यहाँ तक कि आयु बाधा नहीं बन सकती। बस उमंग और काम के प्रति संग्लनता, निरन्तरता एवं प्रतिबद्धता जरूरी होती है। इस पर भी पढ़ने-लिखने का जोश तो गजब होता है। उन पर माँ सरस्वती की कृपा रहती है। जरूरत बस सच्चा संकल्प लेने भर की होती है। संकल्प आपका और उसे पूरा करने का काम माँ सरस्वती का। ऐसा ही एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है गुजरात के मनुभाई शाह ने। मनुभाई सही मायने में विद्यार्थी हैं। पढ़ना शुरू क्या किया कि बस पढ़ते ही जा रहे हैं। उम्र की बात करे तो वे हैं 86 वर्ष के और उम्र के साथ जोश देखें, तो वह है पच्चीस वर्ष के जवान जैसा। कदाचित पच्चीस को भी पीछे छोड़ दे-दौड़ नहीं, जोश में। बड़े जज्बेवान हैं हमारे मनुभाई। बहरहाल उनके जज्बे को सलाम करते हुए जनाब मनुभाई की उपलब्धि को शेयर करते हैं। भाई साहब ने इस उम्र में एम.ए. की पढ़ाई कर ''पढ़ने की कोई उम्र नहीं, पढ़ने में कोई शर्म नहीं'' नारे को चरितार्थ किया है। धन्य है मनुभाई जिन्होंने स्वयं को इस अवस्था में ज्ञानवृद्ध किया। वयवृद्धि तो प्रतिपल चलती रहती है और हम प्रतिक्षण वयोवृद्ध होते रहते हैं लेकिन ज्ञानवृद्धि तो मतोमत नहीं हो सकती। उसके लिए प्रयास करने पड़ते हैं। इंसान को चाहिए कि वह वयोवृद्ध होने के साथ ज्ञानोवृद्ध होने के लिए भी प्रयास करे। 18 अक्टूबर 2013 को अहमदाबाद की गुजरात विद्यापीठ संस्थान में आयोजित भव्य दीक्षान्त समारोह में विद्यापीठ के माननीय कुलाधिपति डॉ. नारायण देसाई ने विद्यापीठ के 837 विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान कीं। इन विद्यार्थियों में एम.ए. की डिग्री पाने वाले एक युवा विद्यार्थी मनुभाई शाह भी थे जिनकी आयु मात्र 86 वर्ष है। मनुभाई अभी और पढ़ना चाहते हैं, जीवन भर पढ़ना चाहते हैं। ऐसे जज्बेवान विद्यार्थी को सलाम।

(लेखक राज्यस्तरीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित हैं।)

-महेन्द्र सिंह मान
व.शा.शि.(से.नि.), हनुमानगढ़ जंक्शन
मो. 9414046464

तुलसी का शिक्षा-दर्शन

सूर सूर तुलसी शशि उड़गन केशवदास

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

गोस्वामी तुलसीदास का भारतीय वाङ्मय में बड़ा प्रतिष्ठापूर्ण स्थान है। उनके द्वारा विरचित श्रीरामचरितमानस महाकाव्य मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र का जीवन चरित्र ही नहीं है अपितु इसमें एक आदर्श जीवन प्रणाली एवं कर्तव्यों का बहुत सुन्दर चित्रण किया गया है। श्रीरामचरितमानस का शिक्षा दर्शन अनूठा है जो एक तरह से तुलसी बाबा का हम पर उपकार है। सरल भाषा में उत्तम भाव से लिखा यह ग्रंथ पढ़ने पर कहीं कलिष्टता अथवा कठिनता महसूस नहीं होती बल्कि लगता है जैसे किसी संगीत के झरने में अवगाहन कर रहे हैं। यद्यपि गोस्वामी जी ने अनेक ग्रंथों की रचना कीं मगर उनमें श्रीरामचरितमानस शिरोमणि है। यह उनकी प्रतिनिधि रचना है जिसके नाना अर्थ, नाना भाष्य और नाना रूप है। सरल इतना है कि पढ़ते या कि सुनते हुए लगता है जैसे सब सामने घटित हो रहा है अथवा जैसे सब उन्हीं से संबंधित है और इतना गहरा है कि उसमें गोता लगाना शुरू करें तो लगता है जैसे अभी तो कुछ नहीं समझा, समझता तो शेष ही है–हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता; कहहिं सुनहिं बहु विधि सब सन्ता।

भारतीय चिन्तनधारा में गुरु को ईश्वर से बड़ा माना गया है क्योंकि ईश्वर की राह दिखाने काम गुरु ही करते हैं। इस सम्बन्ध में कबीरदास जी का यह दोहा बड़ा सटीक है–

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आप ही गोविन्द दियो बताय।।

श्रीरामचरितमानस में तुलसीदास जी गुरु की महिमा बताते हुए कहते हैं–

बंदऊ गुरुपद पदम परागा।
सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।।
मातु पिता गुरु प्रभु कै बानी।
बिनहिं विचार करिअ शुभ जानी।।
गुरु बिन भवनिधि तरइ न कोई।
जो विरंचि संकर सम होई।।

गुरु वचन को अमृत वचन मानकर उसे तुरन्त (उस पर कोई अन्यथा विचार किए बिना) मान लेना चाहिए। यह शिक्षक के लिए बड़ी प्रतिष्ठा की बात है। गोस्वामी जी कहते हैं कि गुरु की कृपा के बिना भवसागर पार नहीं किया जा सकता भले ही वह भगवान शंकर के समान ही क्यों न हो।

श्रीरामचरितमानस में गुरु की महिमा को लेकर किया गया उत्तम वर्णन आज के शिक्षकों को समझना चाहिए। शिक्षक के बिना किसी को सफल जीवन जीने का रास्ता नहीं मिल सकता। उसकी शैक्षिक, सामाजिक व मानसिक समझ शिक्षा के बल पर ही मिल सकती है जिसका दारोमदार स्वयं शिक्षक होता है।

यद्यपि तुलसी से पूर्व कई विद्वानों ने राम कथा लिखकर एक दर्शन समाज के सामने रखने का प्रयास किया था, इनमें वाल्मीकि की रामायण का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है जिसकी रचना ईसा से लगभग 500 वर्ष की गई तथापि मानस का मुकाबला अन्य कोई राम कथा ग्रंथ नहीं कर सकता। डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपने शोध ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' में लिखा है, 'हिन्दी साहित्य में तुलसीदास और रामचरितमानस को जो स्थान प्राप्त है, वह किसी भी अन्य कवि अथवा कृति को सुलभ नहीं है। रामचरितमानस का आधार रामकथा है, किन्तु मात्र आधार के सहारे ही इसे स्थायित्व प्राप्त नहीं हुआ है। तुलसीदास से पूर्व भी अनेक रामभक्त कवियों ने रामकथा को आधार बनाकर विविध कृतियों का सृजन किया। ईसा से 600 या 400 वर्ष पूर्व वाल्मीकि ने रामकथा की रचना द्वारा सर्वप्रथम रामकथा को जन समाज के समक्ष प्रस्तुत किया था। डॉ. राम कुमार वर्मा के मतानुसार रामकथा तुलसी के हाथों में आकर जिस रूप को प्राप्त हुई, वह निर्विकार रूप से स्थाई और अद्वितीय है। वे लिखते हैं, 'तुलसी की प्रतिभा और काव्य कला इतनी उत्कृष्ट प्रमाणित हुई कि उनके बाद किसी भी कवि की रामचरित सम्बन्धी रचना उनके मानस की समानता में प्रसिद्धि प्राप्त नहीं कर सका।' तुलसी की कविता कला पर कहा जाता है– कविता करके तुलसी न लसे; कविता लसी या तुलसी की कला।

तुलसी ने राम के चरित्र को आधार बना कर मानव जीवन की जितनी गहन समीक्षा की है, वह बेमिसाल है। उन्होंने इस समीक्षा के समान्तर लोक शिक्षा को भी अपने जेहन में रखा क्योंकि कवि व लेखक का यह सामाजिक दायित्व होता है कि वह अपने कविता कर्म/लेखन में ऐसे संस्कार व मूल्यों को स्थापित करें जो समाज का पथ प्रदर्शन करने वाले हों। तुलसी इसमें स्याव खरे उतरते हैं। वे कोई सामान्य कवि नहीं थे बल्कि ऐसे चिन्तक व शब्द मनीषि थे जिनके पास स्वयं का एक ठोस जीवन दर्शन था। वे एक शिक्षक के रूप में उस दर्शन को जन-जन के बीच ले आना चाहते थे। राम का जीवन अपने आप में आदर्श है। वे मर्यादाओं का पालन करने में अग्रणी रहते हैं। अतः राम के पात्र को आधार बनाकर तुलसी बाबा के द्वारा एक सहज जीवन दर्शन समाज के सम्मुख प्रस्तुत करना बहुत सुखद है। मर्यादा में रहने, पुरुषोचित मर्यादाओं का पालन करने में संलग्न रहने के कारण राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। निसंदेह भारत में राम के चरित्र को अत्यन्त श्रद्धा, सम्मान व अनुकरण के रूप में देखा व स्वीकार किया जाता है। इसका श्रेय तुलसी व उनकी मानस रचना को दिया जाना चाहिए। यह मानस ही है जिसमें घर-घर और जबान-जबान पर राम और उनके यशोगान को स्थापित किया। नैतिकता युक्त जीवन का मार्ग प्रशस्त हुआ आखिर रामचरित्र के रूप में। किंचित कल्पना करें, यदि श्रीरामचरितमानस नहीं होतीं तो क्या भारत इतनी राम कथा व उसमें निहित जीवन दर्शन को जान पाता। इसका प्रत्युत्तर कदाचित नहीं ही आएगा। यह है बाबा तुलसी की तपस्या का प्रभाव, जो श्री रामचरितमानस के रूप में प्रकट हुआ।

राम के बाल्यकाल की बात है। एक दिन महर्षि विश्वामित्र दशरथ के दरबार में पहुंचते हैं। वे कहते हैं कि वन में राक्षस लोग उनके आश्रमों में जप-तप व ब्रह्मचारियों के पठन-पाठन में बाधा डालते हैं। अतः आप राम को उनके साथ भिजवा कर उन राक्षसों का विनाश करने में मदद करें। इस बात का विश्लेषण करते हैं। ऋषियों के आश्रम यानी ब्रह्मचारी विद्यार्थियों के गुरुकुल आज के युगानुसार गुरुकुल माने विद्यालय, ऋषि

माने शिक्षक एवं ब्रह्मचारी माने विद्यार्थी और दशरथ माने सरकार। गुरुकुल में रहकर ब्रह्मचर्य आश्रम (1 से 25 वर्ष) में विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करें। गुरुकुल को राक्षस तहस-नहस कर रहे हैं जिसका अर्थ है कि शिक्षा व्यवस्था को नष्ट कर रहे हैं। राक्षस रावण के प्रतिनिधि है। राक्षसराज है रावण। राक्षसों का राजा यानी राक्षसों में महाराक्षस। रावण उन ताकतों का प्रतिनिधि है जो विध्वंशकारी है। किसी न किसी रूप में ऐसी ताकतें हर युग में रही हैं और रहेंगी। मगर इन ताकतों को नेस्तनाबूद करने के लिए राम यानी ईश्वर अवतार लेते हैं। यहां गीता का संदेश बरबस याद आ जाता है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युग युगे।।

अर्थात् दुष्टों का नाश करने तथा सज्जनों की रक्षा कर धर्म **(देखें प्रतिध्वनि शिविरा नवम्बर, 2013 पृ. सं. 50)** की संस्थापना करने के लिए महापुरुष जन्म लेते हैं। यहां दशरथ धर्म संकट में है। राक्षसों का विनाश बालक राम-लक्ष्मण कर देंगे। विश्वामित्र को कैसे समझाएं। वे तो क्रोध के साक्षात स्वरूप हैं। एक तरफ कुआं, दूसरी तरफ खाई। ऐसे वक्त में गुरु याद आते हैं। अंधेरे को मिटाकर जो प्रकाश दिखा दे वह गुरु। क्या करें-क्या न करें कि अधरझूल स्थिति में क्या करना है, का मार्ग दिखा दें वह गुरु।

महाराजा दशरथ गुरु वशिष्ठ के पास जाकर अपनी व्यथा-कथा सुनाते हैं। वशिष्ठ तो त्रिकालदर्शी हैं। उनके परामर्श व सहमति से राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ वन में जाते हैं। आगे की कथा पाठक भलीभाँति जानते हैं। यहां श्रीरामचरितमानस से शिक्षा मिलती है कि गुरु का स्थान सामाजिक व्यवस्था में बहुत उच्च एवं सम्मानजनक है। गुरु जो कहे, उसे स्वीकार कर लेना शिष्य का कर्तव्य है। दूसरी बात यह कि रावण के अनुयायी राक्षस शिक्षा व्यवस्था को धूलधुसरित कर देना चाह रहे हैं। ऐसे में राजा अपना कर्तव्य निभाते हुए उसकी रक्षा करने का उपाय करते हैं। यहां एक बात यह भी निगह योग्य है कि पहले गुरु (शिक्षक) स्वयं आकर अपनी समस्या शासक (सरकार) को बताते हैं। गुरु जब राजा के दरबार में जाते हैं तो उनका आत्मिक सम्मान किया जाता है। राजा खड़े होकर उनका अभिनन्दन करते हैं। उच्च स्थान पर बिठा कर गरिमा प्रदान करते हुए सेवा के लिए निवेदन करते हैं। तब गुरु न केवल सेवा बताते हैं बल्कि उसके समाधान का उपाय भी सुझाते हैं यथा- **समस्या**-राक्षस उनके गुरुकुल तहस-नहस कर देना चाहते हैं। **समाधान**-राम-लक्ष्मण को हमारे साथ भेज दो। वे उनसे मुकाबला करके शिक्षा व्यवस्था को नष्ट होने से बचा लेंगे। मार्गदर्शन के लिए हम साथ रहेंगे।

आज की पीढ़ी के गुरुजन को भी चाहिए कि वे शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याओं को चिह्नित कर उन्हें उचित प्लेटफार्म पर यथोचित समाधानकारी सुझाव के साथ रखें तथा समाधान प्रक्रिया का स्वयं हिस्सा बनते हुए समाधान प्राप्त करें। अब तो वैसे भी लोकतंत्र है। लोकतंत्र में मतदाता ही राजा-महाराजा है। मतदाता होने के नाते औपचारिक रूप से कर्मी होते हुए भी शिक्षक कहीं अधिक अधिकार एवं कर्तव्य का भागी है।

विद्यार्थियों के लिए मानस में वर्णित रामचरित्र बहुत शिक्षा प्रदायक है। गुरु वशिष्ठ व विश्वामित्र के पास अध्येता राम व अन्य भाई कितनी गुरु सेवा करते हैं, उनके वचन के ताबेदार रहकर पालना करते हैं। सीता स्वयंवर के दौरान धनुष तोड़ने के लिए जनक की ललकार के बावजूद राम खामोश रहते हैं। यहां तक कि लक्ष्मण को भी ऐसा नहीं करने की संकेत से सीख देते हैं। वे किस बात का इंतजार कर रहे हैं। इन्तजार है गुरु के आदेश का। विश्वामित्र जैसे ही आदेशमय इशारा करते हैं, राम अपना काम करने के लिए आगे बढ़ जाते हैं और फिर कितना समय लगता है शिव धनुष टूटने में। यह गुरु महिमा का बहुत बड़ा उदाहरण है। मगर यह योग्यता गुरु के लायक भूमिका अदा करने पर ही मिलती है। आज भी ऐसे शिक्षक (वर्तमान व निवर्तमान) मिल जाएंगे जिनके इशारे को आदेश मानकर शिष्य कर्तव्यपालन के लिए तत्पर हो जाते हैं।

श्रीरामचरितमानस में राम के चरित्र का किसी भी दृष्टि से विश्लेषण करें, उसमें आदर्श ही दिखाई देता है। तुलसी कृत मानस की रामकथा के राम जैसे नायक हैं। किसी फिल्म में जैसे अन्य पात्र भी अपना-अपना प्रभाव दर्शकों पर छोड़ते हैं जबकि केन्द्र में हीरो ही रहता है। ऐसे ही रामकथा में राम के अलावा उनका परिवार, महाराज दशरथ, उनकी रानियां, अन्य भाई आदि, गुरुजन, प्रजाजन, मिथिला नरेश, सभासद मंत्रिगण, अयोध्यापुरी, मिथिलापुरी, वन जाने पर वन में रह रहे तपस्वी, मुनि, वन्य प्राणी, जीव-जन्तु, सीता हरण होने के पश्चात जाम्बवन्त, हनुमानजी, सुग्रीव, अंगद, विभीषण, वैद्यराज आदि-आदि। सबका जीवन दर्शन एक दृष्टि प्रदान करने वाला है। परस्पर रिश्तों का गणित किन सूत्रों में होना चाहिए, की अद्भुत नजीर रामकथा में देखने को मिलती है।

रामकथा व रामचरित तथा मानस को सम्मान प्रदान करते हुए डॉ. एस.एल. शर्मा ने बहुत सुन्दर लिखा है, 'तुलसीदास का जीवन दर्शन राम राज्य का दर्शन है जहां हर व्यक्ति परम गति का अधिकारी है। जहां सुख और समता है, जहां प्रेम और न्याय है। तुलसीदास का दर्शन जीवन के लिए है, एक सामाजिक जीवन के लिए। उनका दर्शन एक नई समाज व्यवस्था का दर्शन है, समाज की पुनर्स्थापना का दर्शन है। उनका दर्शन आदर्श सामाजिक सम्बन्धों का, जीवन के नूतन मूल्यों का दर्शन है। रामराज्य उनके इसी जीवन दर्शन का प्रतिरूप है। रामराज्य उनका आदर्श राज्य है और राम आदर्श राजा भी है और आदर्श मानव भी। उनके इस कल्पित राज्य में, कल्पित समाज में जो कुछ है, वह उत्तम है। उत्तम राजा और उत्तम प्रजा, उत्तम माता और उत्तम पुत्र, उत्तम गुरु और उत्तम शिष्य। उत्तम व्यक्तियों के उत्तम सम्बन्ध और उन पर टिकी हुई उत्तम सामाजिक व्यवस्था।'

तुलसी के जीवन दर्शन की बात करने पर डॉ. फादर कामिल बुल्के को स्मरण करना आवश्यक है। भौगोलिक दृष्टि से विदेश बेल्जियम में जन्मे 'विदेशी' मगर आत्मीय दृष्टि से हिन्दी के प्रकाण्ड पंडित भारत में आकर बस गए 'स्वदेशी' कामिल बुल्के गोस्वामीजी के प्रेम में रंग कर भारत खिंचे चले आए। यहां आकर उन्होंने हिन्दी को इतनी ऊँचाई व गहराई त सीखा कि अन्ततः सेंट जेवियर कॉलेज, रांची में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बने। उनका 'रामकथा : उत्पति एवं विकास ग्रंथ' राम, तुलसी एवं मानस से रुबरु करवाने के लिए अधिकाधिक रचना है जिसे पढ़ने पर नए-नए विचार इन संदर्भों में मस्तिष्क में कौंधते हैं। **(क्रमशः)**

-वरिष्ठ संपादक, शिविरा

नैतिक शिक्षा

विद्यालय में हो पारिवारिक परिवेश

❒ सत्य नारायण पंवार

परिवार एक स्वभाविक समुदाय है। इसका मुख्य आधार है साथ रहने (एकता) की स्वभाविक प्रवृति। परिवार मनुष्य की चेतना का एक संसार है जिसमें गांव, गली, मौहल्ला नक्षत्र, ब्रह्माण्ड सब एक हो जाते हैं। अच्छा और सुखी परिवार वही होता है, जहाँ आत्मीयता हो, सहनशीलता हो, त्याग की भावना हो और स्वार्थ का अभाव हो। वास्तव में परिवार सामाजिक जीवन की पाठशाला है, जहाँ प्यार, सेवा, सहयोग, सम्मान, आज्ञाकारिता तथा त्याग जैसे गुणों का विकास होता हो। परिवार में बच्चों के व्यक्तिगत और चरित्र का निर्माण होता है। परिवार के सभी सदस्यों से बच्चों को कर्तव्य और अधिकारों का बोध होता है। परिवार का प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक वस्तु बच्चों के लिए शिक्षक का कार्य करती हैं। प्रत्येक बालक परिवार की पाठशाला घर में जीवन के मूल्यों की शिक्षा ग्रहण करता है यानी प्रत्येक बालक की प्रारम्भिक शिक्षा का विद्यालय उसका अपना घर है।

पाँच वर्ष की उम्र के बालक को औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए उनके अभिभावक उन्हें किसी शिक्षण संस्था में भर्ती करवाते हैं। इतना ही नहीं अभिभावक चाहते हैं कि विद्यालय में उनके बालकों के आचार और विचारों में आवश्यक परिवर्तन हो, जिससे वे देश के अच्छे नागरिक बनें। वास्तव में देखा जाए तो विद्यालय में भी एक परिवार के सदस्यों की तरह प्राचार्य, अध्यापक और विद्यार्थी रहते हैं। विद्यालय परिवार के सभी सदस्यों की गतिविधियाँ छात्रों के बौद्धिक, मानसिक और शारीरिक विकास की ओर केन्द्रित होती है। अच्छा विद्यालय परिवार भी वही होगा, जहाँ परिवार के सदस्यों जैसी आत्मीयता, सहनशीलता एवं त्याग की भावना हो। छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए घर में परिवार के सदस्यों और विद्यालय परिवार में अध्यापकों का सहयोग आवश्यक है। छात्रों के सम्पूर्ण विकास के लिए घर में अभिभावकों को अपना-अपना कर्तव्य निभाना चाहिए, जिससे वे अच्छे नागरिक बनें। इस शिक्षा के लक्ष्य को पाने के लिए छात्रों, अभिभावकों और अध्यापकों के आपसी सम्बन्ध अच्छे होने चाहिए। इन तीनों के द्वारा बने त्रिकोण के आधार पर हमारे देश के भविष्य का निर्माण हो सकेगा। इस त्रिकोण की भुजाएं, जो विद्यार्थी और अध्यापक, अध्यापक और अभिभावक एवं अभिभावक और विद्यार्थी के सम्बन्धों की द्योतक है-कमजोर नजर आ रही हैं, क्योंकि विद्यालय को परिवार न मानकर व्यापार मानते हैं, विद्यालय परिवार के सदस्यों के आपसी सम्बन्धों का विश्लेषण करके उनमें आत्मीयता, सहनशीलता एवं त्याग की भावना को जाग्रत किया जाय, जिससे विद्यालय परिवार समृद्धिशाली और सुखी बने।

आधुनिक छात्र पहले के छात्रों से ज्यादा बुद्धिमान, जागरूक और लायक हैं, लेकिन कलुषित सामाजिक और राजनैतिक वातावरण ने कुछ छात्रों को नालायक बना दिया है। इसी प्रकार आज का अध्यापक भी पहले के अध्यापकों से ज्यादा शिक्षित और प्रशिक्षित है, लेकिन भौतिकवाद के चक्कर में पड़कर कुछ अध्यापक ज्ञान को बेचकर पैसा कमाने में लगे हुए हैं। उन्हें अपनी शिक्षकीय प्रतिष्ठा की चिन्ता नहीं है। ऐसी परिस्थिति में विद्यार्थी और अध्यापकों के बीच व्यापारी और ग्राहकों से सम्बन्ध हैं। कुछ आधुनिक अध्यापक न तो विद्यार्थियों को ठीक से पढ़ाते हैं और न उन्हें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ज्यादातर अध्यापक पढ़ाने में रूचि नहीं लेते। सिर्फ कक्षा में भाषण देते हैं और छात्रों को डराकर ट्यूशन के लिए प्रेरित करते हैं। ऐसे स्वार्थी अध्यापकों का छात्र आदर नहीं करते जो, कक्षा में देर से पहुँचते हैं या आते ही नहीं, और आते हैं तो ठीक से पढ़ाते नहीं। आधुनिक विद्यार्थी और अध्यापकों को आत्म-विश्लेषण करना चाहिए।

आधुनिक छात्रों को चाहिए कि वे समय को व्यर्थ न गवायें और अध्ययन करके उसका सदुपयोग करें। अपने गुरू से ज्ञान अर्जित करने में परामर्श लें और कक्षा में अपनी शंकाओं का अध्यापक से प्रश्न पूछकर समाधान करें। विषय के ज्ञान का रट्टा न लगाकर उसे समझने का प्रयत्न करें। प्रत्येक विद्यार्थी चरित्रवान बनकर गुरु का आदर करें। हड़ताल एवं तोड़फोड़ में भाग न लेकर राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत रहें। व्यसन को छोड़कर अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें।

आधुनिक अध्यापक भी विद्यालय को अपना परिवार माने और छात्रों को अपनी संतान समझें, जिससे आत्मीयता की भावना उत्पन्न हो। भौतिकवाद को छोड़कर त्याग की भावना से विद्यार्थियों को पढ़ाने में रुचि लें। अपने शिक्षण कार्य को निस्वार्थ और ईमानदारी से करें। अपने रोजगार की निन्दा भूलकर भी न करें और सहनशील और चरित्रवान बनें, छात्रों पर अच्छा प्रभाव पड़े। हीन-भावना को त्याग कर अपने आपको राष्ट्र निर्माता समझें। इतना ही नहीं, नवीन-प्रक्रियाओं के द्वारा सूक्ष्म क्रियाओं में सुधार लाने का प्रयत्न करें। शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय भावना और भावनात्मक एकता उत्पन्न

एकता दिवस विशेष

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं

हिन्द देश के निवासी
सभी जन एक हैं
रंग-रूप, वेश-भाषा
चाहे अनेक हैं।
बेला, गुलाब, जूही,
चम्पा, चमेली
प्यारे-प्यारे फूल गुंथे
माला में एक हैं।
कोयल की कूक न्यारी,
पपीहे की टेर प्यारी
गा रही तराना बुलबुल,
राग मगर एक है।
गंगा, जमुना, ब्रह्मपुत्र,
कृष्णा, कावेरी
जाके मिल गई सागर में हुई
सब एक हैं।
हिन्द देश के निवासी
सभी जन एक हैं।
रंग-रूप, वेश-भाषा,
चाहे अनेक हैं।

करने की कोशिश करें। विद्यालय में प्रबंध उत्पन्न करने का प्रयत्न करें, जिससे उनके छात्र समाज और राष्ट्र की उन्नति में सक्रिय भाग लें। वास्तव में अध्यापक स्वतंत्र भारत का स्वतंत्र नागरिक है। उसके लिए स्वतंत्रता इतनी महत्वपूर्ण नहीं, जितनी उससे उत्पन्न हुए सामाजिक दायित्व द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास और देश की उन्नति महत्वपूर्ण है।

आधुनिक अध्यापक और विद्यार्थी विद्यालय को एक परिवार मानकर शान्ति से मिलकर रहेंगे, कार्य करेंगे और एक दूसरे की सेवा करेंगे, तो अवश्य ही छात्रों का सर्वांगीण विकास होगा और व्यापारिक सम्बन्ध समाप्त हो जायेंगे।

अधिकतर ऐसा देखा गया है कि विद्यार्थी का सही विकास न होने का दोष अध्यापक अभिभावक पर थोपता है क्योंकि छात्र अपने परिवार में 18 घंटे तक रहता है। अभिभावक अपने बच्चों को स्कूल में सर्वांगीण विकास के लिए भेजते हैं और आशा करते हैं कि अध्यापक उन्हें अच्छा ज्ञानी नागरिक बनायेगा। विद्यार्थी किसी विषय में कमजोर हो, तो उसका दोष अध्यापक पर थोपते हैं। स्कूल में प्रधानाध्यापक अध्यापकों और अभिभावकों को आपस में मिलने का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे उनके बीच में आपसी सम्बन्धों को सुधारा जाये और गलतफहमियों को दूर कर सकें। केवल एक दूसरे की आलोचना करने से आपसी तनाव बढ़ता है और उसका दुष्प्रभाव छात्रों के विकास पर पड़ता है।

आज का अभिभावक अपने बच्चों की पढ़ाई की ओर ज्यादा ध्यान रखता है क्योंकि अच्छे रोजगार के लिए प्रतियोगी परीक्षा में बैठना पड़ता है। इतना ही नहीं, डाक्टर और इंजीनियर बनने के लिए प्री-इंजिनियरिंग और प्री-मेडिकल की परीक्षा में बैठकर मेरिट में आने पर ही कॉलेज में प्रवेश मिलता है। अभिभावक इतना सतर्क हो गया है कि अध्यापकों की ट्यूशन लगाकर अपने बच्चों को होशियार बनाना चाहते हैं। कुछ अभिभावक तो अध्यापक को नौकर समझते हैं, क्योंकि वे अपने पैसों से उन्हें खरीद सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में अभिभावक और अध्यापक के बीच व्यापारिक संबंध स्थापित हो जाते हैं और जिसका प्रभाव छात्रों के विकास पर पड़ता है। कुछ अभिभावकों के बच्चे अगर परीक्षा में कम अंक प्राप्त करते हैं, तो वे अध्यापकों पर पक्षपात का आरोप लगा लांछित करते हैं, लेकिन ईमानदार अध्यापक निष्पक्ष होकर परीक्षा की कापियाँ जाँचते हैं। अभिभावकों को अध्यापकों पर पूरा विश्वास होगा, तब ही उनके बच्चे ज्ञान अर्जित कर सकेंगे।

आजकल अध्यापकों को समाज के बदलते परिवेश को ध्यान में रखकर अपना कार्य सुचारु रूप से करना चाहिए, वर्ना उन्हें विद्यार्थी और अभिभावकों को आलोचना सहन करनी पड़ेगी। अध्यापकों को विद्यार्थियों के अभिभावकों का विश्वास जीतने के लिए विद्यार्थियों को सुचारु रूप से पढ़ाना होगा और उनके विकास की रिपोर्ट समय-समय पर उनके अभिभावकों को करनी होगी, जिससे उनके सम्बन्ध अच्छे रहें और परस्पर विश्वास कायम हो सके। अध्यापकों को अभिभावकों की गलतफहमियों को समझाकर समाप्त करनी होगी, जिससे उनके आपसी सम्बन्धों में सुधार हो। अध्यापकों को विद्यार्थियों के अभिभावकों को नजदीक के रिस्तेदार मानकर विद्यालय परिवार के सदस्यों की उन्नति में उनका सहयोग लेना चाहिए। अध्यापक विद्यार्थियों को गृह-कार्य देता है और अभिभावक उसे करने में सहायता दें। अध्यापकों द्वारा पढ़ाये पाठ को अगर अभिभावक घर में अपने बच्चों को दुहराने के लिए कहें, तो अध्यापक के कार्य में सहायता मिलेगी। अध्यापक और अभिभावक की सभी गतिविधियां छात्रों के बौद्धिक और मानसिक विकास की ओर केंद्रित होनी चाहिए और इनके आपसी सम्बन्ध मजबूत हों, तो छात्रों का सर्वांगीण विकास अवश्य ही होगा।

विद्यार्थी और अभिभावक एक परिवार में 18 घंटे एक साथ रहते हैं और इनके सम्बन्ध अच्छे होने आवश्यक हैं, लेकिन कुछ अभिभावक अपने व्यापार में इतने लगे रहते हैं कि उन्हें अपने बच्चों के विकास की ओर ध्यान ही नहीं रहता। आजकल माता-पिता दोनों नौकरी करते हैं और थक कर घर लौटने के पश्चात वे अपने बच्चों की पढ़ाई में सक्रिय सहयोग नहीं दे पाते। कहीं-कहीं माता-पिता के बीच भावनाओं के टकराव के कारण लड़ाई झगड़े होते हैं, तो उसका दुष्प्रभाव बच्चों के विकास पर पड़ता है। इतना ही नहीं कुछ छात्र अपने मौहल्ले के गंदे बच्चों के साथ रहकर गलत रास्ते अपना लेते हैं और माता-पिता की लापरवाही से वे अपना जीवन बर्बाद कर लेते हैं। घर में पिता शराब पीकर अपनी पत्नी से रोज झगड़ा करे, तो उनके बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगेगा और वे गृह-कार्य भी नहीं कर सकेंगे। ऐसे टूटते घर के बच्चे पढ़ाई में कमजोर हो जायेंगें क्योंकि माता-पिता और बच्चों के बीच सम्बन्ध में आत्मीयता नहीं रहती।

अभिभावक को चाहिए कि वे अपने बच्चों के लिए ऐसा परिवेश तैयार करें, जिससे उनके बच्चे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित हों। वे अपने बच्चों के लिए पुस्तकें लाकर दें और उनके प्रश्नों के उत्तर समझा कर दें। अपने बच्चों की क्षमता को ध्यान में रखते हुए उन्हें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। घर के परिवेश में शान्ति और स्वच्छ विचारों के आधार पर अपने बच्चों को अच्छा इंसान बनाने का प्रयत्न करें। बच्चों को भी अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन और उनका आदर करना चाहिए। वास्तव में देखा जाय, तो माता-पिता के जीवन का उद्देश्य होता है अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर एक सफल नागरिक बनाना, जिस पर वे गर्व कर सकें।

यदि एक विद्यालय परिवार के सदस्य एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते हुए वैचारिक समन्वय करते हैं, तो यह सम्बन्धों का एक बड़ा सहयोग है। मान्यताओं की भिन्नता होते हुए भी यदि परिवार के किसी सदस्य को अपना जीवन सामाजिक व आध्यात्मिक सेवा में लगाने की इच्छा है तो उसकी भावनाओं का आदर करते हुए परिवार के अन्य सदस्य उसे खुशी, समय व स्वतंत्रता दें। इससे सम्बन्धों में मधुरता बढ़ेगी और परिवार का सम्पूर्ण विकास होगा।

माँ-बाप के प्रेम से अभिसिक्त बच्चा जब विद्यालय की चारदीवारी में पदार्पण करता है तो वहाँ भी उसे शिक्षकों से उसी प्रकार का प्रेम मिलना चाहिए, जिस तरह उसे अपने माँ-बाप एवं परिवार के सभी सदस्यों से घर में प्रेम मिलता रहा है। यदि शिक्षक कड़ाई का व्यवहार दिखलाते हैं, मारते पीटते हैं तो बालक के व्यक्तित्व का विकास अवरुद्ध होगा और वह विद्यालय से विकर्षित ही होगा। अतः कर्तव्य है कि हम विद्यालय को बालक का 'घर' बना दें।

-68, गोल्फ कोर्स स्कीम, जोधपुर 342011
फोन 0291-2670659

मानव अधिकार दिवस

शैक्षिक दायित्व एवं स्कूली शिक्षा की अपेक्षाएं एवं चुनौतियां

❑ दुलीचन्द शर्मा

श्री दुलीचन्द शर्मा आदर्श शिक्षक एवं कुशल प्रशासक हैं। वर्षों से शिक्षक प्रशिक्षण से जुड़े श्री शर्मा पाठ्यक्रम एवं निर्माण कार्यों से भी जुड़े रहे हैं। आप शिविरा के शुभचिन्तक हैं और समय-समय पर हमें अमूल्य सुझाव देते रहते हैं। मानव अधिकार और शिक्षा विषय को केन्द्र में रख कर लिखा उनका यह आलेख निश्चय ही पाठकों को अच्छा लगेगा। **-वरिष्ठ संपादक**

शिक्षा ही वह माध्यम है जो व्यक्ति को सम्मानजनक एवं भयमुक्त जीवन जीने का बोध कराता है उसे उसके अधिकारों से परिचित कराता है। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था कि जब तक हम शिक्षा को आत्मसात नहीं कर लेंगे तब तक हम अपने चरित्र का निर्माण नहीं कर सकते। मानवता रहित शिक्षा अपूर्ण है। शिक्षा विशेषकर स्कूली शिक्षा की कई अपेक्षाएं एवं गंभीर चुनौतियाँ हैं। स्कूली शिक्षा विद्यार्थियों को अच्छा, जागरूक, शिक्षित नागरिक बनाए जिन्हे मानव अधिकारों का पूरा ज्ञान हो तथा जो इस ज्ञान के प्रकाश में अपने कर्तव्यों का पूरी जिम्मेदारी के साथ निर्वाह करें।

शिक्षा से हमेशा अपेक्षा की गई है कि उससे समूचे व्यक्तित्व का विकास हो, चरित्र का निर्माण हो तथा शिक्षा के माध्यम से सामाजिक जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न हो।

सन् 1948 में संयुक्त राष्ट्र संघ की मानव अधिकारों पर सार्वभौम घोषणा पर हस्ताक्षर करने वाले सभी देशों ने माना कि सभी व्यक्ति जन्मजात स्वाधीन एवं समान हैं, तथा बिना भेदभाव के सभी मौलिक अधिकारों व आजादी के हकदार हैं। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन, स्वाधीनता एवं सुरक्षा का अधिकार है। किसी को दास नहीं बनाना चाहिए और न ही किसी को यातना, क्रूर, अमानवीय, अपमानजनक व्यवहार या सजा का पात्र बनाना चाहिए। प्रत्येक को अधिकार है कि कानून के समक्ष उसे एक व्यक्ति माना जाए। कानून के सामने सभी लोग समान है तथा किसी भी प्रकार के भेदभाव से सुरक्षा के हकदार हैं। अर्न्तराष्ट्रीय/राष्ट्रीय कानून के तहत मानव अधिकारों का दायित्व निभाना इन देशों की बाध्यता मानी गई है। अतः इस दिशा में प्रयास किए जाने चाहिए।

भारत ने मानव अधिकार संरक्षण अधिनियम 1993 को पारित किया जिसके क्रम में राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग एवं कई राज्यों में राज्य मानव अधिकार आयोग की स्थापना की गई । विश्व के अनेक देशों में राष्ट्रीय स्तर पर मानव अधिकार आयोग गठित है तथा संयुक्त राष्ट्र संघ का मानव अधिकार आयुक्त भी कार्यरत हैं। इन सभी के साथ भारत का आयोग संपर्क में रहता है तथा विचारों का आदान-प्रदान होता है। फलस्वरूप मानव अधिकार एक प्रमुख विषय बनकर उभरा है।

सारा विश्व मानवाधिकारों के महत्व को समझने लगा है तथा चाहता है कि सभी लोग मानवाधिकारों से परिचित हों।

मानव अधिकार संरक्षण अधिनियम 1993 के मुताबिक मानव अधिकार का अर्थ- वह अधिकार है जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन, स्वाधीनता, समानता एवं सम्मान से संबधित हो, जिसकी गारंटी आश्वासन भारत के संविधान तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रसंविदाओं में हो तथा जिन्हें भारत के न्यायालय लागू कर सके, भारत के संविधान में मौलिक अधिकारों, जो कि मानव अधिकार है, पर एक भाग समर्पित है।

मानव अधिकारों के प्रति शैक्षिक दायित्व बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को बोध कराया जा सकता है कि वह व्यक्ति है, एक इंसान है जिसे सम्मानजनक, भयमुक्त, जीवन जीने का पूरा अधिकार है। उसे जीवन के हर पायदान पर यह शिक्षा देनी होगी कि वह देश का एक जिम्मेदार नागरिक है जिससे देश की अनेक अपेक्षाएं हैं।

अत: जीवन की शुरूआत में जब बच्चा स्कूल जाने लगे तो उसे अन्य विषय के साथ मानव अधिकारों का ज्ञान भी मिलना चाहिए। उसे यह बताना होगा कि कोई भी विषय मानव अधिकारों से अलग नहीं है। अगर विद्यार्थी भूगोल पढ़ रहा है तो उसे पर्यावरण की रक्षा और इसके साथ ही स्वच्छ वातावरण में जीने के उसके मानव अधिकार का ज्ञान दिलाना होगा। अगर वह इतिहास पढ़ रहा है तो प्रत्येक युग में मानव अधिकारों की क्या स्थिति थी, यह पढ़ाना होगा। उसे जानकारी मिलनी चाहिए कि किस प्रकार देशों में मानव अधिकारों का हनन हुआ था एवं उसकी परिणति हुई। उदाहरणस्वरूप अब्राहम लिंकन ने अमेरिका में क्यों और कैसे दास प्रथा को समाप्त कर दासों को स्वाधीन व्यक्ति की पहचान दी , फ्रांस में गरीब एवं भूखे लोगों ने अपने अधिकारों के लिए राजा के विरुद्ध क्रान्ति की ओर राजतंत्र को हटाया, बीसवीं शताब्दी में रूस में सर्वहारा क्रान्ति ने कैसे राजतंत्र को मिटाया तथा शोषित वर्गों को उनका हक दिलाया। भारत में राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, महात्मा गाँधी तथा अन्य महापुरुषों ने सती प्रथा मिटाने, अस्पृश्यता समाप्त करने एवं शिक्षा को सार्वजनिक करने का बीड़ा उठाया, इत्यादि मानव अधिकारों से जुड़े उदाहरण हैं।

अगर विद्यार्थी विज्ञान पढ़ रहा हो, तो वैज्ञानिक आविष्कारों के लाभदायक एवं हानिकारक प्रयोगों की जानकारी भी मिलनी चाहिए। द्वितीय विश्व युद्ध के अन्त में ऐटम बम से हिरोशिमा एवं नागासाकी के सर्वनाश की जानकारी भी प्राप्त होनी चाहिए। अगर जीव विज्ञान पढ़ रहा हो, तो उक्त विषय के साथ जीवों के प्रति दया उनकी जरूरतें, उनकी उपयोगिता भी सिखाई जाए, जैसे केंचुआ की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि यह कूड़े-कचरे को

खाद बनाता है, चूहों को जहर से नहीं मारना चाहिए क्योंकि पक्षी उन्हें खाकर भी मर जाते है इत्यादि। ये सारी बातें पर्यावरण से जुड़ी हुई है जिनका सुरक्षित होना प्रत्येक व्यक्ति का मानव अधिकार है तथा जिसे सुरक्षित रखना सभी का कर्तव्य है।

शिक्षा का अर्थ मात्र कुछ तथ्यों को विद्यार्थी के सामने परोसना नहीं है। शिक्षा से सर्वांगीण विकास की अपेक्षा है और वह विकास विद्यार्थियों को मानव अधिकारों के प्रति सजग रहने से ही होगा क्योंकि उनका वर्तमान व भविष्य मानव अधिकारों के संरक्षण पर निर्भर है। विद्यार्थियों को सर्वप्रथम यह सीख मिलनी चाहिए कि उन्हे सम्मानजनक जिन्दगी जीने का अधिकार है जिसे शिक्षा का वाणिज्यीकरण अथवा कुछ निर्दयी शिक्षकगण छीन नहीं सकते। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, जब तक करोड़ों मनुष्य भूख और अज्ञानता में जीवन बिता रहे है तब तक मैं, प्रत्येक मनुष्य को जो उनके व्यय से शिक्षित हुआ है और उनकी दशा की ओर ध्यान नहीं देता, देशद्रोही मानता हूँ। कहने का अर्थ हुआ कि लोगो को शिक्षा प्राप्त करते वक्त सामाजिक जिम्मेवारी भी उठानी होगी ताकि मानव अधिकारों की रक्षा हो। देश में जब तक एक भी इंसान भूखा एवं अशिक्षित रहेगा तब तक यह समझा जायेगा कि मानव अधिकारों की रक्षा नही हुई।

स्कूली शिक्षा सें अपेक्षाएं–इन बातों से हम भली भांति समझ सकते हैं कि शिक्षा, विशेषकर स्कूली शिक्षा की अपेक्षाएँ एवं चुनौतियाँ कितनी गंभीर है। आजकल स्कूलों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है, उनमें तकनीकि जानकारी पर ज्यादा एवं विश्लेषण पर कम बल दिया जाता है तथा बोर्ड परीक्षाओं में कैसे ज्यादा से ज्यादा अंक प्राप्त किए जाए, इसकी तैयारी कराई जाती है। प्राइवेट कोचिंग/ ट्यूशन की मानो होड़ लगी हुई है– प्राय: प्रत्येक विद्यार्थी गणित, विज्ञान के अन्य विषयों, यहाँ तक की अंग्रेजी एवं हिन्दी जैसे विषयों में प्राइवेट ट्यूशन प्राप्त करने को मजबूर हो रहे हैं, जिससे साफ जाहिर है कि विद्यार्थियों को स्कूलों में अच्छी एवं सुलभ शिक्षा प्राप्त करने को मानव अधिकार गौण होता जा रहा है। स्कूल रहने के बावजूद, प्राइवेट ट्यूशन के माध्यम सें दोहरी शिक्षा प्राप्त करने का अर्थ है कि अब बच्चे स्कूलों से शिक्षा प्राप्त करने के मौलिक अधिकार की अपेक्षा नही कर सकते।

अत: स्कूली शिक्षा से पहली अपेक्षा है कि छात्रगण स्कूल से ही पूर्ण शिक्षा प्राप्त करे, प्राइवेट ट्यूशन से नहीं, तथा स्कूली शिक्षा एक सुखद अनुभव हो, टीचरों की प्रताड़ना न हो एवं अपमान का कोई स्थान नहीं हो। दूसरी अपेक्षा है कि मात्र उच्च अंक प्राप्त करने की प्रतिस्पर्द्धा नहीं हो– सभी छात्र सही माने में शिक्षित हो, उनका चरित्र निर्माण हो, पाठ्यक्रमोतर कार्यकलापों का अनुभव हो एवं सभी के प्रति सद्व्यवहार का संस्कार हो यानि, स्कूली शिक्षा मानवतावादी, समाजवादी एवं वैज्ञानिक सोच पर आधारित हो।

तीसरी अपेक्षा है कि स्कूली शिक्षा बच्चों में अच्छे नागरिक बनने की नींव डालें। उन्हें अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों से अवगत कराए तथा ज्यादा से ज्यादा ज्ञान प्राप्त करने का कौतूहल बढ़ाएं।

चौथी अपेक्षा है कि स्कूली शिक्षा सत्य ज्ञान एवं भरोसेमन्द जानकारी दे, अच्छाई एवं बुराई को परखने की शिक्षा दे।

पांचवी अपेक्षा है कि स्कूली शिक्षा आत्म निर्भरता सिखाए, देशभक्ति को जगाए तथा सभी के प्रति हेतु रहित दया करने को प्रेरित करे।

यानी कुल मिलाकर स्कूली शिक्षा विद्यार्थियों को अच्छे, जानकार, शिक्षित नागरिक बनाए जिन्हें मानव अधिकारों का पूरा ज्ञान हो और जो इस ज्ञान के सहारे भविष्य में अपना कर्तव्य बखूबी निभा सकें। ऐसा अगर हो तो आगे चलकर किसी की पुलिस हिरासत में अस्वभाविक मृत्यु नहीं होगी, हिरासत में लिए गए किसी कैदी की अमानविक प्रताड़ना नहीं होगी, सशस्त्रबलों के विरुद्ध मानव अधिकारों के हनन का आरोप नहीं लगेगा, सरकारीकर्मियों द्वारा आम जनता को सताया नहीं जायेगा, सभी बच्चे शिक्षा प्राप्त करेंगे, बाल मजदूरी, बन्धुआ मजदूरी एवं बाल विवाह समाप्त होंगे, मानसिक रोगियों का इलाज होगा, वृद्धों की परिवार वालों द्वारा समुचित देखभाल होगी, डायन प्रथा एवं दहेज प्रथा खत्म होगी, पर्यावरण की रक्षा होगी, कोई भूख से नहीं मरेगा, बच्चे एवं माताएँ कुपोषित नहीं होंगे, इत्यादि।

स्कूली शिक्षा से चुनौतियाँ–किन्तु चुनौतियाँ भी अनेक हैं। सर्व शिक्षा अभियान के बावजूद अभी भी शिक्षा क्षेत्र के लिए सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत खर्च भारत सरकार द्वारा नहीं किया जा रहा है जबकि इतना खर्च करने का वादा किया गया था। अत: यह नहीं कहा जा सकता कि गांव के सभी बच्चों को गुणात्मक शिक्षा प्राप्त हो रही है। भारत के संविधान में अब प्रारम्भिक शिक्षा बच्चों का मौलिक अधिकार बन चुका है किन्तु सबसे बड़ी चुनौती है कि इसे कौन लागू करेगा, कैसे लागू करेगा एवं कितने समय में यह लागू होगा जब तक प्रत्येक बच्चे को स्कूली शिक्षा नसीब नहीं होगी, तब तक वह मानव अधिकारों के ज्ञान से बेखबर रहेगा और इतने बड़े देश में जहाँ भारी मात्रा में बच्चे स्कूल नहीं जाते अथवा किसी कारणवश स्कूली शिक्षा पूरी नहीं कर पाते, उन्हें इस मौलिक अधिकार जो मानव अधिकार भी है, को दिलाना एक बहुत बड़ी चुनौती है। राष्ट्र को इस हेतु पूरे तन, मन, धन से जुटना होगा तभी देश के बच्चे प्रारम्भिक शिक्षा तो प्राप्त कर सकेंगे।

दूसरी चुनौती है शिक्षा का व्यवसायीकरण, फलस्वरूप विद्यार्थियों मे भेदभाव। नामजद स्कूलों मे शुल्क भारी मात्रा में चुकाना पड़ता है जिस कारण गरीब बच्चे हमेशा उनसे वंचित हो जाते हैं। नतीजा यह होता है कि आगे चलकर समाज में भेद-भाव बढ़ता जाता है।

तीसरी चुनौती है शिक्षा के नाम पर विषयों एवं किताबों का बोझ जिसके फलस्वरूप विषयवार बहुत कम ज्ञान प्राप्त होना। विद्यार्थियों को मात्र प्रश्नोत्तरों को रटने के सिवाय शायद ही कोई समय या मौका मिलता होगा जिसमें वह स्वयं पहल कर ज्ञान प्राप्त कर सके अथवा ज्ञानवर्धन कर सके। विद्यार्थियों पर हमेशा यह दबाव रहता है कि उन्हें बोर्ड की परीक्षा में अच्छे नम्बर लाने हैं। अन्यथा अच्छे कॉलेजों/संस्थानों में दाखिला नहीं हो सकेगा। ऐसी परिस्थिति में किसी विषय का मानव अधिकार के दृष्टिकोण से समझने या पढ़ने की संभावना क्षीण होती है।

चौथी चुनौती है कि प्राय: मानव अधिकार को एक अलग विषय माना जाता है, अत: उसे स्कूल में पढ़ाने में हिचक होती है कि एक और विषय का बोझ बढ़ेगा। लोग यह नहीं सोचते की प्रारम्भिक शिक्षा में मानव अधिकार के विषय को अन्य विषयों के पाठ्यक्रम में

आसानी से जोड़ा जा सकता है। उदाहरण के तौर, अगर हिन्दी या अंग्रेजी का विषय हो तो उसमें ऐसे लेखकों द्वारा लिखित पाठों को सम्मिलित किया जा सकता है जो मानवीय संवेदनाओं से युक्त हों, क्योंकि बिना मानवीय संवेदनाओं के, मानव अधिकार की बात हो ही नहीं सकती। अगर समाजशास्त्र, राजनीतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र पढ़ाया जा रहा हो तो उसमें मौलिक अधिकारों के साथ-साथ मानव अधिकारों की चर्चा हो क्योंकि यद्यपि सभी मौलिक अधिकार मानव अधिकार है, सभी मानव अधिकार सम्प्रति मौलिक अधिकार नहीं है।

पांचवी चुनौती है मानव अधिकारों की अज्ञानता, विशेषकर शिक्षकों में अवश्य ही यह आश्चर्य का विषय है वैसे तो मैंने कुछ पदाधिकारियों को मानव अधिकार शब्द से चिढ़ते हुए देखा है और बहुतेरे पुलिस पदाधिकारी मानव अधिकार के संरक्षण में विश्वास नहीं रखते। हाँ, जब उनकी सरकारी सुख-सुविधाओं में किसी प्रकार की कमी होती है तब वे अपने अधिकारों की बात करते है। जहां तक शिक्षकों का सवाल है बहुत से शिक्षकों को तो मौलिक अधिकारों की जानकारी तक नहीं है-मानव अधिकार शब्दों को समझाना या इसके बारे में जानकारी रखना तो दूर रहा । जब शिक्षकों यह हाल है, तब बच्चों को मानव अधिकारों के बारे में कौन बतायेगा? बहुत से शिक्षक बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित करते हैं किन्तु यह जानते हुए कि ऐसा करने से बच्चे के मानवाधिकारों का हनन हो रहा है।

छठी चुनौती है स्कूली शिक्षा में आधारभूत सुविधाओं का अभाव-स्कूल भवनों की कमी, पठन-पाठन की सामग्री एवं शिक्षकों के रिक्त पद इत्यादि। जब पेड़ के नीचे चिलचिलाती धूप में शिक्षक एवं छात्र जमीन पर बैठकर पढ़ाने/पढ़ने को मजबूर हो, जब बरसात में टूटी हुई छत के नीचे भीगते हुए एवं बिना बिजली के पढ़ाई करनी हो, जब बहुत दूर पैदल चलकर बच्चे स्कूल में आकर शिक्षकों को अनुपस्थित पाएँ, जब गरीब छात्रों को भूख सताए, तब मानव अधिकार का पाठ पढ़ाना बेमानी होगा। मानवाधिकार का प्रश्न तब उठेगा जब हम इन बच्चों को, इन शिक्षकों को, मानव समझेंगे, मात्र गिनती के लिए इकाई नहीं।

इन सारी बातों सें स्पष्ट है कि स्कूली शिक्षा मानव अधिकारों से सम्बधित ज्ञान अर्जन हेतु अति महत्वपूर्ण है। अगर विभिन्न राज्यों में स्कूलों का संचालन ठीक से नहीं हो रहा हो, तो यह मानना पड़ेगा कि बच्चों के मौलिक एवं मानव अधिकारों का हनन हो रहा है। यह एक दंडनीय अपराध माना जाना चाहिए तथा इस हेतु मात्र अभिभावकों को ही नहीं बल्कि सरकारों को भी दंडित करना चाहिए। भारत सरकार से यह मांग होनी चाहिए कि स्कूलों के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से मानवाधिकार का विषय जोड़ने का कानून बनाए। मानव अधिकार विषय पर व्यापक प्रचार-प्रसार होना चाहिए। इस हेतु इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिन्ट मीडिया का सहारा लेना होगा। प्रत्येक राज्य में मानव अधिकार आयोग का गठन होना चाहिए जिस पर मानवाधिकार विषय के प्रचार-प्रसार का उत्तरदायित्व होगा। प्रत्येक स्कूल-कॉलेज मे मानव अधिकारों के बारे में गोष्ठियाँ एवं चर्चाएँ होनी चाहिए ताकि सभी छात्रों को इन विषय की जानकारी हो।

मानव अधिकार पाश्चात्य देशों की देन नहीं है। भारतीय संस्कृति में मानवता के नाम पर इन सारे अधिकारों के चर्चे मिलेंगे। जरूरत है हम भारतीयों को अपनी भूली हुई संस्कृति को याद करने की, उनकी कुरीतियों को दूर करने की तथा अन्य देशों से अच्छी सोच, विचार एवं व्यवस्था को अपनाने की। शहीद भगत सिंह ने लिखा था, ''यह हम मानते हैं कि विद्यार्थियों का मुख्य काम पढ़ाई करना है, उन्हें अपना पूरा ध्यान उस ओर लगा देना चाहिए लेकिन क्या देश की परिस्थितियों का ज्ञान और उनके सुधार के उपाय सोचने की योग्यता पैदा करना उस शिक्षा में शामिल नहीं? यदि नहीं, तो हम उस शिक्षा को भी निकम्मी समझते है जो सिर्फ क्लर्की करने के लिए ही हासिल हो।''

साथ ही हम कह सकते हैं कि वह शिक्षा अपूर्ण है जिसमें मानवता एवं मानव अधिकारों का ज्ञान सम्मिलित न हो। इनके बगैर विद्यालय सर्टिफिकेट एवं उपाधियां हासिल करने के कारखाने मात्र ही रह जाएँगे।

-उप प्रधानाचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, हनुमानगढ़
मो. 9460267085

परिपूर्ण मनुष्य होने की अपरिमित आकांक्षा को जगाये रखना शिक्षा का असली मकसद है।
-रवीन्द्रनाथ ठाकुर

गालिब जयंती : 27 दिसंबर

गालिब की याद में

भारत में अब से कोई 215 वर्ष पहले 27 दिसम्बर 1797 के दिन गालिब का जन्म हुआ था ऐतिहासिक नगर आगरा में। उनका द्वारा नाम मिर्जा गालिब है। साहित्य लोक में उर्दू अदब में गालिब को 'दबिस्तान-ए-देहली ' के खास कदीनी शायरों में माना जाता है। अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर के दरबारी रहे गालिब ने प्रेम, फलसफा, दर्द, जिन्दगी की सच्चाई को एक बार नए क्लासिक अंदाज में लिखा। उनकी प्रकाशित पुस्तकों में शायरी का अद्भुत दस्तावेज 'दीवान-ए-गालिब' है। 'दीवान-ए-गालिब' की ऊँचाई व गहराई बड़े अदीब (साहित्यकार) और नक्काद (समालोचक) मियां अब्दुर्रहमान बिजनोर से सुनिए। मियां कहते हैं, ''हिन्दुस्तान में दो ही इल्हामी (देववाणी) किताबें हैं। एक वेद और दूसरी दीवान-ए-गालिब।'' इसी बात को और वजनदार बनाते हुए शरद जोशी कहते हैं, '' वेद अगर आसमान से उतर कर धरती पर आया है तो गालिब का दीवान जमीन से उठकर आसमान तक पहुँचा है।''

गालिब को उनके मजाकिया अंदाज के लिए भी याद किया जाता है। एक बार उनसे किसी ने पूछा ,''मियां, रथ मोअन्नस (स्त्रीलिंग) है या मुजक्कर (पुल्लिंग)। वे तपाक से बोले हजरत, ''भैया ! जब रथ में औरतें बैठी हों तो मोअन्नस तथा मर्द बैठे हों तो मुजक्कर समझो।'' ऐसे सैकड़ों हँसी मजाक के किस्से गालिब से जुड़े हैं। गालिब महोदय का इंतकाल 72 वर्ष की अवस्था में 15 फरवरी 1869 के दिन हुआ। गालिब जयन्ती पर उनका शेर प्रस्तुत है-

बनाकर फकीरों का हम भेष गालिब,
तमाशा-ए-अहले करम देखते हैं।

-रमेश व्यास

शैक्षिक दर्शन

शिक्षा और समाज

❒ विद्यानिधि त्रिवेदी

समाज के वर्तमान परिवर्द्धित स्वरूप का कारक शिक्षा को कहा जाना युक्तिसंगत होगा क्योंकि शिक्षा समाज का परिमार्जन करती है, और समाज शिक्षा का निर्धारक है। समाज के मानको, माँगों और आकांक्षाओं के अनुकूल ही शिक्षा के स्वरूप का निर्धारण होता है या यूं कहे कि शिक्षा समाज के स्वरूप का निर्धारण करती है और समाज के स्वरूप का सीधा प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पड़ता है। इस सह सम्बन्ध से यह तथ्य मुखरित होता है कि शिक्षा मनुष्य को समाजानुकूल बनाती है, तो समाज शिक्षा के मानदण्डों से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व की गुणवत्ता का परिमापन करता है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य जीवन जीने की कला सीखता है, अतः शिक्षालय व समाज का पूर्ण समन्वय जरूरी है।

यदि हम विद्यालय को समाज का प्रतिमान कहे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि शिक्षा का मूल उद्देश्य बालक का समाज की अपेक्षानुकूल सर्वांगीण विकास करना होता है। औपचारिक विद्यालयी शिक्षा तो बालक के व्यक्तित्व के सिर्फ एक पहलू का विकास करती है, अर्थात विद्यालय में बालक का शैक्षिक उन्नयन एवं सन्दर्भ परिमार्जन होता है, उसका चहुँमुखी विकास तो सहशैक्षिक प्रवृत्तियों के परिणामस्वरूप ही सम्भव होता है। बालक में सामाजिक संस्कार, विद्यालय की सहशैक्षिक प्रवृत्तियों से ही आरोपित होते हैं। विद्यालय का निर्माण समाज की शैक्षिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए ही किया गया है। अतः समाज से भी यह अपेक्षित है कि वह इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किए गये विद्यालयी प्रयासों में पूर्ण सहयोग करे। विद्यालय व समाज अन्योन्याश्रित हैं, क्योंकि समाज जहाँ विद्यालय की सांस्कृतिक संरचना को प्रभावित करता है वहीं विद्यालय के शैक्षिक व सहशैक्षिक प्रयास समाज में प्रतिबिम्बित होते हैं। बालक के शैक्षिक एवं अन्य उद्देश्य सामाजिक मान्यताओं व आदर्शों आदि से निर्धारित होते हैं। अतः यह विद्यालय का दायित्व है कि वह समाज के स्वरूप के अनुकूल बालक को परिमार्जित करे।

बालक के लिए उसका विद्यालयी जीवन उसके सामुदायिक जीवन की ही इकाई है। अतः शिक्षा से बालक में सामाजिक गुणों का विकास कर उसे समाज में समायोजनशील बनाया जाता है। आधुनिक शैक्षिक दर्शन के अनुसार अतीत का अवबोध वर्तमान रचनात्मक जीवन के लिए केवल भौतिक रूप से सहायक होता है, सृजनात्मकता के लिए सह शैक्षिक प्रवृत्तियों के माध्यम से विद्यालय को सामाजिक प्रवृत्तियों का केन्द्र बनाया जाना आवश्यक है, विद्यालय समय के अतिरिक्त विद्यालय भवन को उद्योग-प्रदर्शनी, चिकित्सा शिविर, साक्षरता अभियान जैसे सामाजिक सृजनात्मक कार्यों हेतु उपयोग में लिया जा सकता है। विद्यालय को समाज के निकट लाने का एक माध्यम शिक्षक-अभिभावक संगोष्ठी भी है, जो माह में एक बार निर्धारित दिवस को आयोजित की जा सकती है, जिससे बालक के सामाजिक उन्नयन व शैक्षिक परिमार्जन की योजना बनाई जा सके एवं बालक की विद्यालयी एवं सामुदायिक समस्याओं का निराकरण किया जा सके। बालक में अपेक्षित उर्ध्वगत्यात्मकता लाने के लिए शिक्षक-अभिभावक संगोष्ठी वरदान स्वरूप है।

समाज के निर्माण में विद्यालय का सकारात्मक सहयोग तभी सम्भव है जब विद्यालय का समाज में समन्वय हो, इस हेतु आवश्यक है कि बालक की शिक्षा को जीवनोपयोगी, समाजोपयोगी और रोजगारोन्मुखी शिक्षा से सन्दर्भित किया जावे व उसे सामाजिक तथ्यों व आदर्शों से अवगत करवाया जाये। विद्यालय में स्वस्थ मनोरंजन कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा सकता है। इससे भी समाज में विद्यालय की सहभागिता में वृद्धि होगी। समाज के प्रबुद्ध गणमान्य लोगों को भी समय-समय पर उद्बोधन हेतु विद्यालय में आमंत्रित किया जा सकता है, जिससे विद्यार्थियों को उत्प्रेरण मिल सके एवं समाज एवं विद्यालय के मध्य अन्तःक्रिया हो सके।

विद्यालय में आयोजित सामुदायिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत विद्यार्थियों द्वारा समाज के निरक्षरों, नशा करने वालों, बीमारों, बाल श्रमिकों आदि का सर्वे करवाया जा सकता है और विभिन्न समाज सेवी संस्थाओं के सहयोग से उनकी समस्याओं के निराकरण के प्रयत्न किए जा सकते हैं।

इससे यही सिद्ध होता है कि व्यक्ति और समाज परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। समाज के बाहर व्यक्ति का कोई मूल्यांकन सम्भव नहीं और व्यक्ति के अभाव में समाज एक हास्यास्पद विचार मात्र है क्योंकि व्यक्ति समाज का ही एक अंग हैं। व्यक्ति व समाज एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, इन दोनों में ठीक वही सम्बन्ध है जो हमारे शरीर और अंगों के बीच में है। जिस प्रकार शरीर के बिना अंग का कोई महत्व नहीं हो सकता उसी प्रकार अंगों के बिना अंगी की कल्पना भी करना बेमानी होगा।

हर व्यक्ति के दो प्रकार के व्यक्तित्व होते हैं एक उसका सामाजिक व्यक्तित्व होता है और दूसरा उसका निजी व्यक्तित्व होता है, किन्तु आज कल सामाजिक व्यक्तित्व पर निजी व्यक्तित्व के हावी होने की विद्रूपता आसानी से देखी जा सकती है। व्यक्ति अपने सामूहिक वजूद को भूला कर आत्मकेन्द्रित हो रहा है। इसी के परिणामस्वरूप सामाजिक विकृतियाँ हमारे सामने हैं। व्यक्ति कितना भी आत्म केन्द्रित क्यों न हो जाए, उसके समाज के व्यक्तित्व की छाप उस पर हमेशा बनी ही रहती है। यही कारण है कि लाखों विदेशियों में भी एक भारतीय को आसानी से पहचाना जा सकता है।

जिस प्रकार एक व्यक्ति कोई भी बुरा कार्य करता है तो उसका प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उसके समाज पर पड़ता है उसी प्रकार समाज की अच्छाई या विद्रूपता से व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

स्वामी रामतीर्थ द्वारा लिखित एक संस्मरण मुझे स्मृत हो आ रहा है। एक बार स्वामी रामतीर्थ किसी कार्य से जापान गये थे, उन दिनों स्वामी जी फलाहार पर ही थे, रेल में यात्रा के दौरान एक स्टेशन पर जब उन्हें ताजा फल नज़र नहीं आए, तो वो बुदबुदाते हुए बोले कि ''शायद जापान में ताजा फल नहीं मिलते हैं'' उनकी यह बात वहाँ खड़े उस जापानी युवक

ने सुन ली जो अपनी पत्नी को रेल में बैठाने आया था। संयोगवश उस जापानी युवक के पास एक ताजा फलों की टोकरी थी, जिसे वह अपनी पत्नी को देने के लिए लाया था। जब उस जापानी युवक ने स्वामी जी की बात सुनी तो वह तुरन्त स्वामी जी के पास आ कर उन्हें फलों की टोकरी देते हुए बोला ''महोदय! शायद, आपको ताजा फलों की आवश्यकता है'' स्वामी जी ने सोचा कि यह कोई फल विक्रेता है, अतः स्वामी जी बोले इन फलों की क्या कीमत है? वह युवक बोला ''आप अपने देश में जाकर किसी को यह मत कहना कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते, मैं इन फलों की यही कीमत चाहता हूँ।'' कदाचित इसी राष्ट्रीय भाव ने जापान को द्वितीय विश्वयुद्ध की त्रासदी के बाद शीघ्र ही यथास्थिति में ला खड़ा किया था।

प्रत्येक युग और प्रत्येक राष्ट्र में व्यक्तियों की भावना ही राष्ट्र की उत्कृष्टता की कसौटी रही है। मनुष्य एक विशेष सामाजिक परिवेश में पैदा होता है। कुछ संस्कार उसे अपने परिवेश से ही उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त होते हैं, और कुछ उसके अभिवृत्तीय अनुभवों से तैयार होते है। व्यक्ति के कुछ निजी स्वार्थ होते हैं तो कुछ उसके समष्टिगत दायित्व भी होते हैं। दोनों स्थितियों में संघर्ष की न्यूनता का मापदण्ड ही समाज की उत्कृष्टता का मापदण्ड है।

मनुष्य की महानता उसके दायित्वों की विशालता का ही प्रतिबिम्ब कही जा सकती है क्योंकि दायित्व बोध से आच्छादित व्यक्तित्व अपने निजित्व को समष्टि में विगलित कर देता है। इसीलिए कहा जाता है कि विशेष दर्शित सामाजिक कर्म व्यक्ति का समष्टि को मुखरित आत्मविज्ञापन से अधिक कुछ नहीं माना जा सकता। यह आत्म विज्ञापन प्रस्तोता की मानसिक और भौतिक स्थिति के अनुसार ही अपना प्रभाव छोड़ता है।

मनुष्य के जीवन का जितना अंश नीति, और शिक्षा से आवृत रहता है उतना ही समाज से शासित और संयमित रहता है। अतः एक सामाजिक प्राणी का अनवरत शिक्षा के सम्पर्क में बने रहना अपरिहार्य कहा जा सकता है।

-प्रधानाचार्य, एन.के.प.उ.मा., विद्यालय
आर्य नगर, मुरलीपुरा, जयपुर

इस माह का गीत

बोलो जय-जय भारती

❒ बल्लभेश दिवाकर

एक हाथ में दीपक लेकर एक हाथ में आरती
अन्तर में ले प्यार विश्व का बोलो जय जय भारती

कण-कण से आवाज आ रही हमें चाहिए एकता
नहीं चाहिए मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर के देवता
धिक्कारो उस ताकत को जो नहीं किसी को तारती
अन्तर में ले प्यार....

कहदो हम गंगा के बेटे और जमुना के लाल हैं
रक्षा का हथियार हमारा बाँसुरिया का तान है
हम उस माँ के लाल हैं जो जग पर तन मन धन वारती
अन्तर में ले प्यार....

हमने तो श्रृंगार किया है अपना नित बलिदानों से
गौरव पनपा नहीं हमारा महलों से मयखानों से
हम उस धरती के बेटे जो गिरते प्राण उबारती
अन्तर में ले प्यार....

हमने मानव की सांसों में बक्शा शाश्वत प्यार है
हमें विश्व को कुछ कहने का इसीलिए अधिकार है
हम उस वाणी के स्वर हैं जो पावन मंत्र उच्चारण
अन्तर में ले प्यार....

विश्व एकता दिवस

उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्

❒ महेश चन्द्र श्रीमाली

यह कहा गया है कि एकता में शक्ति निहित है। हमारे पूर्वजों ने एवं समाज को दिशा निर्देशन करने वाले महान् व्यक्तियों ने सदैव सभी जाति, वर्गों, राष्ट्रों को एकता का सूत्र प्रदान करते हुए विश्व शान्ति के लिए अहिंसा, संयम, शान्ति का सन्देश दिया। इसी एकता के सूत्र के चमत्कारी प्रभाव व परिणाम सामने नजर आए हैं। अन्याय, अत्याचार की लड़ाई हो या फिर स्वतन्त्रता संग्राम की बात ही क्यों न हो, एकता के बल पर सार्थक परिणाम हासिल हुए है। तानाशाही शासकों को एकता के आगे घुटने टेकने पड़े है, और वहां सत्ता का परिवर्तन हुआ है।

अतः यह तो मानना पड़ेगा एकता के बिना वर्तमान युग में, घर परिवार, समाज, देश व विश्व तेजी से विकास नहीं कर सकता है। भारत जैसा विशाल देश, विभिन्न भाषाओं, धर्म, क्षैत्र से संबद्ध अलग-अलग वेशभूषा, खानपान रहते हमारे पुरखों द्वारा ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की परिकल्पना वर्तमान युग के परिपेक्ष्य में भी कसौटी पर खरी एवं सार्थक नजर आती है। आज छोटे राष्ट्रों को अपने विकास, अखण्डता, संप्रभुता, अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए शक्ति संतुलन की दृष्टि से शक्तिशाली, सम्पन्न, समद्ध, विकासशील राष्ट्रों से हाथ मिलाना पड़ता है।

वर्तमान युग के अनुरूप अपने आपको सक्षम नहीं करने पर अस्तित्व को खतरा हो जाता है। विद्वानों ने भी पुरातन काल से इस बात को कह कर प्रमाणित व पुष्ट किया है। एकता का आधार आपसी सोहार्द एवं आपसी विश्वास कायम करना है। आर्थिक असमानता आज के भौतिकवादी युग में काफी हद तक इन उद्धेश्यों को पूरा नहीं करने देती है।

आपसी सहयोग एवं समग्र विकास की सोच रखना आवश्यक है न कि आपसी वैमनस्य, लूटपाट, भ्रष्टाचार, शोषण, अत्याचार की प्रवृति का बढ़ावा देने वाले कार्यों को प्रोत्साहन मिले। सकल समाज चारित्रिक गुणों तथा सिद्धान्तपरक, मूल्य परक मानवता पर आधारित, रीति नीति से गति विधियां संचालित करे तो भेदभाव व दूरियां समाप्त हो सकती है। विश्व एकता केवल नारों तक सीमित नहीं रहे, उसके लिए सामाजिक समरसता, मानवता, पारदर्शिता, अहिंसा, शान्ति, सदभाव का होना आवश्यक है, किन्तु इसके बदले में आज हथियारों की होड़, हवाई युद्ध, परमाणु विस्फोट व अन्य जनहानि व जीवहानि वाले हथियारों का जखीरा इकट्ठा करने की होड़ बड़ी तेजी से बढ़ रही है। इसके कारण छोटे देशों को व शान्ति व अहिंसा चाहने वाले देशों को भी विवश होकर इस दौड़ में शरीक होना पड़ता है जो दुःखद ही कहा जा सकता है।

अब हम बात करे, उद्योगों, प्रतिष्ठानों व व्यापारिक उपक्रमों के प्रबन्धकों एवं श्रमिकों, कार्मिकों की तो दोनों के बीच समझने, समझाने की सामर्थ्य एवं उचित तालमेल से कार्य हो या यूं कहें कि न्यायपूर्ण समानता, सहभागीदारी, सहअस्तित्व, मातृत्व के आधार पर पूरा प्रतिष्ठान एकता के साथ निष्ठा से कार्य करे, तो उत्पादन में वृद्धि से सकल लाभ होगा, वही दूसरा पहलू पक्षपात, भ्रष्टाचार, अन्याय हो तो श्रमिक संगठनों की एकता भी रंग लाएगी और उनकी मांगे एकता के बल पर ही पूरी होगी परन्तु उचित तालमेल, निराकरण में विलम्ब के फलस्वरूप इसी एकता के परिणामों से प्रतिष्ठानों को तोड़फोड़, नुकसान, उत्पादन में कमी का सामना करना पड़ता है।

यंत्रों एवं कलकारखानों से मानव श्रम में कमी अई है। किन्तु समय में बचत हुई है। बेरोजगारी अत्यधिक बढ़ी है। सारा विश्व बेरोजगारी, खाद्य समस्या से जूंझ रहा है। ऐसे में भूखे पेट वालों को एकता का पाठ कबूल करना मुश्किल होता है। अतः सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, असमानता के कारण एकता के उद्धेश्य में उतना लाभ नहीं मिल पा रहा है।

एकता के बहुत फायदे हैं। अतः विश्व एकता दिवस का वर्तमान परिपेक्ष्य में काफी महत्व है। प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, बाढ़, तूफान, भयंकर महामारी के साथ आर्थिक, शैक्षणिक, तकनीकी सांस्कृतिक, कृषि, खेल, वैज्ञानिक आविष्कारों के लिए एकता वरदान है।

विश्व के समस्त राष्ट्रों को एक सूत्र में पिरोने के लिए उपयुक्त सार्थक परिणामों को हासिल करने के लिए एक देशीय समस्या एवं बहुदेशीय समस्याओं के निराकरण के लिए भाव जागृत हेतु प्रति वर्ष इसका आयोजन एक दिसम्बर को किया जाता है।

इसका आयोजन संयुक्त राष्ट्रसंघ ने किया ताकि त्याग की भावना, आपसी विश्वास, मातृत्वता, संकीर्णता के स्थान पर उदारता के साथ कार्य करने की ओर प्रवृत हो सके। इसकी अंधकार की पृष्ठभूमि को टालने, परस्पर सहयोग, शान्ति पूर्वक हल निकालने की भावना जागृत करने, जन चेतना पैदा करने हेतु विश्व एकता दिवस का आयोजन किया जाता है।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में विश्व में आविष्कारों की धूम मच रही है, नई नई खोजे एवं शोध हो रहे हैं। विभिन्न क्षेत्रों में, सभ्यता के विकास, आर्थिक उन्नति, सामाजिक महत्व, व्यापार, रक्षा, कृषि पर आए दिन होने वाले कार्यों के फलस्वरूप व्यापक क्षेत्र एवं एकता परमावश्यक है। संचार क्रान्ति ने विश्व को बहुत छोटा बना दिया है। सारा विश्व गांव सा लगने लगा है। हर पल घटने वाली घटना तत्काल सर्वत्र पहुंच जाती है। अतः विश्व एकता प्रासंगिक प्रतीत होती है।

हम सकारात्मक वातावरण बनाने में कभी पीछे नहीं रहे है। हमारे देश का भाईचारा, सहिष्णुता, अहिंसा, करुणा, दया एवं दूसरों की सहायता करना परम ध्येय है। विश्व एकता के सन्दर्भ में सम्पूर्ण मानव जाति के विकास एवं खुशहाली की कामना करते है।

आइए, हम विश्व एकता दिवस के सुनहरे क्षणों में परोपकार, सहायता, निःस्वार्थभाव, न्यायपूर्ण समानता, सहभागीदारी, सहअस्तित्व को अपने चरित्र में समावेश करते हुए, स्नेहमय सहज, सरल व बिना आडम्बर के सत्य का आश्रय लेकर आर्दश चरित्र के साथ अपने मित्रों, पड़ोसियों एवं सर्म्पक में आने वाले प्रत्येक का सहयोग करते हुए एक बने-नेक बने की कहावत चरितार्थ कर विद्यालय, गुरुजन को गौरवान्वित करे, साथ ही सुखी, समृद्ध खुशहाल वातावरण बनाने में सहायक बने। विश्व एकता का महत्वपूर्ण पहलू यह भी याद रखे कि हम परस्पर संवाद, आदर भाव एवं व्यापार से एकता कायम करने में कामयाब हो सकते हैं।

-3-थ-8, हिरण मगरी, सेक्टर-5,
प्रभात नगर, उदयपुर (राज.)-313002
मो. 9414851013

नैतिक शिक्षा

शिक्षा में मानव मूल्य

❒ शशिकान्त द्विवेदी

श्री मद्भगवद्गीता में उल्लेख है-''न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।'' अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसन्देह कुछ भी नहीं है। गाँधीजी ने शिक्षा के लक्ष्य को इंगित करते हुए कहा था कि ''शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थी को आदर्श नागरिक, आदर्श देशभक्त और परिवार तथा राष्ट्र के लिए रत्न बनाना है। '' शिक्षा का सबसे बड़ा मकसद बालकों का स्वविवेक जगाना है। शिक्षा जीवन के विकास की प्रणाली है। शिक्षा का अर्थ सिर्फ कैरियर बनाना नहीं है। आज का बालक संस्कारित हो यही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। आज हमारे देश में प्रचलित शिक्षा के संस्कारशील न होने का मुख्य कारण उसमें भारतीयता का अभाव है। आज की शिक्षा में नैतिकता, सदाचार, विनम्रता, आज्ञापालन, भक्ति, श्रद्धा एवं सज्जनता आदि सभी ग्रहणीय शिक्षागीय गुणों का ह्रास हो गया है। संस्कार शिक्षा वही है जिसमें समाज और राष्ट्र के कल्याण की चिन्ता के तत्व समाविष्ट हों।

भारत में सदियों से ऐसी शिक्षा का प्रचलन था जो मानव विकास को सार्थक करती थी। महाभारत में कहा गया है-''नास्ति विद्या समं चक्षु!'' विद्या के समान कोई नेत्र नहीं। शिक्षा तीसरा नेत्र है। सही शिक्षा प्राप्त मानव प्रज्ञावान बन जाता है। शिक्षा सभ्य एवं विकसित समाज का निर्माण करती है। हमने शिक्षा को आजीविका का साधन बनाने पर तो जोर दिया है परन्तु शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य से भटक गए हैं। शिक्षा को समाज का दर्पण कहा गया है। वस्तुतः शिक्षा किसी राष्ट्र का मेरुदण्ड होती है। शिक्षा राष्ट्र रूपी शरीर का हृदय भी है। 'मैकाले' की शिक्षा प्रणाली से संस्कारहीन पीढी का निर्माण हो रहा है। ये दिखते तो भारतीय हैं लेकिन मस्तिष्क से अंग्रेज ही हैं। युवा पीढी में राष्ट्रभक्ति के भाव लुप्त होते जा रहे हैं।

'विद्या ददाति विनयम्' अर्थात् विद्या विनयशीलता प्रदान करती है। विनम्रता, संवेदनशीलता, सच्चाई, सेवा, समन्वय, सहयोग जैसे गुणों पर खड़ा होने वाला इंसान, समाज व राष्ट्र अडिग होता है। शिक्षा का लक्ष्य सम्पूर्ण मानव का निर्माण है। वह शिक्षा जिसमें नैतिक मूल्यों पर बल नहीं दिया जाता है वह दिशाविहीन तथा खोखली है। शिक्षा जीवन निर्माण की प्रयोगशाला है, जहाँ सच्चे, सभ्य और चरित्रवान नागरिकों को ढाला जाता है। आज हमारा समाज जिस कगार पर खड़ा है, इससे लगता है कि हम अपने मानवीय मूल्यों को भूलते जा रहे हैं। भारतीय संस्कृति ज्ञान की अपेक्षा आचरण और व्यवहार को अधिक महत्व प्रदान करती है। ज्ञान के लिए ज्ञान निरर्थक है। व्यर्थ है। ज्ञान को जीवन में उतारना महत्वपूर्ण है। शिक्षा व्यवहार और आचरण में भी आनी चाहिए।

यद्यपि हमने वर्षों की गुलामी के पश्चात् राजनैतिक स्वतन्त्रता तो प्राप्त कर ली है परन्तु हमारी मानसिक दासता अभी भी 'मैकाले' की उस शिक्षा नीति के अन्तर्गत कायम है। शिक्षा का उद्देश्य पुस्तकीय ज्ञान देने के साथ जीवन मूल्यों की समझ देना भी है। वस्तुतः मूल्य आधारित शिक्षा न केवल अच्छा इन्सान ही बनाती है बल्कि आदर्श समाज और देश निर्माण भी उसी से होता है। चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा की भूमिका अहम होती है। उज्ज्वल चरित्र, श्रेष्ठ चिन्तन एवं शालीन व्यवहार की धुरी है। शिक्षा, जिससे जीवन जीवंत होता है। आधुनिक समाज की सबसे बड़ी समस्या है कि शिक्षा विद्याविहीन हो गई है, अर्थात् शिक्षा का प्राण कहे जाने वाले नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। मूल्यविहीन शिक्षा का विद्रूप चेहरा बड़ा ही भयावह होता है क्योंकि ऐसी शिक्षा में दिशा का अभाव होता है, उच्चादर्श की कमी होती है और दिशा व लक्ष्य के अभाव में शिक्षा विकास नहीं, विनाश की पर्याय बनती है।

प्राचीन शिक्षा पद्धति का मूलमन्त्र ज्ञानोपार्जन के साथ मानवीय मूल्यों की स्थापना था। पहले नैतिक मूल्यों पर जोर दिया जाता था। इसमें जीवन का कोई भी पहलू अछूता नहीं रहता था। इसमें विचारों के साथ भावनाओं का समुचित समावेश था। इसी कारण उपनिषद् के मन्त्र 'सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ' का उद्घोष किया जा सका। इसी शिक्षा ने महर्षि दधीचि को महान त्यागी बनाया। यही पुनीत शिक्षा थी जिसने पुराण पुरुष महाराजा हरिशचन्द्र को सत्य का पुरोधा बनाया, इसी शिक्षा ने आज के समाज में महात्मा गाँधी को सत्य एवं अहिंसा का पुजारी बनाया। इसी शिक्षा ने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में अगणित शहीदों को जन्म दिया जिनकी शहादत से भारत भूमि को बन्धन से मुक्त किया जा सका।

आज की शिक्षा जानकारी, ज्ञान और कौशल तो प्रदान कर सकती है पर नैतिक एवं आचरण मूल्यों का विकास नहीं। शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तिव का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा में नैतिक मूल्यों का बोध दिनोंदिन कम होता जा रहा है। इसी के अभाव में देश में चारों ओर अराजकता, भ्रष्टाचार और हिंसा का वातावरण बना हुआ है। मूल्यपरक शिक्षा से हम बालकों में सहयोग, सहानुभूति, परोपकार, भातृत्व की भावना, कर्तव्य परायणता, स्वाभिमान, श्रम की महत्ता, न्याय, आत्म विश्वास, आत्मनियन्त्रण, सेवाभाव तथा ईमानदारी की भावना विकसित कर सकते हैं।

विगत कुछ वर्षों से शिक्षा के स्तर में काफी गिरावट आई है। जहाँ एक ओर सरकार शिक्षा के स्तर को उन्नत करने के लिए विद्यार्थी हित में कई योजनाएँ चला रही है। आज हम केवल होनहार विद्यार्थियों को लेपटॉप, टेबलेट और स्कूटी देने मात्र से शिक्षा के स्तर को उन्नत नहीं कर सकते। काफी हद तक पोषाहार व्यवस्था को भी शिक्षा स्तर में कमी का कारण माना जा सकता है। कारण कि एक शिक्षक का आधे से अधिक समय तो पोषाहार व्यवस्था को संभालने में नष्ट हो जाता है। पोषाहार के स्थान पर विद्यार्थियों को नकद आर्थिक सहायता भी प्रदान की जा सकती है।

इस समस्या के समाधान में शिक्षाविदों का कहना है कि पूरे पाठ्यक्रम का निर्माण कुछ इस प्रकार से करना चाहिए कि सभी विषय हमारे से

सम्बन्धित हों और ये हमारे दैनिक जीवन को कुछ लाभ व दिशा प्रदान कर सकें। पाठ्यक्रम में 'जीवन जीने की कला' का समावेश किया जाना चाहिए। ऐसी शिक्षा ही प्राचीन काल के समान पुनः महापुरुषों को जन्म दे सकती है और समाज की विसंगतियों को दूर कर सकती है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में भारत का गौरवशाली इतिहास विलुप्त होता जा रहा है। ज्ञान मनुष्य को संस्कारबद्ध कर डालता है। ऐसा ज्ञान जिसे सिर्फ पाने के लिए पाया जाता है, जीने के लिए नहीं, हमारी सोच को कुंठित करता है। शिक्षा का अंतिम ध्येय चरित्र निर्माण होना चाहिए न कि ज्ञान प्राप्त करना मात्र। शिक्षा चरित्र निर्माण का महत्वपूर्ण वाहक है।

शिक्षा वर्तमान तथा भविष्य के निर्माण का अनुपम साधन है इसलिए अधिकांश लोग आजकल शिक्षा में गुणात्मक सुधार करने की आवश्यकता महसूस करते हैं। शिक्षा को येन-केन प्रकारेण अर्थोपार्जन का साधन बनान भी उचित नहीं है। शिक्षा कभी अनैतिकता की ओर नहीं ले जा सकती। वह तो व्यक्ति को संवेदनशील बनाती है। महान दार्शनिक एवं चिंतक 'प्लेटो' के अनुसार शिक्षा नए समाज के निर्माण का श्रेष्ठ साधन है।

वर्तमान शिक्षा का दोष है कि वह सैद्धान्तिक पक्ष पर अधिक बल देती है। शिक्षा को संस्कारशील बनाने के लिए हमें शिक्षा के ब्रिटिश कालीन ढाँचे को उखाड़ फेंकना होगा एवं उसे भारतीय स्वरूप प्रदान करना होगा। आध्यात्मिकता भारतीयता की सर्वोपरि विशेषता है। आज के भौतिकवादी युग में देश में अनैतिकता फैली हुई है। वह धर्म या अध्यात्मकी अवहेलना के कारण ही है। प्राचीन शिक्षा पद्धति मानव मूल्यों के प्रति निष्ठा जाग्रत करने एवं उसे सँवारने में अत्यन्त सक्षम थी। वर्तमान शिक्षा पद्धति में चरित्र निर्माण की ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया है। आज का विद्यार्थी पढ़ना-लिखना तो जानता है, परन्तु परिवार व समाज में कैसे ''रहना'' क्या ''कहना'' और ''करना'' है वह नहीं जानता। वह पढ़ता अधिक है ''गुनता'' बहुत कम है। वर्तमान शिक्षा वस्तुतः जीवन जगत से तादात्मय नहीं कर पायी है। उपभोक्तावाद की संस्कृति के पूर्ण प्रभाव से हमारी शिक्षा का स्वरूप ही बदल गया है। इसी कारण हमारी शिक्षा का लक्ष्य 'उदर भरहिं सोई धर्म सिखावहीं' तक सीमित हो गया है। मन जब लक्ष्मी का भक्त हो जाए, पूजा करने लगे तो सरस्वती की आराधना कौन करे? पूजा की तुलना में साधना बहुत कठिन है।

शिक्षा को संस्कारशील बनाने का मुख्य दायित्व विद्यालयों को ही ग्रहण करना होगा। इस महान कार्य में अध्यापकों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। अध्यापक केवल अपने अध्यापन द्वारा ही नहीं, अपितु उनके व्यक्तित्व एवं आचरण द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षित और प्रभावित करते हैं। उपदेश की अपेक्षा आचरण और व्यवहार प्रभावित करते हैं। शिक्षा में गुणात्मकता की बात सोचते वक्त यह स्वीकारना होगा कि शैक्षिक संरचना की बुनियाद शिक्षक हैं। सही राह दिखाता है। शिक्षक अब नए परिवेश में मात्र वृत्तिजीवी बनकर रह गया है। शिक्षा जीवन के विकास की प्रणाली है। आज का बालक संस्कारित हो, इसमें शिक्षक, अपना महत्वपूर्ण योग प्रदान कर सकता है। **आचार्य रजनीश अपनी 'शिक्षा में क्रान्ति' नामक पुस्तक में कहते हैं-''छात्रों को विचार मत दो, विचार करना सिखाओ। शिक्षक चित्र बनाने की कला सिखाएगा, चित्र नहीं। आचार्य कल्पना शक्ति विकसित करेगा, कल्पना नहीं देगा।**

तेजी से घटते संस्कारों के कारण आज हिंसा, अपराध, अश्लीलता, बेईमानी आदि दुर्गुण ही शिष्टाचार का स्थान ले रहे हैं और आदर्श विचारों व सद गुणों का लगातार पतन होता जा रहा है, जबकि सद्गुणों से ही मनुष्य महान होता है, ऊँचे आसन पर बैठने से नहीं। महल के ऊँचे शिखर पर बैठने से कौआ गरूड़ नहीं हो जाता है। सद्गुण ही अच्छे। चरित्र का आधार है। हमारे विद्यालयों को मात्र पुस्तकीय ज्ञान पर आश्रित कर देना उपयुक्त नहीं बल्कि वे समझें कि मानव जीवन का सार क्या है, समाज की उनसे क्या अपेक्षाएं हैं?

बालक तीन निकायों से सीखता है- परिवार, विद्यालय एवं समाज। आज के भौतिकवादी युग में अर्थ ने प्रधानता ग्रहण कर ली है। अतः इन तीनों समूहों का वातावरण अतिलोभ के कारण, दूषित हो चुका है। सामान्यतः उत्कृष्ट शिक्षा के घटक हैं- एक अच्छा विद्यालय, अर्थात उत्तम आकर्षक, स्वस्थ सुन्दर परिवेशयुक्त पर्याप्त भवन जो सभी सहायक सामग्री एवं उपकरणों से सुसज्जित हो, जिसका पुस्तकालय-वाचनालय, खेल का मैदान एवं अन्य सामान्य सुख-सुविधाएं सभी आदर्श हों। आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जो हमारे अन्दर जीवन की समझ पैदा करे, जो विचारों में श्रेष्ठता व भावना में उत्कृष्टता लाए। जीविकोपार्जन की जानकारी प्रदान करने वाली विद्या शिक्षा व जीवन में समझदारी पैदा करने वाली विद्या कहलाती है। आज शिक्षा और विद्या दोनों की आवश्यकता है। दोनों में समन्वय से ही समग्रता पैदा होती है। शिक्षा जीवन व्यवहार सिखाती है तथा जीवन संघर्ष के लिए तैयार करती है तभी तो शिक्षा को इतना महत्व दिया जाता है।

आज का बालक संस्कारित हो, इसमें शिक्षक अपना महत्त्वपूर्ण योग प्रदान कर सकता है। प्राचीन भारत में उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षक, शिक्षार्थी व समाज तीनों ही प्रयत्नशील होते थे। यह शिक्षा आदर्शवादी रही है। इसमें शिक्षक का स्थान अत्यन्त ऊँचा माना जाता था। अतः शिक्षक समुदाय से मेरी यही वान्छा है कि सत्साहित्य का अध्ययन कर नैतिक पक्ष को प्रबल करें। इसके लिए सर्वप्रथम शिक्षक को इन तथ्यों को अपने जीवन में उतारना होगा। शिक्षक के आचरण का अनुसरण करके ही बालक सत्य एवं न्याय जैसे मूल्यों को, जो कि सभी धर्मों का आधार है, सीख सकते हैं। हमें आशा है कि परिस्थितियों में गुणात्मक सुधार लाने हेतु हमारे 'भाग्य विधाता' शिक्षक अपनी पूर्ण अस्मिता के साथ अपने गुरुत्व को धारण करके नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के विकास एवं दृढ़ीकरण में अपना अमूल्य योगदान अवश्य देंगे क्योंकि स्वार्थ, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, हिंसा, अपराध, आतंक, भय जैसी समस्याओं से समाज की आशाभरी दृष्टि संस्कारित शिक्षा देने वाले विद्यालयों पर ही है।

मैं शिक्षकों के प्रति श्रद्धावान हूँ। नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास तो गुरुजन ही कर सकते हैं। शिक्षकों से प्रार्थना है कि बच्चे का सर्वतोमुखी विकास कर आदर्श मानव व राष्ट्र के निर्माण में श्रेष्ठतम बनें। इस पंक्ति को चरितार्थ करने में सहभागी बनेंगे-

''लाओ तुम्हारे लाल को इन्सान बना दूं।
दुनिया उसे पूजे इतना महान बना दूं।।''

-पूर्व प्राध्यापक (हिन्दी)
फोरेस्ट चौकी के पास, लोहारिया (बांसवाड़ा)
मो. 9460116012

पर्यावरण प्रार्थना

देश की माटी, देश का जल
हवा देश की, देश के फल
सरस बनें प्रभु, सरस बनें।

देश के घर और देश के घाट
देश के वन और देश के बाट
सरल बनें प्रभु, सरल बने।

देश के तन और देश के मन
देश के घर के भाई बहन
विमल बनें प्रभु, विमल बनें।

देश की इच्छा, देश की आशा
काम देश के, देश की भाषा
एक बनें प्रभु, एक बनें।

देश की माटी, देश का जल
हवा देश की, देश के फल
सरस बनें प्रभु, सरस बनें।

–रवीन्द्रनाथ टैगोर

हिन्दी रूपान्तर–**भवानी प्रसाद मिश्र**

रवीन्द्रनाथ टैगोर

रवीन्द्र को नोबल पुरस्कार का शताब्दी वर्ष

वर्ष 2013 रवीन्द्रनाथ टैगोर को नोबल पुरस्कार मिलने का शताब्दी वर्ष है। ठीक एक सौ वर्ष पूर्व 13 नवम्बर 1913 के दिन उन्हें नोबल पुरस्कार से नवाजा गया था। रवीन्द्र बाबू के 150 वें जन्म दिन के अवसर पर शिविरा के रवीन्द्र विशेषांक से हुए श्री गणेश के पश्चात हम निरन्तर रवीन्द्र-दर्शन पर पठनीय व संग्रहणीय सामग्री शिविरा में देते रहे हैं। नवम्बर 13 अंक में "शिक्षकत्व शिष्य के प्रति समर्पण में है" और यहाँ टैगोर के निबन्ध "सभ्यता और प्रगति" से चुने हुए अंश प्रस्तुत कर रहे हैं जो बालक एवं बालकपन से सम्बन्धित हैं। इसे बाल दिवस के सन्दर्भ में पढ़े जाने का निवेदन है और हाँ आपके आशीर्वाद की समीक्षा टिप्पणी के रूप में प्रतीक्षा रहेगी। साथ ही जयपुर के शिक्षाविद् श्री पी.डी. सिंह जी के प्रति भी आभार, जिनकी तत्परता व शिविरा पर स्नेह के कारण हमें रवीन्द्र बाबू के बारे में विविध उपयोगी सामग्री समय-समय पर मिलती रही।

-वरिष्ठ सम्पादक

.....जब मैं बच्चा था तो छोटी-छोटी चीजों से अपने खिलौने बनाने और अपनी कल्पना में नए-नए खेल ईजाद करने की मुझे पूरी आजादी थी। मेरी खुशी में मेरे साथियों का पूरा हिस्सा होता था,बल्कि मेरे खेलों का पूरा मजा उनके साथ खेलने पर निर्भर करता था। एक दिन हमारे बचपन के इस स्वर्ग में व्यस्कों की बाजार-प्रधान दुनिया से एक प्रलोभन ने प्रवेश किया। एक अंग्रेज दुकान से खरीदा गया खिलौना हमारे एक साथी को दिया गया। वह कमाल का खिलौना था बड़ा और मानो सजीव। हमारे साथी को उस खिलौने पर घमण्ड हो गया और अब उसका ध्यान हमारे खेलों में इतना नहीं लगता था, वह उस कीमती चीज को बहुत ध्यानसे हमारी पहुँच से दूर रखता था, इस खास वस्तु पर इठलाता हुआ। वह अपने साथियों से खुद को श्रेष्ठ समझता था क्योंकि उनके खिलौने सस्ते थे। मैं निश्चित कह सकता हूँ कि अगर वह इतिहास की आधुनिक भाषा का प्रयोग कर सकता तो वह यही कहता कि वह उस हास्यापद रूप से श्रेष्ठ खिलौने का स्वामी होने की हद तक हमसे अधिक सभ्य था।

अपनी उत्तेजना में वह एक चीज भूल गया-वह तथ्य जो उस वक्त उसे बहुत मामूली लगा था कि इस प्रलोभन में एक ऐसी चीज खो गई जो उसके खिलौने से कहीं श्रेष्ठ थी, एक श्रेष्ठ और पूर्ण बच्चा। उस खिलौने से महज उसका धन व्यक्त होता था, बच्चे की रचनात्मक ऊर्जा नहीं, न ही उसके खेल में बच्चे का आनंद व्यक्त था और न ही उसके खेल की दुनिया में साथियों को खुला निमंत्रण।

नारी शिक्षा

बालिका शिक्षा के सरोकार

❑ साँवलाराम नामा

शिक्षा सतत शाश्वत चलती प्रक्रिया है जो निरक्षर को शिक्षित करती है। असभ्य मानव को संस्कारों की शिक्षा ही सभ्य व संस्कारित करती है। इस प्रक्रिया में बालक-बालिका, महिला-पुरुष सभी को शिक्षा नियमानुसार ग्रहण करना आज के परिप्रेक्ष्य में ग्रहण करना आवश्यक है। आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। इससे घर, परिवार, समाज की सोच में बदलाव आता है और सामाजिक परिवेश को नवीन आयाम मिलते हैं। परन्तु देखा जाता है कि हम जिस समाज को शैक्षिक स्तर पर लाने की कोशिश करते हुए उसे विशेष गरिमा प्रदान करना चाहते हैं, उसमें लिंग संतुलन नहीं के तुल्य है। इसके कारण अनेकानेक हो सकते हैं, परन्तु एक बड़ा कारण यह है कि हम समाज के स्तर को हर क्षेत्र में ऊँचा उठाने के लिए लड़कियों को उस संख्या में स्कूल भेजना पसंद नहीं करते, जितनी कि आशा, अपेक्षा की जाती है। यह मेरा प्राइमरी से हायर सैकण्ड्री तक का अनुभव है। ग्रामीण का है तथापि शिक्षित भद्र एवं सरकारी सेवा के लोग अपनी रुचि अब 80 प्रतिशत से अधिक छात्राओं को विद्यालय में भेजते हैं पर पच्चीस साल पूर्व में नहीं। शिक्षा की अनिवार्यता और केन्द्रीय सरकार द्वारा लड़कियां को निःशुल्क शिक्षा, मिड-डे-मील छात्रवृत्तियाँ, दूरस्थ शिक्षा, साइकिल आदि ने लड़कियों की संख्या का शहर, कस्बा व ग्रामीण क्षेत्रों में इजाफा हुआ है। स्कूलों की क्रमोन्नति कारगर सिद्ध हुई है। केन्द्रीय, राज्य सरकार की ओर विभिन्न छात्रवृत्तियों से काफी बालिकाओं की शाला में वृद्धि होगी तथापि आज भी ग्रामीण अंचल, वनवासी, पहाड़ी क्षेत्रों में शिक्षा का ग्राफ काफी नीचे स्तर का है और वहीं इसकी जरूरत भी ज्यादा है। लेकिन दुःख इस बात का है कि समाज के दकियानुसी मां-बाप जो अनपढ़ हैं वो लड़कियों को पढ़ाने, आगे बढ़ाने में काफी संकोच से काम लेते हैं। शहर या गांव सभी जगह समाज की दृष्टि लिंगानुपात में एक समान नहीं है। लड़कियों का जन्म अपवाद स्वरूप छोड़कर अपशगुन सा माना जाता है और पुत्र-जन्म सौभाग्यमान थाली बजाई जाती, जश्न मनाया जाता है। मूलतः यह धारणा बेहद त्रुटिपूर्ण है। जहां तक यह दलील दी जाती है कि पुत्र से वंश चलता है तो प्रश्न यह भी उठता है कि हम अपने पूर्वजों में से कितने बुजुर्गों या पीढ़ियों को जानते हैं? मात्र मन में मनसूबे पालने व कपोल कल्पनाओं के आधार पर अपने वंश की पोथी गढ़ कर स्वयं श्रेष्ठ बना लेने से समाज का स्तर ऊँचा नहीं होता। सभी जानते हैं कि जवाहर लाल नेहरू के पुत्र नहीं इकलौती बेटी थी। उसे पढ़ा लिखाकर सद्संस्कार शिक्षा दिला इतनी उन्नति की कि, एक दिन वही बेटी हमारे देश की 'इन्दिरा गांधी' वर्चस्ववान, दबंग प्रधानमंत्री बनी। जिसे आप और हम क्या सारा विश्व इन्दिरा गांधी के कुशल प्रशासन की मुक्त कंठ से प्रशंसा करता है।

इसके लिए वर्तमान की शिक्षा, संस्कृति, वैयक्तिक सद् व्यवहार, चलन और नख-शिख का लावण्य भी जरूरी है। ऐसे में बेटियां आपको आपके वंश की पहचान दे सकती हैं और वे ही अपने व्यवहार से आपको समाज के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा सकती हैं।

नारी शिक्षा का एक लाभ यह है कि जहां वह आत्मनिर्भर बनती है, वहीं पारिवारिक, सामाजिक अज्ञान, अशिक्षा का स्वतः ही विघटन होता है। ऐसा इसलिए है कि ये रुढ़ियां खोखले ढर्रे की कुरीतियां उनकी जीवन चर्या में बाधाएं खड़ी करती हैं और वे जब बाहरी दुनिया के सम्पर्क में आती है तो घर के आर्थिक ढांचे को सुदृढ़ करती है। एक प्रकार के आत्मविश्वास के कारण परिवार को नई चेतना, नई ऊर्जा अर्जित होती है। इस आत्मविश्वास, आत्मबल से समाज को भी बल मिलता है।

यदि समाज में बेटी की हैसियत कम और बेटे की अधिक हो तो हमें वर्तमान से विगत इतिहास से सबक लेना होगा, जरा गहराई से सोचिये तो धृतराष्ट्र के सौ पुत्र थे जिन्होंने अपने पूर्वजों का कौन-सा हित साधा? रावण के हजारों पुत्र थे लेकिन वे हजारों पुत्र मिलकर भी रावण को दुर्गति से बचा नहीं सके। तो फिर एक यदि चरित्रहीन है तो कौन सा हित कर लेगा। आप तो बेटी में ही बेटे की आदत डालें अर्थात् बेटी को अपना बेटा समझें। स्वार्थपूर्ण और व्यावसायिक विचार अपने मन-मस्तिष्क दिल से उठने न दीजिए। बेटी को पराया धन न समझें अंश तो माता-पिता का है, जो दो-दो घरों को रोशन करती है। देखा, पढ़ा गया है कि बेटियां पढ़ाई में बाजी मार रही हैं, देश-विदेश में विभिन्न क्षेत्रों के शिखर छू रही हैं।

नारी तो सृष्टि की जननी
और पुरुष की शक्ति है।

बेटी की शादी में माँ उसे बहुत कुछ देती है लेकिन इसके साथ ही कर्तव्य बोध की, मेरे दूध की लाज रखना की श्रेष्ठ शिक्षा भी उसे मिल जाए तो विषमता, विकटता, संकटों, विपत्तियों, प्रतिकुलता के क्षणों में विचलित नहीं होगी। बेटी.....।

वर्तमान में नारी से छेड़छाड़, मासूम लड़कियों के साथ जबरन दुष्कर्म तथा दहेज के लिए उलहानें तथा केरोसीन डाल बहुओं को मारना नारी हत्या तथा कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध मानवता के लिए पाप हैं।

अतः नारी अस्मिता की सुरक्षा और कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए युवा युवतियों को विभिन्न आकर्षक गतिविधियां, शिक्षा के प्रचार-प्रसार को तीव्र गति देनी होगी। 'नारी, बेटियों ईश्वरीय रचना विलक्षण! शिक्षा प्रदान कर करें सुरक्षा, संरक्षण।' बालिका शिक्षा का ध्येय है, बालिकाओं का सर्वांगीण विकास। शिक्षा एक ओर जहां सामाजिक, आर्थिक और वैयक्तिक शैक्षिक विकास का सतत प्रवाह है वही मनुष्य को सम्मान से जीने और आत्मनिर्भर होने की प्रेरणा देती है।'' -स्वमी विवेकानन्द।

-सदर बाजार रोड, भीनमाल, जालौर-343029
मो. 9587848485

जो मनुष्य सड़क के किनारे तथा जलाशयों के तट पर वृक्ष लगाता है, वह स्वर्ग में उतने ही वर्षों तक फलता-फूलता है, जितने वर्ष तक वह वृक्ष फलता-फूलता है। -पद्म पुराण

आदेश-परिपत्र : दिसम्बर, 2013

1. यात्रा भत्ता एवं चिकित्सा व्यय के भुगतान की नियमित सूचना भिजवाने के सम्बन्ध में।
2. हितकारी निधि का वर्ष 2013-14 का वार्षिक अंशदान अनिवार्य रूप से लेकर भिजवाने के सम्बन्ध में।
3. राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मेलन की तिथियों में परिवर्तन।
4. कक्षा-6, 7 एवं 8 की तृतीय भाषा पंजाबी हेतु पंजाब राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल की पुस्तकें लागू करने के सम्बन्ध में।
5. प्रावधायी निधि योजना के अंशदान के कटौती पत्र और कर्मचारियों की पासबुक उपलब्ध कराने बाबत।
6. मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता वर्ष 2013-14

1. यात्रा भत्ता एवं चिकित्सा व्यय के भुगतान की नियमित सूचना भिजवाने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/बजट/बी-4/25577/2013-14/ दिनांक 01-10-2013 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय), शिक्षा विभाग,..... ● विषय : बकाया यात्रा भत्ता एवं चिकित्सा व्यय के भुगतान की सूचना भिजवाने के सम्बन्ध में। ● प्रसंग : प्रमुख शासन सचिव, स्कूल शिक्षा (ग्रुप-5) विभाग, राजस्थान, जयपुर का परिपत्र क्रमांक प.2(3)शि-5/2012 दिनांक 17-09-2013

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार के प्रासंगिक परिपत्र के क्रम में लेख है कि आयोजना भिन्न मदों के बजट प्रस्ताव निदेशालय में पिछले माह प्रस्तुत करते समय आप द्वारा अपने क्षेत्राधीन अधिनस्थ विद्यालयों में बकाया चल रहे यात्रा भत्ता एवं चिकित्सा व्यय की जो सूची प्रस्तुत की गई थी, उसके आधार पर बकाया दावों के चुकारे हेतु बजट आवंटन की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है, इसके अतिरिक्त विद्यालयों से प्राप्त मांग पत्र एवं सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी के माध्यम से प्राप्त प्रकरणों में भी बजट आवंटन जारी किया जा चुका है। आवंटित बजट का उपयोग सुनियोजित तरीके से तथा राज्य सरकार के प्रासंगिक परिपत्र में दिये गये निर्देशानुसार उपयोग किया जाना सुनिश्चित करें एवं निर्धारित प्रपत्र में सूचना निदेशालय के बजट अनुभव को ईमेल आईडी aobudgetsecedu@gmail.com पर प्रत्येक माह के प्रथम व तृतीय सोमवार को आवश्यक रूप से उपलब्ध कराया जाना सुनिश्चित करावें। सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी अपने क्षेत्र के समस्त विद्यालयों की लेखा मदवार सूचना निर्धारित प्रपत्र में भिजवाया जाना सुनिश्चित करावें।

प्रपत्र

1. कार्यालय का नाम .....
2. लेखामद .....

बकाया यात्रा भत्ता एवं चिकित्सा व्यय के भुगतान की प्रगति सूचना as on.....

क्र. सं.	ऑफिस आईडी	विद्यालय का नाम	बकाया		प्राप्त आवंटन		भुगतानकी स्थिति		विशेष विवरण
			यात्रा व्यय	चिकित्सा व्यय	यात्रा व्यय	चिकित्सा व्यय	यात्रा व्यय	चिकित्सा व्यय	

मुख्य लेखाधिकारी
माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर

2. हितकारी निधि का वर्ष 2013-14 का वार्षिक अंशदान अनिवार्य रूप से लेकर भिजवाने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा./हिनि/अशंदान/28203/2013-14 दिनांक : 28.10.2013 ● विषय : समस्त अधिनस्थ कर्मचारियों/अध्यापकों का हितकारी निधि का वर्ष 2013-14 का वार्षिक अंशदान रूप से लेकर भिजवाने बाबत। ● राज्य सरकार के आदेश क्रमांक : प.21(ग) 2/95 दिनांक 02.08.2002 की अनुपालना में हितकारी निधि में वर्ष 2013-14 का वार्षिक अशंदान शिक्षा विभाग के समस्त अधिनस्थ कार्यालयों/विद्यालयों के अधिकारियों/व्याख्याताओं/वरिष्ठ अध्यापकों/शा. शिक्षकों/पुस्तकालयाध्यक्षों/अध्यापकों/प्रयोगशाला सहायकों/कार्यालय अधीक्षकों/कार्यालय सहायकों/वरिष्ठ लिपिकों/कनिष्ठ लिपिकों/जमादार एवं सहायक कर्मचारियों एवं अन्य समस्त वर्ग के राज्य कर्मचारियों का राज्य सरकार द्वारा निम्न निर्धारित दर से हितकारी निधि का वार्षिक अशंदान समस्त आहरण-वितरण अधिकारी अपने अधिनस्थ समस्त कार्यरत कार्मिकों से अनिवार्य रूप से प्रतिवर्ष प्राप्त कर आहरण-वितरण अधिकारी के माध्यम से भिजवाये जाने का प्रावधान किया हुआ है:

राज्य सरकार द्वारा निर्धारित वार्षिक अशंदान की दरें

1. **समस्त राजपत्रित अधिकारी (स्कूल व्याख्याता सहित) - 50/- प्रतिवर्ष**
2. **व.अ./कार्यालय अधीक्षक/का.सहायक एवं समकक्ष - 30/- प्रतिवर्ष**
3. **अध्यापक/व.लि./क.लि./प्रशासे/प्रशास/जमादार/स.कर्मचारी एवं समकक्ष - 20/- प्रतिवर्ष**

हितकारी निधि कल्याणकारी योजना का मुख्य उद्देश्य

इस कल्याणकारी योजना अन्तर्गत राज्य कर्मचारियों/अध्यापकों से प्राप्त अशंदान राशि से सेवा में रहते हुये कार्मिकों के निधन पर उनके आश्रितों को रूपये 7000/- एवं दुर्घटना में निधन होने पर रूपये 10000/- तथा गम्भीर बीमारी पर उनकों तथा परिवार के सदस्य की बीमारी पर रूपये 5000/- की सहायता राशि दिये जाने का प्रावधान है। शिक्षा विभागीय कर्मचारियों/अध्यापकों के 100 बच्चों को जो व्यवसायिक शिक्षा में प्रथम वर्ष में अध्ययनरत होने पर रूपये 1500/- से रूपये 2500/- तक की राशि की सहायता दिये जाने का प्रावधान किया हुआ है।

प्रायः देखने में आया है कि आहरण-वितरण अधिकारियों द्वारा राज्य सरकार के उक्त आदेश की पालना में शिथिलता बरती जा रही है जिसके कारण वार्षिक अशंदान की राशि पूर्ण रूप से तथा समय पर प्राप्त नहीं हो रही है जिससे इस कल्याणकारी योजना के अन्तर्गत अशंदान सहायता राशि में बढोतरी नहीं हो पा रही है।

अतः वर्ष 2013-14 का हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान

दिसम्बर माह के वेतन से जिसका भुगतान जनवरी, 2014 में किया जावेगा में अनिवार्य रूप से समस्त कार्मिकों से उपरोक्त निर्धारित दर से अशंदान की राशि आवश्यक रूप से भिजवाने की सुनिश्चितता करें।

अतः निर्देशित किया जाता है कि आपके कार्यालय एवं अधिनस्थ समस्त विद्यालयों में पत्र जारी कर संबंधित प्रत्येक आहरण-वितरण अधिकारी निर्धारित दर से वार्षिक अशंदान की राशि प्राप्त कर बैंक ड्राफ्ट **''अध्यक्ष, हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर'' के नाम से बनवाकर भिजवावें तथा प्रत्येक आहरण-वितरण अधिकारी यह प्रमाण-पत्र भी देवें कि मैंरे अधीनस्थ समस्त कार्मिकों से अशंदान की राशि प्राप्त कर निदेशालय को भिजवा दी गई है।**

समस्त कार्यालयों/विद्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों एवं अधिकारियों से प्राप्त अंशदान का एक रजिस्टर निम्न प्रपत्रानुसार (एक पृष्ठ पर एक ही नाम अंकित कर) आवश्यक रूप से प्रत्येक आहरण-वितरण अधिकारी अपने कार्यालय/विद्यालय में संधारित करेगा जिसमें अशंदान की पृविष्टियों का रिकार्ड रखेगा।

हितकारी निधि अंशदान रजिस्टर संधारण का प्रपत्र

कार्यालय/विद्यालय का नाम

कर्मचारी का नाम पदः नियुक्ति तिथि

क्र. सं.	अशंदान वर्ष	अशंदान राशि	बैक ड्राफ्ट सं.	दिनांक	निदेशालय से प्राप्त जी.ए. क्रमांक एवं दिनांक

● (डॉ. वीना प्रधान) ● निदेशक ● माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

3. राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मेलन की तिथियों में परिवर्तन

● राजस्थान सरकार, शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग ● क्रमांकः प.32(1)शिक्षा-1/2013 पार्ट जयपुर, दिनांक : 8.11.13 ● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। ● विषय : शिविरा पंचांग, 2013-14 में राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मेलन की दिनांक में परिवर्तन बाबत्।

उपरोक्त विषयान्तर्गत निर्देशानुसार लेख है कि शिविरा पंचांग, 2013-14 में राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मेलन 06-07 दिसम्बर, 2013 तक आयोजित किया जाना निश्चित है, परन्तु राज्य में विधान सभा चुनाव निर्धारित होने से अब यह सम्मेलन 03-04 जनवरी, 2014 तक आयोजित किये जाने की स्वीकृति एतद् द्वारा प्रदान की जाती है।

● (नसीरूद्दीन कुरैशी) उप शासन सचिव-प्रथम

4. कक्षा-6, 7 एवं 8 की तृतीय भाषा पंजाबी हेतु पंजाब राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल की पुस्तकें लागू करने के सम्बन्ध में।

● राजस्थान सरकार, स्कूल शिक्षा विभाग, प्रारम्भिक शिक्षा (आयोजना) अनुभाग ● क्रमांक : प. 15(2)प्राशि/आयो/2011 जयपुर, दिनांक : 28.10.13 ● विषय : कक्षा-6, 7 एवं 8 की तृतीय भाषा पंजाबी हेतु पंजाब राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल की पुस्तकें लागू करने के सम्बन्ध में। संदर्भ : आपका पत्रांक एफ 7 (उत्पादन-1)/रारापामं/2013/6309 दिनांक 10.10.2013 ● उपयुक्त विषयान्तर्गत संदर्भित पत्र के क्रम में निर्देशानुसार लेख है कि इस विभाग के समसंख्यक आदेश दिनांक 30.09.2013 द्वारा पंजाब राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल की निम्नांकित पाठ्यपुस्तकों को राज्य की कक्षा 6, 7 एवं 8 में तृतीय भाषा पंजाबी के शिक्षण के लिये लागू की गई हैं।

क्र. सं.	पाठ्यपुस्तक का नाम व प्रकाशन	प्रकाशन वर्ष	राजस्थान राज्य की कक्षा जिसके लिए लागू किया गया है।
1	पंजाबी पाठ पुस्तक-4 (दूजी भाषा) पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, साहिब जादा अजीतसिंह नगर, पंजाब	2012	6
2	पंजाबी पाठ पुस्तक-5 (दूजी भाषा) पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, साहिब जादा अजीतसिंह नगर, पंजाब	2013	7
3	पंजाबी पाठ पुस्तक-7 (दूजी भाषा) पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, साहिब जादा अजीतसिंह नगर, पंजाब	2009	8

उक्त पाठ्यपुस्तकें सत्र 2014-15 से लागू की जायेंगी।

● (आर.सी. ढेनवाल) संयुक्त शासन सचिव

5. प्रावधायी निधि योजना के अंशदान के कटौती पत्र और कर्मचारियों की पासबुक उपलब्ध कराने बाबत।

● निदेशालय, राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग, राजस्थान, जयपुर ● क्रमांक : SP-1 दिनांक : 13.11.2013 ● विषय : प्रावधायी निधि योजना के अंशदान के कटौती पत्र और कर्मचारियों की पासबुक उपलब्ध कराने बाबत।

उपरोक्त विषय में लेख है कि प्रारंभिक शिक्षा पंचायती राज के अधीन करने के पश्चात, पंचायत समितियों के ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारियों के द्वारा अध्यापकों की प्रावधायी निधि अंशदान की कटौती की जाकर उक्त राशि का चैक/चालान विभाग में भिजवाया जाता है।

इस सम्बन्ध में जैसा कि आपको ज्ञात है कि कटौतियां नियमित रूप से प्रावधायी निधि खाते में जमा नहीं करवायी जाती है और न ही प्रतिमाह नियमित रूप से चैक/चालान/कटौती पत्र इस विभाग के जिला कार्यालयों में भिजवाये जाते हैं। ऐसी स्थिति में न सिर्फ विभागीय कार्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है अपितु कर्मचारियों को ब्याज की हानि भी होती है।

इसके लिये इस विभाग द्वारा समय-समय पर जिला कार्यालयों के माध्यम से सम्बन्धित अधिकारियों को निवेदन किया जाता रहा है किन्तु स्थिति में आशानुरूप सुधार नहीं हुआ है।

ज्ञातव्य है कि शिक्षक संघों के द्वारा भी समय-समय पर विभाग का इस ओर ध्यान आकर्षित किया जाता रहा है कि शिक्षकों को लगातार ब्याज की हानि हो रही है।

शिक्षा विभाग में राज्य बीमा सेवा के अधिकारी की नियुक्ति का उद्देश्य भी इसी सन्दर्भ में रहा है कि शिक्षा विभाग में कार्यरत शिक्षकों एवं कर्मचारियों के हितों का संरक्षण किया जावे।

अतः शिक्षा विभाग के स्तर पर यह अपेक्षा की जाती है कि :-

1. प्रतिमाह कर्मचारियों के अंशदान की कटौती की राशि राज्य सरकार के बजट हैड में नियमित रूप से जमा करवायी जावे और प्रतिमाह चालान इस विभाग के जिलाधिकारी को प्रेषित किये जावें।
2. प्रावधायी निधि योजना राज्य बीमा योजना एवं नवीन पेंशन योजना

तीनों ही योजनाओं की राशि नियमानुसार कटौती करते हुए इस विभाग के जिला अधिकारी को प्रेषित की जावे और यदि इस में किसी प्रकार की कठिनाई हो तो मार्गदर्शन हेतु विभाग के जिला कार्यालयों से सम्पर्क किया जावे। सम्पर्क सूत्र वेबसाईट पर भली-भांति उपलब्ध हैं।

3. विभाग द्वारा चलाई जा रही विशेष कार्य योजना के अन्तर्गत कर्मचारियों के पूर्ण पदस्थापन की जानकारी हेतु एवं कटौतियों के समायोजन में सहयोग हेतु पासबुक जिला कार्यालयों को उपलब्ध करवायी जावे। जिससे उनके गेप्स की पूर्ति की जा सके।
   यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि पासबुकों का संधारण इस प्रकार किया जावे कि उसमें चालान नम्बर, दिनांक एवं कटौती की राशि उसी माह में अंकित की जावे जिस माह में वास्तविक कटौती हुई हो।
4. विभागीय कार्य योजना में वर्ष 2012-13 से खतौनी विभागीय पोर्टल पर कटौती पत्र अपलोड करते हुए की जा रही है जैसाकि आपको विदित है कि कटौती पत्र अपलोड करने का कर्तव्य डीडीओ का है। जबकि ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों द्वारा इस सम्बन्ध में कोताही बरती जा रही है। कई जिला कार्यालयों में ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारियों द्वारा कटौती पत्रों को अपलोड नहीं करने पर खतौनी कार्य पूर्ण नहीं हो पाता है या कटौती पत्र त्रुटिपूर्ण होने पर भी विभागीय पोर्टल पर अपलोड करना संभव नहीं हो पाता।

कृपया यह सुनिश्चित करावें कि सभी कटौती पत्र त्रुटि रहित हो और यदि आवश्यक हो तो इस सम्बन्ध में जिला कार्यालयों/मुख्यालय से मार्गदर्शन लिया जा सकता है। कार्ययोजना के अन्तर्गत ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारियों के अधीन कार्यरत शिक्षकों का 01.04.2012 का बैलेन्स अपलोड करने के लिये यह आवश्यक है कि सभी कर्मचारियों को सही खाता संख्या उपलब्ध हों।

इस हेतु यह आशा की जाती है कि ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी के अधीन कार्यरत सभी शिक्षकों/कर्मचारियों के सही खाता संख्या उपलब्ध कराये जावें जिनके खाता नम्बर गलत हों, उनके खाता नम्बर सही करने के लिये विभाग के स्थानीय कार्यालय से सम्पर्क करने के निर्देश जारी किये जावें।

अतः कृपया उक्त कार्यवाही अविलम्ब पूर्ण करते हुए निम्न हस्ताक्षरकर्ता को अवगत करावें। ● वरिष्ठ अति. निदेशक (प्रा.नि.) ● राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग, राज. जयपुर

6. मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता वर्ष 2013-14

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● कार्यालय आदेश ● शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 41वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2013-14 का आयोजन शिविरा पंचाग में दी गई तिथियों के अनुसार निम्न स्तरों पर उनके नाम के सम्मुख अंकित अवधि में होगी :-

1. जिला स्तर पर चयन - दिनांक 12.12.13 से 13.12.13 तक
2. मण्डल स्तर पर चयन - दिनांक 17.12.13 से 18.12.13 तक
3. मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण- दिनांक 20.12.13 से 24.12.13 तक
4. राज्य स्तरीय प्रतियोगिता- दिनांक 27.12.13 से 30.12.13 तक

निदेशालय इकाई का चयन दिनांक 12.12.13 से 13.12.13 तक एवं प्रशिक्षण 20.12.13 से 24.12.13 तक पृथक से प्रसारित आदेशानुसार होगा।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के आयोजन का दायित्व शिक्षा निदेशालय इकाई का है जिसका आयोजन प्रधानाचार्य, सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर के तत्वाधान में दिनांक 27.12.13 से 30.12.13 तक होगा। इस प्रतियोगिता की समस्त कार्यवाही पूर्व में निदेशालय द्वारा प्रसारित शिक्षा विभागीय कर्मचारी क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता नियमावली एवं मार्गदर्शिका तथा समय-समय पर हुए संशोधनानुसार सम्पादित होगी। उक्त प्रतियोगिता में 126 खिलाड़ियों से अधिक का चयन कर नहीं ले जावें। जिला एवं मण्डल स्तर पर पूर्वानुसार सम्भागी संख्या रहेगी। खेलानुसार एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत सम्भागियों की संख्या राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हेतु निम्नानुसार होगीः-

खेल का नाम	खिलाड़ियों की संख्या	एथलेटिक्स में सम्भागी कुल खिलाड़ी			सांस्कृतिक कार्यक्रम	कुल खिलाड़ी
			40 वर्ष से अधिक	40 वर्ष से अधिक		
बास्केटबॉल	10	100 मीटर दौड़	02	02	सुगम संगीत	02
वॉलीबॉल	10	200 मीटर दौड़	02	02	एकाभिनय	02
टेलबटेनिस	04	400 मीटर दौड़	02	02	एकलनृत्य	02
कैरम	04	800 मीटर दौड़	02	02	विचित्र वेशभूषा	02
शतरंज	02	4 गुणा 100 मीटर दौड़	04	04	हारमोनियम वादन	01
बैडमिन्टन	04	4 गुणा 400 मीटर दौड़	04	04	तबला वादन	01
कबड्डी	10	ऊँची कूद	02	02	ढ़ोलक वादन	01
फुटबॉल	14	लम्बी कूद	02	02	झांझ वादन	01
		त्रिकूद	02	02		
		तश्तरी फेंक	02	02		
		भाला फेंक	02	02		
		गोला फेंक	02	02		

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता की सम्पूर्ण व्यवस्थाएं यथा खेल मैदान, उपकरणों, निर्णायक गण, आवास व्यवस्था, चिकित्सा एवं सुरक्षा व्यवस्था, बिजली, पानी आदि की सुनिश्चितता प्रतियोगिता आयोजन के एक सप्ताह पूर्व आवश्यक रूप से की जावे। साथ ही प्रतियोगिता आयोजक विद्यालय द्वारा सम्भागी दलों को सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर पहुँचने हेतु रेल/बस मार्गों की सूचना प्रधानाचार्य, सादुल स्पोर्ट्स स्कूल बीकानेर द्वारा प्रसारित कर समस्त सम्भागी दलों हेतु मण्डल अधिकारियों एवं निदेशालय को प्रेषित की जावें। ● निदेशक मा.शि., राज., बीकानेर/ शिविरा/माध्य/खेलकूद-1/35107/2013-14/27 दिनांक 13-11-13

परिपूर्ण मनुष्य होने की अपरिमित आकांक्षा को जगाये रखना शिक्षा का असली मकसद है। (Keeping alive the immeasurable aspirations to be a perfect man is the real purpose of education.) **-रवीन्द्रनाथ टैगोर / Rabindranath Tegore**

शिविरा पंचांग

दिसम्बर, 2013					
रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	31
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

● **कार्य दिवस 20, रविवार 05, अवकाश 06, उत्सव 02** ● **1 दिसम्बर**–विश्व एड्स दिवस एवं विश्व एकता दिवस (उत्सव)। **1–7 दिसम्बर**–शिक्षा सम्बलन कार्यक्रम में अधिकारियों द्वारा विद्यालयों का अवलोकन। **2–11 दिसम्बर**–ग्राम स्तर पर शैक्षिक योजना निर्माण हेतु कार्यशाला का आयोजन (प्रारम्भिक) तथा बालिका शिक्षा (नवाचारी) के अन्तर्गत राज्य स्तरीय ''आओ देखो सीखो'' प्रतियोगिता का आयोजन। **3 दिसम्बर**–विश्व विकलांगता दिवस का आयोजन (समावेशित शिक्षा के उन्नयन हेतु) **10 दिसम्बर**–मानव अधिकार दिवस (उत्सव) **12–13 दिसम्बर**–राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन। **12–24 दिसम्बर**–अर्द्धवार्षिक परीक्षा (सभी कक्षाओं के लिए) **14–21 दिसम्बर**–राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह का आयोजन। **17–18 दिसम्बर**–राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर चयन एवं दल गठन। **19 दिसम्बर**–भामाशाह योजना का अर्द्धवार्षिक प्रगति प्रतिवेदन निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को प्रेषित करना। **20–24 दिसम्बर**–राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण शिविर। **25–26 दिसम्बर**–राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। **25–31 दिसम्बर**–शीतकालीन अवकाश (25 दिसम्बर को क्रिसमस अवकाश सहित) नव नियुक्त शिक्षकों हेतु प्रशिक्षणों का आयोजन। राज्य कर्मचारियों के हितकारी निधि के वार्षिक अंशदान को दिसम्बर के वेतन से निर्धारित दर पर कटौती की कार्यवाही करना। **27–29 दिसम्बर**–राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। **27–30 दिसम्बर**–राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन, विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं को अंग-उपकरण का वितरण। **नोट :**– रमसा द्वारा शिक्षकों के लिए शैक्षिक भ्रमण का आयोजन।

गीता जयंती : 13 दिसंबर 13

श्रीमद्भगवद्गीता का शैक्षिक महत्व

❒ वृद्धि चन्द गोठवाल

यदि हमें पता चल जाए कि यह काम अच्छा है और फिर हम न अपनाएँ तो मानिए हम गलत काम कर रहे हैं। हमें अपना जीवन विशाल और बुद्धिमता पूर्ण बनाने के लिए शास्त्रीय शिक्षा को भी ग्रहण करना चाहिए। श्रीमद्भगवद्गीता जीवन के सर्वोच्च लक्ष्यों को हृदयंगम करने में महत्वपूर्ण सहायता करती है। जैसे समुद्र की कोई थाह नहीं, वैसे ही गीता ग्रंथ के भावों की थाह नहीं है। आधुनिकता में भटकती विचारधारा को कर्मप्रधान बनाने की शिक्षा श्रीमद्भगवद्गीता से प्राप्त होती है। जो न तो प्राचीन है और न आधुनिक, बल्कि शाश्वत है। सम्पूर्ण मानव जाति के लिए मूल्यवान है। आज का मनुष्य कर्म किए बिना पहले फल की इच्छा करता है किन्तु श्रीमद्भगवद्गीता कर्म करते रहने की शिक्षा देती है। कर्म का फल ईश्वर देता है।

समूचे शिक्षा जगत में एक बात कि कर्म प्रधान है, हम स्वीकार कर जीवन में उतार लें तो शैक्षिक स्तर उन्नत हो सकता है। मनुष्य जब किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है और उसे यह पता नहीं चलता कि उचित कर्त्तव्य क्या है, तब श्रीमद्भगवद्गीता सही-सही मार्गदर्शन करती है। गीता अन्धकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर ले जाने वाला ग्रंथ है। अब तक क्या हुआ और कैसे हुआ ? इसकी नुकता चीनी करने की वनिस्पत हमें क्या करना है, यह महत्वपूर्ण है। शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावक को गीता के उपदेश के अनुरुप कार्य करने की महती आवश्यकता है। आज शिक्षा के स्तर एवं गतिविधियों पर चहुंओर चिन्ता तो जतलाई जाती है, पर सत्यनिष्ठ एवं कर्मवीर बनकर कार्य करने में उदासीनता को दूर करने पर ध्यान नहीं। अर्थ लाभ लेने की निगाहों को तरजीह दी जाती है, कर्त्तव्य परायणता को नहीं। कोई बताए कर्म अच्छा है या कर्म से दूर रहना? तो निष्कर्ष आएगा कि कर्म अच्छा है। कर्म नैतिक संहिता के अन्तर्गत है।

महाभारत में अर्जुन यह प्रश्न नहीं उठाता है कि युद्ध उचित है या अनुचित। उसने तो कई युद्ध लड़े हैं और अनेक शत्रुओं का सामना किया है, लेकिन अर्जुन को अपने मित्रों एवं सम्बन्धियों को मारना पड़ेगा। तब श्री कृष्ण ने समझाया कि कर्म का त्याग कभी नहीं करना चाहिए, बल्कि कर्म करें उसका फल परमात्मा के हाथ है। सचमुच में गीता हमें इच्छाओं से विरक्त होने का उपदेश देती है, कर्म से दूर रहने का नहीं। कहा जाता है शिक्षक महान है, वह राष्ट्र निर्माता है, लेकिन उसकी महानता क्यों घट रही है ? गिरते परीक्षा परिणाम और शिक्षा में गुणवत्ता की कमी क्यों होने लगी ? बालक कमजोर रहते हैं, ट्यूशन के लिए मजबूर हो जाते हैं, पाठ्यक्रम पूरा नहीं हो पाता, नैतिकता एवं संस्कारों में कमी है तो सत्कर्म पर संशय उठ खड़ा होना स्वाभाविक है। गीता की निष्कामता और समर्पण की भावना के लिए कर्म-प्रधान है, के सिद्धान्त को गहराई से लेने की जरूरत है। सक्रिय होकर सकारात्मक दृष्टिकोण से किए गए कर्म की शक्ति से जो सफलता मिलती है वह अच्छी फलदायक होती है। गीता की यह शिक्षा कोई रहस्यवाद नहीं है, बल्कि इसका सम्बन्ध हमारे आन्तरिक अस्तित्व से है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा अर्जुन को सम्बोधित करते हुए महाभारत के रणक्षेत्र में जो ज्ञान दिया गया है, वह हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी है। हमें इन शिक्षाओं को दृष्टि में रखकर अपने जीवनपथ का निर्धारण करना चाहिए। तब हमारे सामने कोई ऐसी चुनौती नहीं आयेगी जिसका कोई समाधान नहीं हो।

निष्कर्ष यह है कि चाहे सामाजिक सुधार हो अथवा शैक्षिक, कर्म प्रधान व्यक्ति से ही सम्भव होता है। यह भी सही है कि कर्म से जी चुराने वाला कर्म से मुक्ति नहीं पा सकता है। दायित्व सम्भाला है, उसे पूर्ण मनोयोग से करना चाहिए। कर्म की सच्चाई पर ही मन को शान्ति मिलती है। कार्य छोटा हो या बड़ा, उसे पुरुषार्थ पूर्वक करना चाहिए।

-पूर्व व्याख्याता, हिन्दी
गौतम आश्रम के पास, कपासन (चित्तौड़गढ़)
मो. 9414732090

शताब्दी दस्तावेज

हमारी प्राथमिक शिक्षा

❒ मुंशी प्रेमचन्द

मुंशी प्रेमचन्द उपन्यास सम्राट कहलाते हैं। कुशल कहानीकार होने के साथ ही प्रेमचन्द उच्च-कोटि के विचारक थे। सामाजिक सुधार एवं जागृति के लिए उन्होंने श्रेष्ठ साहित्य की रचना की जो तत्समय की स्थितियों का बखान करती है। यहाँ प्रकाशित 'हमारी प्राथमिक शिक्षा' नामक उनका आलेख एक शताब्दी पूर्व सन् 1909 में प्रकाशित हुआ था जो परतंत्र भारत में नई प्राथमिक शिक्षा की दुर्दशा पर प्रकाश डालता है। प्रसन्नता की बात है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात की विकास यात्रा में हमारी शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार हुआ है। यह आलेख वर्तमान पीढ़ी के सुकृजन को एक सदी पूर्व की शिक्षा व शिक्षकों की दयनीय स्थिति बताते हुए परिश्रमपूर्वक बेहतर करने की प्रेरणा देता है। इस आलेख पर स्टाफ बैठक में चर्चा की जानी चाहिए। आपकी प्रतिक्रियाएं शिविरा में प्रकाशित की जाएंगी। **-वरिष्ठ सम्पादक**

दिसम्बर के मॉडर्न रिव्यू में सेंट निहाल सिंह ने एक अनूठा लेख लिखा है जिसमें अमरीका के एक देहात की कैफियत बयान की है। उसे पढ़कर हैरत भी होती है, और मायूसी भी। हैरत इसलिए की तहजीब की जो आसानियाँ और जो सुविधाएँ इस गाँव में हैं, वह हिन्दोस्तान के बड़े-बड़े शहरों को भी नसीब नहीं। और मायूसी इसलिए कि शायद हिन्दोस्तान की किस्मत में तरक्की करना लिखा ही नहीं। दो हजार आदमी का मौजा और हाई स्कूल ! उसकी इमारत, उसके पुस्तकालय, उसकी लेबोरेटरी पर हिन्दोस्तान का कोई कॉलेज गर्व कर सकता है। क्या हिन्दोस्तान के कभी ऐसे नसीब होंगे।

अब एक तरफ तो इस देहाती मदरसे को देखिए और दूसरी तरफ एक हिन्दोस्तानी देहाती मदरसे का खयाल कीजिए। एक पेड़ के नीचे, जिसके इधर-उधर कूड़ा-करकट पड़ा हुआ है और जहाँ शायद वर्षों से झाड़ नहीं दी गयी, एक फटे-पुराने टाट पर बीस-पच्चीस लड़के बैठे ऊँघ रहे हैं। सामने एक टूटी हुई कुर्सी और पुरानी मेज है। उस पर जनाब मास्टर साहब बैठे हुए हैं। लड़के झूम-झूमकर पहाड़े रट रहे हैं। शायद किसी के बदनपर साबित कुर्ता न होगा। धोती जाँघ के ऊपर तक बंधी हुई, टोपी मैली-कुचैली, शकलें भूखीं, चेहरे बुझे हुए ! यह आर्यावर्त का मदरसा है जहाँ किसी जमाने में तक्षशिला और नालन्दा के विद्यापीठ थे। कितना फर्क है। हम तहजीब की दौड़ में दूसरी कौमों से कितना पीछे हैं, कि शायद वहाँ तक पहुँचने का हौसला भी नहीं कर सकते।

हमारी आरम्भिक शिक्षा के सुधार और उन्नति के लिए सबसे बड़ी जरूरत-योग्य शिक्षकों की है। और योग्य आदमी आठ रुपये या नौ रुपये माहवार के वेतन पर दुनिया के पर्दे में कहीं नहीं मिल सकते। जिस आदमी को पेट की फिक्र से आजादी ही नसीब न होगी वह तालीम की तरफ क्या खाक ध्यान देगा ? ऐसे बहुत से जिले हैं जहाँ अभी तक मुदर्रिसों को चार और पाँच रुपये से ज्यादा तनख्वाह नहीं मिलती। ऐसे आदमियों के हाथों में हमारी सरकार ने रिआया की तालीम रख दी है और ताज्जुब किया जाता है कि तालीमी हालत क्यों ऐसी रद्दी है। जब सरकारी मदरसों का यह हाल है तो इमदादी मदरसों का जिक्र ही क्या। उनमें कम से कम तीन चौथाई ऐसे हैं, जिन्हें सरकार चार रुपये माहवार इमदाद देती है और उसमें एक आना मनीऑर्डर का महसूल कट जाता है, तीन रुपये पन्द्रह आने में कौन महीना भर दर्दसरी गवारा करेगा। शहरों में कहारों की तनख्वाहें छः और सात रुपये माहवार हैं, बल्कि अक्सर तो इससे भी ज्यादा। मामूली मजदूर चार आने पैसे रोज कमा लेता है। मगर गरीब मुदर्रिस इनसे भी जलील समझा जाता है। मजबूरन या तो वह गरीब खेती की तरफ चला जाता है या सरकारी कायदे के खिलाफ पाव आने की जगह एक आना या इससे ज्यादा फीस लेना शुरू करता है। इसका नतीजा यह है कि लड़कों की तादाद में बढ़ोतरी नहीं होने पाती। बहुत से इमदादी मदरसे तो सिर्फ इसलिए कायम हैं कि एक गरीब आदमी तीन-चार रुपये घर बैठे पा जाता है। फर्जी लड़कों के नाम लिख लिए जाते हैं और जब कोई मुआइना करने वाला अफसर पहुँच जाता है, तो थोड़े से लड़के इधर-उधर से बटोरकर दिखा दिए जाते हैं।

वेतन का तो यह हाल है। अब यह देखिए कि एक मुदर्रिस के सर काम का कितना बोझ लादा जाता है। आमतौर पर लोअर प्राइमरी में एक मुदर्रिस रहता है और प्राइमरी मदरसे में दो या तीन। गौर कीजिए कि एक मुदर्रिस चार दर्जों की तालीम क्यों कर दे सकता है। मदरसों के एक इंस्पेक्टर साहब बहुत सही तौर पर पूछते हैं कि एक आदमी दर्जा आलिफ के पैंतीस, दर्जा बे के पन्द्रह, दर्जा अव्वल के सात, दर्जा दोयम के पाँच लड़कों की पढ़ाई की देखभाल क्योंकर सकता है। अपर प्राइमरी मदरसों में दो-दो, तीन-तीन दर्जे एक-एक आदमी के सुपुर्द रहते हैं। इसका लाजमी नतीजा यह होता है कि मुदर्रिस किसी दर्जे को भी ठीक से नहीं पढ़ा सकता। लड़के साल-साल भर से पढ़ने आते हैं मगर अभी हरुफ लिखना भी नहीं आया। माँ-बाप देखते हैं कि जब उसका मदरसे जाना न जाना बराबर है तो घर पर ही क्यों न रहे, ताकि कुछ घर का काम-काज ही सम्हाले। नार्मल स्कूलों से जो लोग पढ़ाने का तरीका सीखकर आते हैं, वह भी मदरसों में आकर अपना सब तरीका भूल जाते हैं। बेचारे क्या करें, वहाँ उन्हें एक वक्त एक दर्जे की तालीम का सबक दिया गया। यहाँ उन्हें एक वक्त में चार दर्जे पढ़ाने को मिले। उन उसूलों पर क्यों कर अमल करें। एक दर्जे के पढ़ाने में लगे तो दूसरे दर्जे को हिसाब दे दिया, किसी दर्जे को इमला, किसी दर्जे को भूगोल। आँख तो एक ही है; कैसे इमले को सुधारे, कैसे हिसाब समझाये, कैसे ठीक ढंग से भूगोल की शिक्षा दे, गरज यह कि हडबोंग-सा मचने लगता है। लड़के शैतान, मुदर्रिस को मशगूल देखा तो धौल-धप्पा शुरू !

इसलिए सरकार अगर सचमुच शिक्षा की उन्नति चाहती है, सच्ची उन्नति, कागजी और नुमाइशी नहीं, तो मिस्टर डिलाफास की राय के अनुसार मुदर्रिसों की तादाद और तनख्वाह

बढ़ाये। किसी मुदर्रिस की तनख्वाह पन्द्रह रुपये से कम न रहनी चाहिए, और कोई मुदर्रिस नौकर न रखा जाना चाहिए जिसने उर्दू और हिन्दी मिडिल की सनद न हासिल की हो और पढ़ाने का ढंग का जानकार न हो। और काई मदरसा ऐसा न रहना चाहिए जिसमें कम से कम दो मुदर्रिस न हों। तभी तालीम की हालत सुधर सकती है। इसमें कोई शक नहीं कि इन सब तरक्कियों के लिए बहुत रकम की जरूरत है मगर कौम की तालीम एक ऐसा मसला है जिस पर कितना ही खर्च हो, उसे बेकार नहीं कहा जा सकता। पिछले साल संयुक्त प्रान्त में उन्नीस लाख आरम्भिक शिक्षा में खर्च हुआ और औसत के हिसाब से प्रति छात्र साढ़े तीन आने। यह औसत दूसरे सभ्य देशों के मुकाबिले में बहुत ही कम है। क्या सरकार ऐसे पवित्र काम के लिए पचास लाख सालाना भी खर्च नहीं कर सकती ? रुपये की कमी एक ऐसा बहाना है जो गवर्नमेण्ट के लिए कभी सच्चा नहीं कहा जा सकता। गवर्नमेण्ट के साधन असीम हैं, और इतनी रकम वह बड़ी आसानी से खर्च कर सकती है। जब लड़ाई के खर्च इतने जोरों से साल-ब-साल बढ़ते चले जाते हैं, अफसरों के ऐश और सहूलतों पर रुपया कौड़ियों की तरह लुटाया जा रहा है तो गरीबी या तंगदस्ती का हीला कभी यकीन करने के काबिल नहीं ठहर सकता। यह भी गवर्नमेण्ट की एक चालाकी है कि उसके डिस्ट्रिक्ट बोर्डों पर शिक्षा का बोझ डालकर अपने को अलग कर लिया और अब 'एक जंजाल से और छुट्टी मिली' के तरीके पर अमल कर रही है। बोर्ड कहाँ से रूपया लगायें जब प्राविंशियल गवर्नमेण्ट अपने मुकर्रर किये हुए हिस्से को सख्ती से वसूल करती चली जाती है। पिछले दो-तीन वर्षों से हरेक जिले में मास्टरों को पढ़ाने का ढंग सिखाने के लिए दो-तीन मदरसे कायम किये गये हैं। हरेक मदरसे में सालाना छः मुदर्रिसों की तालीम होती है और सनद हासिल करने के बाद वह सरकारी मदरसों में नौकर रखे जाते हैं। इस मामले में भी सरकार ने गलती की है। अब मदरसों में मास्टर एक नॉर्मल स्कूल का सनदयाफ्ता होता है जिसकी तनख्वाह पन्द्रह रुपये माहवार होती है। जाहिर है कि जो आदमी खुद मिडिल तक तालीम पाये हुए हो, वह मिडिल पास मुदर्रिसों को पढ़ाने का ढंग क्या सिखायेगा ? हकीकत में यह रुपया बिल्कुल बर्बाद होता है। बहुत अच्छा होता अगर एक-एक जिले में ऐसे तीन-तीन मदरसों के बजाय सिर्फ एक मदरसा होता और उसमें इलाहाबाद के ट्रेनिंग कालेज का सनदयाफ्ता सीनियर या जूनियर आदमी तालीम देता। वह अंग्रेजी तालीमयाफ्ता होने और तालीम के उसूलों का जानकार होने के कारण मुदर्रिसों की तालीम ज्यादा खूबी से कर सकता।

कुछ तो रुपये की कमी है और कुछ बेजा खर्च। कभी-कभी सरकार ने दो-चार लाख ज्यादा दिया भी तो वह इन्सपेक्टर और डायरेक्टरों और मैं और तूं के बाँट-बखरे में पड़ जाता है और मुदर्रिस ज्यों का त्यों भूखा रह जाता है। इस साल तीन इन्सपेक्टर और बढ़ाये गये जिसके माने यह हैं कि चालीस हजार रुपये का खर्च और बढ़ गया। दुर्भाग्य से सरकार का खयाल है कि मुआइना ज्यादा होना चाहिए, चाहे तालीम हो या न हो। मुआइने पर रुपया खर्च किया जाता है मगर तालीम की खबर नहीं ली जाती। पिछले साल मिस्टर चौधरी ने बंगाल में वहाँ की गवर्नमेण्ट पर एक एतराज किया था कि तालीम के मुकाबिले में मुआइने पर ज्यादा खर्च किया गया। यही एतराज गालिबन यहाँ भी किया जा सकता है। गवर्नमेण्ट कब यह समझेगी कि मुआइना कभी तालीम की जगह नहीं ले सकता।

उस पर आफत यह है कि मुदर्रिसों के सर काम का इतना बड़ा बोझ भी काफी नहीं समझा जाता। कम से कम पच्चीस फीसदी हल्केबन्दी मदरसे ऐसे हैं जिनमें मुदर्रिस तालीम के अलावा डाकखाने का काम भी किया करते हैं। इस अतिरिक्त काम के लिए उन्हें तीन रुपये से लेकर पाँच छः रुपये तक मिलते हैं। चूँकि बोर्ड जानती है कि मुदर्रिसों को सरकार से काफी तनख्वाह नहीं मिलती इसलिए वह उन्हें डाकखानों का काम हाथ में लेने से रोकने की कोशिश नहीं करती। बल्कि अक्सर मुदर्रिसों की कारगुजारियों का पुरस्कार इसी पोस्टल अलाउंस की शक्ल में दिया जाता है। गवर्नमेण्ट की यह कंजूसी तालीम के हक में जितनी नुकसानदेह है उसका अंदाजा करना मुश्किल है। डाकखाने का काम रोज-ब-रोज ज्यादा होता जाता है। मुदर्रिस इस काम के लिए कोई खास वक्त मुकर्रर नहीं कर सकता। देहात के जमींदार और काश्तकार जिस वक्त फुरसत पाते हैं, मुदर्रिस के पास पहुँच जाते हैं, और गरीब मुदर्रिस को उनकी दिलजोई करते ही बन पड़ती है। अगर वह कायदे बधारने लगे तो जमीदार साहब नाराज हो जायँ, पोस्ट मास्टर जनरल के यहाँ शिकायत कर बैठें, या मुदर्रिस की लान-तान करना शुरू करें और उसकी हस्ती खतरे में डाल दें। इसलिए वह जिस वक्त आ जाते हैं, मुदर्रिस को उनका काम करना पड़ता है। यह सिलसिला सबेरे से शाम तक जारी रहता है और चूँकि मुदर्रिस को भी डाकखाने के काम से कुछ जाती फायदा हो रहता है; वह इस बेवक्त आने को बेजा नहीं ख्याल करता। लगान के फसल में एक-एक दिन कई-कई सौ के मनीआर्डर आ जाते हैं, और हरेक मनीआर्डर पर मुदर्रिस को कुछ आने पैसे मिल जाते हैं। यह बहुत स्वाभाविक बात है कि मुदर्रिस जैसी छोटी हैसियत का आदमी जाती फायदे के इन मौकों को हाथ से न जाने दे। अफसोस की बात है कि हमारी गवर्नमेण्ट की निगाहों में हमारी शिक्षा का कोई महत्व नहीं।

दूसरी बड़ी जरूरत पाठयक्रम में सुधार करने की है। इस प्रश्न पर न शिक्षा विभाग और न गवर्नमेण्ट, कोई पक्की राय कायम कर सकी। कोई कुछ कहता है और कोई कुछ। कुछ लोगों का खयाल है कि आरम्भिक शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ यह होना चाहिए कि लड़का अक्षर पहचानने लग जाय और कुछ मोटा हिसाब जान ले। दूसरी जमात का यह ख्याल है कि लड़के की आरम्भिक शिक्षा इस ढंग से हो कि उसे आगे चलने में मदद मिले। हमारे ख्याल में दोनों रायें एक-दूसरे की विरोधी हैं। जिस शिक्षा को हम आरम्भिक शिक्षा कहते हैं वह देहातों के लिए आरम्भिक शिक्षा नहीं है बल्कि नब्बे फीसदी लड़कों के लिए वही अंतिम शिक्षा है। अपर प्राइमरी पास करने के लिए औसतन छः वर्ष लगते हैं, मगर मुश्किल तो यह है कि छात्रों का दो तिहाई हिस्सा अपर प्राइमरी दर्जे तक भी नहीं पहुँचने पाता, लोअर प्राइमरी दर्जे तक ही उसकी शिक्षा का अन्त हो जाता है। इसलिए जरूरी और बहुत जरूरी है कि हमारी आरम्भिक शिक्षा का पाठ्यक्रम ऐसा स्थिर किया जाय कि चार वर्ष तक पढ़ने के बाद लड़का अपनी जरूरतों के लिए काफी तौर पर शिक्षा पा जाय। एक कलक्टर साहब बहुत सही लिखते हैं कि

''हल्केबंदीवाले मदरसों के लगभग तमाम लड़के मदरसा छोड़ने के बाद बिन-पढ़े लड़कों की जमात में जा मिलते हैं। शिक्षा का कोई दिखाई पड़ने वाला प्रभाव उन पर नहीं पाया जाता और चूँकि उनकी शिक्षा नाममात्र के लिए होती हैं, वह थोड़े ही दिनों में सब कुछ भुला बैठते हैं।''

हमारा ख्याल है कि अपर प्राइमरी दर्जे की पढ़ाई अगर जरा और व्यापक कर दी जाय तो किसानों की जरूरतों के लिए काफी है। रीडरें जो इस वक्त चल रही हैं, भाषा की दृष्टि से सब निकम्मी हैं। उनके पढ़ने से लड़के मामूली बोलचाल के सिवा न तो हिन्दी भाषा जानते हैं और न उर्दू। उनकी भाषा का सुधार होना चाहिए ताकि लड़के रामायण तो समझ लें। व्याकरण की कोई जरूरत नहीं, उसे खारिज कर देना चाहिए। भूगोल की शिक्षा काफी है। हिसाब में भी कुछ कसर नहीं है। अमली सवालों की मश्क ज्यादा होना चाहिए। ड्राइंग व्यर्थ है। उसके बदले तन्दुरूस्ती के बारे में छोटी-सी-प्राइमर होनी चाहिए और भाषा के व्याकरण की जगह पर खेती के कुछ उसूल सिखाये जाने चाहिए। इस वक्त चिट्ठी-पत्री का तरीका नहीं सिखाया जाता। यह एक बहुत जरूरी चीज है। इसका भी कुछ प्रबन्ध होना चाहिए। और तब आरम्भिक शिक्षा का मसला गोया हल हो जायेगा। यह ख्याल रहे कि यह सब कुछ सिर्फ चार सालों का कोर्स है और जब तक कि मुदर्रिसों की तादाद में उचित वृद्धि न की जाय, यह नतीजे इतने कम समय में नहीं हासिल हो सकते। मगर यह बात निःसंकोच कही जा सकती है कि इस कोर्स को खतम करने के लिए चार साल की मुद्दत हरगिज कम नहीं। जनसाधारण में शिक्षा के लोकप्रिय न होने का एक बड़ा कारण यह है कि लड़के वर्षों पढ़ते रहते हैं और कुछ नतीजा नहीं निकलता। इसके लिए मास्टरों की कमी, उनके पास उचित योग्यता का न होना और शिक्षा के पाठ्यक्रम में खामी-तीनों जवाबदेह हैं।

शिक्षा के लिए तीसरी जरूरत ठीक मकान की है। आम तौर पर मदरसों की इमारती हालत बेहद अफसोसनाक है। तहसीली मदरसों में तो खैर कहीं-कहीं पक्के मकान बन गये हैं मगर लोअर प्राइमरी और प्राइमरी मदरसों की हालत बहुत रद्दी है। उन्हें देखकर मवेशीखाने या अनाथालय का ख्याल पैदा होता है। दीवारें पुरानी, दरवाजे टूटे हुए, छतें गिरी हुईं, जमीन का फर्श कच्चा। यहाँ भी रिश्वत और गबन की गर्म बाजारी है। अगर किसी निर्माण के लिए हजार रुपया मंजूर हुआ है तो यह यकीनी बात है कि कम से कम आधी रकम जरूर बीच की मंजिलें तय करने में खर्च हो जाएगी। जिम्मेदार अफसरों में लाज-शरम की भावना ऐसी ठंडी हो गई है कि इस अच्छे काम की अमानत में भी खयानत करने से वह बाज नहीं आते। एक तो बोर्डों की गरीबी, उस पर मंजूरशुदा रकम की यह स्थिति मदरसों की हालत को बहुत ही बुरा बनाये हुए है। अक्सर बोर्ड की तरफ से मदरसों के लिए इमारत भी नहीं होती। अगर गाँव में कोई समझदार आदमी हुआ तो उसने अपने दरवाजे पर या तो कोई झोपड़ा डलवा दिया था, अपने गऊशाले में एक टाट बिछाने की जगह दे दी। मुदर्रिस और मदरसे पर इतना एहसान करके वह अपनी निगाहों में हातिम बन बैठता है। जाहिर है कि ऐसी जगहों में शिक्षा की ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया जा सकता। जमींदार साहब दरवाजे पर असामियों को लेकर बैठ जाते हैं और बुलन्द आवाज में फरमाते हैं कि डिप्टी साहब ने मुझसे यह सवाल किया तो मैंने उसका यह जवाब दिया और मुद्दालेह के वकील को यों लाजवाब कर दिया। उपस्थित लोग कान लगाये उनकी बातें सुन रहे हैं। क्योंकर मुमकिन है कि लड़के का ध्यान इस तरफ न खिंच जाये। लड़कों में ध्यान जमाने की योग्यता यों भी कम होती है और जब उस ध्यान को हटाने के लिए कोई हीला हाथ आ जाये तो फिर पूछना ही क्या है। यह तो हुआ उन मौजों का हाल जहाँ के जमीन्दार साहब जरा उदार हृदय हैं। जिन गांवों में ऐसे आदमी नहीं हैं वहाँ का हाल तो ऐसा है कि क्या कहें। मुदर्रिस पेड़ के नीचे बैठ जाता है और उस खुली हुई जगह में जाड़े की सर्दी और ग्रीष्म की गर्मी सब झेल डालता है। ऐसी हालत में वह मदरसा आस-पास के लोगों के मकबूल नहीं होने पाता और शिक्षा के फैलने में रुकावट डालता है। जब तक कि हरेक मदरसे के लिए सरकारी इमारत न हो जाय, शिक्षा के ढंग में सुधार होना बहुत मुश्किल है क्योंकि मुदर्रिस आम लोगों के सामने हँसी और मजाक के डर से शिक्षा के बेहतरीन तरीकों पर अमल नहीं कर सकता।

हमारी शिक्षा का तो यह हाल है और हमारे पब्लिक काम करने वाले इन मसलों की तरफ से बिलकुल गाफिल बैठे हुए हैं। कितने ऐसे पत्रकार या रिजेल्युशन पास करने वाले वकील हैं, जिन्होंने किसी जिले में दौरा करके यह पता लगाया हो कि कितने मदरसों में इमारत है और कितनों में नहीं। डायरेक्टर साहब की रिपोर्ट से जाहिर नहीं होता कि कितने फीसदी मदरसे सरकारी इमारत पर गर्व कर सकते हैं। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर साहबान जैसे लायक और तालीमयाफ्ता होते हैं, उनसे यह उम्मीद करना कि इन मसलों पर वह कुछ कर सकते हैं, एक बेकार की उम्मीद है।

❐

माह : दिसम्बर, 2013	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठक्रमांक	पाठ का नाम
2.12.2013	सोमवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		साम्प्रदायिक सद्भाव
3.12.2013	मंगलवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		विश्व विकलांगता दिवस
4.12.2013	बुधवार	उदयपुर	10	परीक्षामाला		संस्कृत
5.12.2013	गुरुवार	बीकानेर	10	परीक्षामाला		हिन्दी
9.12.2013	सोमवार	जयपुर	10	परीक्षामाला		विज्ञान
10.12.2013	मंगलवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		मानव अधिकार दिवस (उत्सव)

राष्ट्रीय गणित दिवस

गणित का रोचक शिक्षण

❒ अभिनव कुमावत

प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान के इस युग में गणित विषय का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान बनता जा रहा है क्योंकि उच्च शिक्षा में गणित विषय का बहुत ही महत्व है। अधिकांश विद्यार्थियों की राय गणित विषय के प्रति सकारात्मक नहीं है तथा बाल्यकाल से ही उनकी गणित विषय के प्रति रुचि नहीं रहती, इसका मुख्य कारण गणित विषय को नीरस एवं कठिन विषय मानना है। गणित का योग्य शिक्षक इस अवधारणा को काफी हद तक दूर कर सकता है। यदि प्राथमिक शिक्षा के समय ही विद्यार्थियों में गणित विषय के प्रति रुचि उत्पन्न कर दी जाये तो आगे चलकर गणित विषय उनका रुचिकर विषय बन जायेगा। छोटे बच्चों में गणित विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करने हेतु उनको रुचिकर एवं मनोरंजनात्मक तरीके से गणित विषय का अध्ययन करवाया जाना चाहिए। यहां पर कुछ ऐसे ही तरीकों को बताया जा रहा है जिसकी सहायता से बाल्यकाल में ही गणित विषय के प्रति रुचि उत्पन्न की जा सकती है।

गिनती की तालिका का चमत्कार

यदि शिक्षक चाहे तो एक से सौ तक की गिनती की तालिका की सहायता से भी बच्चों में रोचकता उत्पन्न कर सकता है। गणित की इस सामान्य तालिका की सहायता से कई ऐसी गणनायें बताई जा रही है जिनके द्वारा बच्चों में इसके प्रति रुचि जागृत होगी।

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

ऊपर दी गई तालिका की सहायता से तालिका की संख्याओं में निम्न प्रकार की समानताओं को प्रदर्शित किया जा सकता है।

1. ऊपर की संख्या में नीचे की संख्या एक अधिक है।

   41 61 81 91
   ↓ ↓ ↓ ↓
   42 62 82 92
   ↓ ↓ ↓ ↓
   43 63 83 93

2. इसी प्रकार नीचे की संख्या से ऊपर की संख्या एक कम है।

   31 51 71
   ↑ ↑ ↑
   32 52 72
   ↑ ↑ ↑
   33 53 73

3. इसी प्रकार तालिका में बायी ओर की संख्या में दायीं ओर की संख्या 10 अधिक है।

   6 → 16 → 26 → 36
   8 → 18 → 28 → 38
   9 → 19 → 29 → 39

4. इसी प्रकार दायी ओर की संख्या में बायीं ओर की संख्या 10 कम है।

   54 ← 64 ← 74
   57 ← 67 ← 77
   58 ← 68 ← 78

इस प्रकार गिनती की तालिका के प्रति बच्चों में रुचि उत्पन्न करने हेतु इन चारों तथ्यों को एक साथ स्थापित कर उनमें इसके प्रति रुचि उत्पन्न की जा सकती है।

1. ऊपर वाली संख्या एक कम होगी
2. नीचे वाली संख्या एक अधिक होगी
3. बायीं ओर की संख्या 10 कम होगी
4. दायीं ओर की संख्या 10 अधिक होगी

   36
   ↑
   27 ← 37 → 47
   ↓
   38

गुणन विधि को रोचक बनाना

विभिन्न संख्याओं का गुणनफल ज्ञात करना एक जटिल प्रक्रिया है तथा इस जटिलता के कारण ही बाल्यावस्था में इस प्रकार की गणनाओं के प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाती है। यदि गुणनफल की प्रक्रिया को रोचक तरीके से बताया जाए तो प्राथमिक स्तर पर ही बच्चों में इसके प्रति रुचि को उत्पन्न किया जा सकता है। यहां पर कुछ गणनाओं को इतने सरल माध्यम से समझाया जा रहा है कि वे गणनायें खेल के समान प्रतीत हो।

1. आधार संख्या 100 से कम वाली संख्याओं का गुणनफल ज्ञान करना।

   उदाहरण 92 × 96

   यदि इसकी गणना सामान्य तरीके से करेंगे तो समय लगेगा और एक जटिल प्रक्रिया से गुजरना पड़ेगा जिसके कारण बच्चों में इस प्रकार की गणनाओं के प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाती है।

   92 × 96
   552
   828 ×
   8832

   इन संख्याओं की गणनाओं को रुचिकर माध्यम से निम्न प्रकार कर सकते है–

   92 × 96
   92 ⤫ 8
   96 ⤫ 4
   88 / 32

   यहां पर नियमानुसार दोनों संख्याओं की आधार संख्या 100 से कम है। यहां पर 8×4 को गुणा किया गया है तथा इसी प्रकार 92 में से 4 को या 96 में से 8 का घटाया गया है। इस प्रकार दोनों संख्याओं का गुणनफल शीघ्रतापूर्वक एक खेल के रूप में प्राप्त किया गया है।

2. **आधार संख्या 100 से अधिक वाली संख्याओं का गुणनफल ज्ञात करना**

   जिस प्रकार 100 से कम वाली संख्याओं का गुणनफल घटाकर ज्ञात किया जाता है उसी प्रकार 100 से ज्यादा वाली संख्याओं की गणना जोड़ कर की जाती है।

   उदाहरण 107 × 105

   सामान्य रूप से

   107 × 105
   535

000 ×
107 ××
11235

रोचक विधि की सहायता से–

107 + 7
105 + 5
112 / 35

यहां पर भी नियमानुसार पहले 7 को 5 से गुणा किया गया है तथा उसके बार 107 में 5 या 105 में 7 को जोड़ा गया है। जो ऊपर दिये गये सामान्य तरीके से काफी सरल होने के साथ-साथ रोचक भी है।

3. आधार संख्या 1000 वाली संख्याओं का गुणनफल ज्ञात करना–

998 × 996

सामान्य रूप से

998 × 996
5988
8982×
8982××
994008

रोचक विधि की सहायता में

998 – 002
996 – 004
994 / 008
= 994008

इस प्रकार किसी भी प्रकार की संख्याओं का गुणनफल रोचक तरीके से ज्ञात किया जा सकता है।

4. **किसी भी संख्या को 25 से गुणा करना**

किसी भी संख्या को 25 से सामान्य तरीके से गुणा करने में काफी समय लगता है लेकिन रोचक विधि की सहायता से गुणा किया जायेगा तो उसे शीघ्रतापूर्वक किया जा सकता है।

335 × 25

सामान्य रूप से

3335 × 25
1675
670×
8375

रोचक विधि की सहायता से

335 × 100
4
= 35500
4
= 8375

5. किसी भी संख्या को 125 से गुना करना

सामान्य रूप से

350 × 125
1750
700×
350××
43750

रोचक विधि से

350 × 125
350 × 1000
8
= 35000
8
= 43750

वर्गफल ज्ञात करना

प्राथमिक कक्षाओं में जब बच्चों को वर्गफल ज्ञात करने के लिये कहा जाता है तो बच्चे इसके प्रति कोई रुचि नहीं दिखाते है क्योंकि उन्हें विभिन्न संख्याओं का वर्गफल ज्ञात करना काफी कठिन लगता है। यहां पर वर्गफल ज्ञात करने की रोचक विधियों के बारे में बताया जा रहा है–

1. इकाई की संख्या का वर्ग
2. इकाई एवं दहाई की संख्या के गुणनफल का दुगना
3. दहाई की संख्या का वर्ग

उदाहरण 382

नियमानुसर–

(1) 8 × 8 = 64
(2) 3 × 8 = 24 × 2 = 48
(3) 3 × 3 = 9

इस प्रकार 38 का वर्गफल होगा

64
48
9
1444

उदाहरण– 152

नियमानुसार–

(1) 2 × 2 = 4
(2) 15 + 15 = 30 × 2 = 60
(3) 15 × 15 = 225

इस प्रकार 152 का वर्गफल होगा–

4
60
225
23104

इस प्रकार यदि प्राथमिक कक्षाओं में ही बच्चों में गणित विषय के प्रति रूचि जागृत कर दी जाये तो गणित विषय नीरस एवं कठिन के स्थान पर रूचिकर विषय बन जायेगा।

-5/279 एस.एफ.एस. अग्रवाल फार्म,
मानसरोवर, जयपुर-302020
मो. 8829075513

रामानुजन-हार्डी संख्या–इंग्लैण्ड के एक अस्पताल में जब रामानुजन का इलाज चल रहा था। हार्डी टैक्सी में बैठकर उन्हें देखने गए थे। रामानुजन की दशा देखकर द्रवित होकर हार्डी ने बातचीत की शुरुआत की-मैं जिस टैक्सी में आया उसका नम्बर 1729 = (13 × 19 × 7) बड़ा अरुचिकर और अशुभ-सा नम्बर जान पड़ता है, क्योंकि इस संख्या का एक गुणनखण्ड 13 है, और यूरोप में 13 को एक अशुभ संख्या माना जाता है।

लेटे-लेटे रामानुजन ने झट उत्तर दिया-नहीं हार्डी! यह तो एक अद्भुत एवं विलक्षण संख्या है। यह वह सबसे छोटी संख्या है जिसे घन संख्याओं के योग के रूप में दो प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है अर्थात्–

$1729 = 1000 + 729 = 10^3 + 9^3$

$1729 = 1 + 1728 = 1^3 + 12^3$

अर्थात् $1729 = 10 + 9 = 1^3 + 12$

हार्डी चकित रह गए।

1729 को अन्तःप्रज्ञा से देखने पर एक बात साफ हो जाती है कि रामानुजन ने घन के बारे में गहराई से चिन्तन किया और उन्होंने यह पाया कि 1729 को 1 + 1728 करें तो यह 1 और 12 का घन होगा और इस इकाई स्थान पर वे 1 और 8 पर विचार करके पहुँचे क्योंकि 1 का घन 1 तथा 2 का घन 8 होता है। $\therefore 1^3 + 12^3 = 1 + 1728 = 1729$ है।

फिर अन्तःप्रज्ञा से ही उन्होंने यह जाना कि 1729 को 1000 + 729 के रूप में लिख सकते हैं।

$\therefore$ 10 का घन 1000 और 9 का घन 729 होता है। क्योंकि 9 के घन के इकाई स्थान पर 9 ही आयेगा। इस प्रकार उन्होंने अपने विवेक का उपयोग करके सबसे छोटी वे संख्याएँ दो घनों के योगफल के रूप में दो अलग-अलग तरीके के

(शेष पृ. 41 पर)

अभिनन्दन सचिन तेन्दुलकर

कदमों और कलाई से रची कालजयी कविता और रुबाई

❒ प्रकाश पंड्या

समुद्र मंथन में 14 रत्न प्राप्त होने की कथा तो हम सबने सुनी है लेकिन 21वीं सदी की दूसरी दशाब्दी के तीसरे साल ने अपनी विदाई की बेला में मैदान से भारत रत्न देकर नया इतिहास रच दिया है। सवा अरब भारतवासियों के आँखों के तारे, दिलों की धड़कन और क्रिकेट के भगवान के रुप में लब्धप्रतिष्ठित विश्व के महानतम क्रिकेट खिलाड़ी सचिन रमेश तेन्दुलकर को उनके अतुलित योगदान और अपूर्व उपलब्धियों के लिए भारत सरकार ने देश के सबसे बड़े सम्मान ''भारत रत्न'' के लिए चुना है।

सचिन क्रिकेट का एक पृष्ठ नहीं अपितु क्रिकेट का एक महान ग्रंथ है जिसके हर पन्ने पर जिंदगी का हर पहलू जीने वाले इंसान के लिए सीख, नसीहत और परामर्श के रुप में इतना कुछ भरा पड़ा है कि उसे जीवन में अपनाने के लिए उम्र कम पड़ जाये । वे शिक्षा, साहित्य, कला, संगीत और नाना प्रकार से जीवन जीने वालों के लिए जिंदगी को संवारने और जीने लायक बनाने का ऐसा ग्रंथ है जिसकी इबारत पढ़कर और उसे अपनाकर अपने जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है । आईये, भारत के महान सपूत, सूरमा और सिरमौर इस सार्वकालिक महानतम खिलाड़ी के 24 वर्ष के क्रिकेट केरियर में समाए आदर्श शिक्षक, मेहनतकश विद्यार्थी और मौलिक रचनाकार के दर्शन करें-

दिलों पर क्रिकेट की अनमिट कविता

यदि सचिन के 24 साल के क्रिकेट केरियर को साहित्य की दृष्टि से देखा जाये तो उन्होंने अपने इस युग में एक ऐसी मिसाल बनाई जो किसी रचनाकार के लिए आदर्श मानी जा सकती है । उन्होंने साबित किया कि कविता हो गजल, गीत हो या नज्म, रुबाई हो या छंद केवल कागज कलम पर ही नहीं लिखी जा सकती इसे तो क्रिकेट के मैदान में जिस बाईस गज की सीमा को पिच और कुछ गज के दायरें को जिसे क्रीज कहा जाता है उस पर खड़े होकर कलाई और कदमों से भी लिखा जा सकता है । चौबीस साल के अपने क्रिकेट युग में सचिन ने कलाई और कदमों से जो कविता लिखी जो गजल रची और जिस रुबाई को उन्होंने अपनी दमदार कलाई से लोगों के दिलों में लिखा वह

किसी साहित्यकार अथवा शायर की दिल से निकले अलफाजों से कम नहीं । उनके बल्ले से जो गेंद सीमा रेखा तक पहुंचती थी तब वह निर्जीव गेंद के रुप में अस्सी मीटर अथवा उससे ज्यादा का फासला तय नहीं करती थी बल्कि किसी ने किसी रुप में एक रचना को जन्म देती हुई दर्शकों चाहे वे क्रिकेट प्रेमी न भी हो तब भी उनके दिलों में अंकित होती रही है।

पिता का आदर्श, गुरु का मन्त्र

विदाई के लम्हों में सचिन द्वारा भावुकता के साथ अपने को संभालते हुए दिये गये वक्तव्य में वर्तमान पीढ़ी के लिए उस कथन को आत्मसात करना किसी समर्थ गुरु के अमृत वचनों से कम नहीं होगा जिसमें उन्होंने अपने यशस्वी जीवन में अपने दिवंगत पिता, वृद्धा मां और जीवनसंगिनी से मिले सहयोग के साथ-साथ इस सार्वभौम सत्य को हमारे सामने रखा कि उनके पिता ने 11 साल की उम्र में उनसे कहा था- चैज योर ड्रीम बट नोट फाइन्ड शार्टकट । आज की पीढ़ी के लिए सचिन का यह कथन संजीवनी से कम नहीं । अपने 37 वें जन्मदिन पर एक न्यूज चैनल के साथ सचिन ने एक महत्वपूर्ण बात कही थी जो आज भी दिल में आदर्श रुप में गुंजती है । साक्षात्कार में एक सवाल में उन्होंने कहा था कि 10 साल की उम्र में जब उन्होंने बल्ला थामा और पहली बार मैदान पर उतरे तब उनके गुरु रमाकान्त आचरेकर ने कहा था- सचिन आज से तुम्हारे लिए गैम से बढ़कर जिंदगी में कुछ नहीं है । क्रिकेट को जीना है और क्रिकेट को ही आत्मसात करना है । लक्ष्य के प्रति ऐसी अविचल आस्था तो केवल एक आदर्श गुरु ही स्थापित कर सकता है ।

नवीन व्याकरण के रचयिता

किसी कलाकार अथवा जीवन के अन्य क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्ति के लिए सचिन का 24 वर्ष का क्रिकेट और सिर्फ क्रिकेट को समर्पित जीवन धन्य बनाने के लिए काफी है । एक शिल्पी निष्प्राण अनगढ़ पत्थर में केवल अपने कौशल और एकाग्रता से परिपूर्ण हुनर से ही प्राण फूंकता है। सचिन भी क्रिकेट के शिल्पी है। एक खेल समीक्षा में अपने समय के महानतम आलराउण्डर रहे कपिल देव ने कहा क्रिकेट में कई शॉट सचिन ने अपनी क्षमता से इजाद किये है। एक और महत्वपूर्ण बात जो अब से कई सौ साल पहले डार्विन ने अनुकूलन सिद्धांत के रुप में कहीं जिसे सचिन ने जीवन में व्यावहारिक रुप में जीकर साबित कर दिया। उन्होंने जब क्रिकेट में कदम रखा तब क्रिकेट का व्याकरण कुछ अलग था लेकिन 24 साल में क्रिकेट में जो कुछ परिवर्तन हुआ वे उस परिवर्तन के साथ स्वयं को भी योग्य बनाते चले गये। अपने क्रिकेट जीवन के आखिरी टेस्ट मैच के ठीक पहले एक साक्षात्कार में उन्होंने बड़ी महत्वपूर्ण बात कही-मुझे गर्व है कि, क्रिकेट केरियर में कई बदलाव आये और मैं उन बदलावों का गवाह बना । यानी उन्होंने परिवर्तन से मुंह मोड़ने के बजाये स्वयं को भी उस बदलाव के लिए मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक रुप से सदैव पूरी दृढ़ता के साथ तैयार रखा और चलते चले गये उस मंजिल की तरफ जिस पर पहुंचना हर किसी के बस की बात नहीं।

सचिन का 3डी सूत्र

सचिन ने अपने क्रिकेट केरियर में सार्वकालिक महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर और विवियन रिचर्ड्स को अपना आदर्श बनाया। एक साक्षात्कार में स्वयं सचिन ने कहा कि वे अपने क्रिकट जीवन में विवियन रिचर्ड्स की आक्रामकता और गावस्कर की एकाग्रता का समन्वय चाहते थे। उन दोनों महान बल्लेबाजों की खासयितों को उन्होंने अपने क्रिकेट केरियर में अपनाया। सचिन ने जीवन में कदम-कदम पर कामयाबी के लिए 3डी सूत्र का सूत्रपात किया। अपने एक साक्षात्कार में सचिन ने काबिलियत और कामयाबी दोनों के लिए 3डी डेडिकेशन, डिटरमिनेशन और डिसीप्लीन को हर पल जीने की अपनी कोशिश और इस कारण मिली कामयाबी को साझा किया।

(शेष पृ. 43 पर)

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

थार मरुस्थल की शान है बीकानेर

❒ करणी दान कच्छावा

राजस्थान के भौगोलिक परिवेश में बीकानेर जिले का महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः थार मरूस्थल की गोद में स्थित है बीकानेर जिला जो अपनी ऐतिहासक एवं सांस्कृतिक विशिष्टता के लिए जाना जाता है। बीकानेर की स्थापना 525 वर्ष पूर्व जोधपुर के महाराजा राव जोधा के पुत्र राव बीका ने बैशाख शुक्ल द्वितीया वार शनिवार संवत 1545 (3 अप्रैल 1488) के दिन की थी। स्थापना के सम्बन्ध में निम्न दोहा प्रसिद्ध है–

पन्दरै सौ पैंताळवै, सुद वैशाख सुमेर,
थावर बीण थरपियो,बीके बीकानेर।

रजवाड़ों एवं रियासत कालीन दौर की बात करें तो राव बीका से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक कुल 22 राजाओं ने यहाँ शासन किया। महाराजा गंगासिंह बीकानेर के 21वें महाराजा थे और उनके शासन काल में बीकानेर का सर्वतोमुखी विकास हुआ। महाराजा गंगासिंह दूरदृष्टि सम्पन्न नरेश थे जिनके व्यक्तित्व में अनुशासन एवं कर्मठता सहज ही में दिखाई देती थी। उनका अंग्रेजी सत्ता के साथ मधुर सम्बन्ध थे और देशी राजाओं के संगठन 'नरेन्द्र मण्डल' के तो वे संस्थापक एवं ताजिन्दगी मुखिया रहे। बीकानेर में विश्वविद्यालय की स्थापना इन्हीं के नाम से की गई।

राजस्थान का सर्वाधिक उपजाऊ, अन्न का कटोरा कहलाने वाला जिला गंगानगर आप ही ने बसाया था। बीकानेर नगर के विकास की संभावना को देखते हुए नारियल के बदले जमीन के पट्टे देकर बसाया गंगाशहर बीकानेर शहर का उपनगरीय क्षेत्र है जिसे पहली शहरी कॉलोनी कहा जा सकता है। अन्तिम 22वें महाराजा सादुलसिंह ने रियासतों के भारत गणतंत्र में विलय के प्रस्ताव पर सर्वप्रथम हस्ताक्षर किए थे जिसकी प्रशंसा राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने उनकी अश्वारूढ़ मूर्ति के लोकापर्ण समारोह में थी। यह प्रशंसा जूनागढ़ के पास स्थित उनकी विशाल मूर्ति के प्लेटफार्म पर उत्कीर्ण है।

बीकानेर का सांस्कृतिक एवं सामाजिक

जूनागढ़ किला, बीकानेर

स्वरूप बड़ा अनुकरणीय है। यह नगर अपने साम्प्रदायिक सौहार्द, भाईचारे एवं गंगा–जमुनी संस्कृति के कारण पूरे देश में पहचान रखता है। विख्यात शायर अजीज आजाद का शेर इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध है–

सारा का सारा जहर उतर जाएगा
तुम दो दिन मेरे शहर में रहकर तो देखो।

पर्यटन की दृष्टि से भी बीकानेर का अपना महत्व है। यहाँ के गढ़–कंगूरे, हवेलियाँ, कला, संस्कृति, धार्मिक स्थल सैलानियों को अपनी ओर आकृष्ट करने वाले हैं।

बीकानेर जिला 27°11' व 29°03', उत्तरी अक्षांश एवं 71°24' व 74°22' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसका क्षेत्रफल 30247.90 वर्ग किमी. है। इसकी सीमा 6 जिलों क्रमशः श्री गंगानगर, हनुमानगढ़, नागौर, जैसलमेर, जोधपुर एवं चूरु को छूती है। बीकानेर की सीमा पाकिस्तान से भी लगती है। यहाँ की जलवायु शुष्क है। गर्मियों में धूल भरी आंधियां चलती हैं और तापमान 50° नजदीक पहुँचने लगता है। सदियों में पारा जमाव बिन्दु तक सफर कर लेता है।

बीकानेर जिले की वनस्पति में खेजड़ी, रोहिड़ा, बेर, घास, बबूल, कीकर इत्यादि प्रमुख हैं। नहर आ जाने के कारण अब शीशम, पीपल, नीम, वट, सरेस, सफेदा आदि के वृक्ष यहाँ मिलने लगे हैं। खेजड़ी की सांगरी और सांगरी की स्वादिष्ट सब्जी व अचार एवं मिठाई व नमकीन के लिए बीकानेर को जाना जाता है। कहीं भी चले जाइये आपको बीकानेर मिष्ठान भण्डार का बोर्ड जरूर मिल जाएगा। यहाँ के रसगुल्ले, भुजिया, पापड़, बड़ी की मांग पूरी दुनिया में रहती है। यहाँ फोग, बुई, पाला, मूंज व काना कुल की घास व झाड़ियां भी पाई जाती है। फोगले के रायते का स्वाद बीकानेर में ही लिया जा सकता है। फोग की बात पर एक अन्तर्कथा याद आ रही है। बीकानेर के छठे महाराजा राय सिंह बहुत विद्वान एवं रण कौशल में माहिर व्यक्ति थे। एक बार दिल्ली के मुस्लिम बादशाह अकबर के पक्ष में उन्हें दक्षिण भारत में युद्ध संचालन हेतु जाना पड़ा। उस प्रवास के दौरान के दौरान एक दिन वे जंगल में से गुजर रहे थे कि अचानक एक फोग की झाड़ी उन्हें दिखाई दी। उसे देखकर वे अत्यन्त भावुक हो गए, परदेश में स्वदेशी वस्तु दिखाई जो दे गई थी। कहते हैं कि महाराजा ने फोग की उस झाड़ी को गले से लगाया और तत्काल एक दोहा रच दिया–

तू स्वदेशी रूँखड़ो अे परदेसी लोग।
म्हांने अकबर तेड़िया, तू क्यों आयो फोग।।

बीकानेर के लोगों को अपनी धरती और अपने लोगों तथा कला, संस्कृति से बड़ा लगाव है। यहाँ के लोगों को बाहर जाकर लाख मिले, तो नहीं जाएंगे यहाँ के हजार से गुजारा कर लेंगे। मातृभूमि से आत्मीय प्रेम है बीकानेर वासियों को।

बीकानेर की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार इस प्रकार है : पुरूष 1243916; महिला 1123829; कुल 2367745 एक सौ वर्ष पूर्व 1911 में बीकानेर की कुल जनसंख्या महज 206770 थी जिसके मुकाबले अब 1045 प्रतिशत की वृद्धि हो गई है। उस समय शहर परकोटे में बसा हुआ था। अब तो शहर से सटी पचासों आवासीय कॉलोनियां हो गई हैं तथा ग्रामीण क्षेत्रों में भी बहुत विस्तार हो गया है। बीकानेर नगर में नगर निगम तथा नगर विकास न्यास है। नोखा, देशनोक व श्री डूँगरगढ़ में नगर पालिकाएँ काम कर रही हैं। बीकानेर जिले में बीकानेर, नोखा, कोलायत, लूणकरणसर, श्री डूँगरगढ़, खाजूवाला, पूगल एवं छतरगढ़ तहसीले हैं।

बीकानेर संसदीय क्षेत्र काफी व्यापक है

जिसकी सीमाएँ श्रीगंगानगर, नागौर एवं चूरू जिलों से लगती हैं। राज्य विधानसभा में 200 स्थानों में बीकानेर से बीकानेर शहर (पूर्व), बीकानेर शहर (पश्चिम) नोखा, श्री कोलायत, लूणकरणसर, खाजूवाला एवं श्री डूँगरगढ़ इस प्रकार कुल 7 क्षेत्र आते हैं। बीकानेर की समग्र साक्षरता दर 65.92 है। इनमें पुरूष व महिला साक्षरता दर क्रमशः 76.90 एवं 53.77% है।

बीकानेर शिक्षा की दृष्टि से काफी सम्पन्न है। राज्य के प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा के मुख्यालय यहीं है। यहाँ उप निदेशक कार्यालय भी हैं जिसके अन्तर्गत बीकानेर, श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिले आते हैं। यहाँ अकादमिक विश्वविद्यालय, पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, कृषि विश्वविद्यालय एवं तकनीकी विश्वविद्यालय है। यहाँ का पी.बी.एम. अस्पताल देशभर में विशिष्ट पहचान रखता है। सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज, उच्च शिक्षा अध्ययन संस्थान (टी.टी. कॉलेज), सादुल स्पोटर्स स्कूल, अभियांत्रिकी महाविद्यालय सहित विभिन्न शिक्षण संस्थाएँ बीकानेर को नाम प्रदान करने वाली है। बीकानेर के महत्वपूर्ण पर्यटन धार्मिक एवं दर्शनीय स्थल इस प्रकार है-

1. देशनोक : देशनोक करणी माता के मन्दिर के लिए प्रसिद्ध है। यह मंदिर स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। मन्दिर में सैकड़ों चूहे, जिन्हें सम्मानपूर्वक काबा कहा जाता है, विचरण करते हैं। यहाँ प्रति वर्ष चैत्र व आश्विन में नौ दिन मेला लगता है। जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु माँ के धोक लगाने पहुँचते हैं। देशनोक बीकानेर से दक्षिण में जोधपुर-अजमेर हाई मार्ग पर जिला मुख्यालय से 30 किमी दूर है।

2. श्री कोलायत : बीकानेर से लगभग 50 किमी जैसलमेर राजमार्ग पर स्थित श्री कोलायत सांख्य योग के प्रणेता महर्षि कपिल की तपोभूमि है। यहाँ 52 घाट का तालाब है। यहाँ निज मन्दिर के अलावा अनेक सुन्दर मन्दिर एवं उपासना स्थल है। प्रति वर्ष कार्तिक पूर्णिमा के दिन भव्य मेला लगता है जिसमें देश भर से श्रद्धालु आते हैं।

3. गजनेर : बीकानेर से 30 किमी जैसलमेर राजमार्ग पर स्थित गजनेर में स्थित झील, महल, वन्य जीव अभयारण्य, पक्षियों का कलरव, राहगीरों का ध्यान सहज ही में आकृष्ट करते हैं। यहाँ पिकनिक पार्टियाँ रखने लोग आते रहते हैं। यहाँ भव्य मन्दिर भी हैं। झील में नौका विहार की सुविधा भी है।

4. मुकाम : नोखा तहसील के अन्तर्गत स्थित मुकाम गाँव बिश्नोईयों का तीर्थ स्थान है। यहाँ गुरुदेव जम्भेश्वर महाराज का भव्य मन्दिर है। मन्दिर में समाधि स्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष दो बार मेला आयोजित होता है जिसमें देश के कौने-कौने से हजारों श्रद्धालु शरीक होते हैं। (कृपया अंतिम मुख पृष्ठ अवलोकन करें। -व.सं.)

5. कोडमदेसर : बीकानेर से 24 किमी दूर जैसलमेर राजमार्ग पर स्थित कोडमदेसर में कोडाणा भैरवनाथ का ऐतिहासिक मन्दिर है। यहाँ तालाब भी है। प्रति माह शुक्ल पक्ष की तेरस-चवदस के दिन यहाँ मेला लगता है। सुविधा सम्पन्न धर्मशालाएँ भी यहाँ स्थित हैं।

6. श्री लक्ष्मीनाथ मन्दिर : नगर सेठ के रूप में जाने जाते जाते हैं श्री लक्ष्मीनाथ मन्दिर में विराजित विग्रह। अपार श्रद्धा एवं विश्वास का केन्द्र है यह मन्दिर। लक्ष्मीनाथ जी के नाम से इस मन्दिर को जाना जाता है। बड़े सवेरे से लेकर आधी रात तक पूजा, अर्चना का दौर चलता रहता हे। यह मन्दिर नहीं, मन्दिर काम्पलेक्स है जहां सभी हिन्दू देवी देवताओं के छोटे-मोटे मन्दिर हैं। यहाँ एक विशाल पिंजरापोल (गौशाला) भी है।

7. भाण्डासर जैन मन्दिर : शिल्प सौन्दर्य हेतु विख्यात भाण्डासर जैन मन्दिर में सोने व शीशे का अद्भुत काम हुआ है। बहुत श्रद्धा इस मन्दिर के प्रति है। भाण्डासर जैन मन्दिर एवं लखमीनाथजी के मन्दिर के अलावा बीकानेर शहर में शिवबाड़ी का शिव मन्दिर, धूणीनाथजी का मन्दिर, नागणेची माताजी के मन्दिर, सुजानदेसर में बाबा रामदेवजी का मन्दिर, भीनासर में मुरली मनोहरजी का मन्दिर, उदयरामसर में श्रीगणेश धोराधाम, गंगाशहर में गोपेश्वर महादेव मन्दिर तथा आचार्य तुलसी का समाधि स्थल नैतिकता का शक्तिपीठ सब दर्शनीय है। यहाँ प्रतिदिन बड़ी संख्या में भक्तजन धोक देने पहुँचते हैं।

8. देवीकुण्ड सागर : स्काउट-गाइड के प्रशिक्षण केन्द्र एवं राजा महाराजाओं की छतरियों के लिए विख्यात देवी कुण्ड सागर बीकानेर से 7 किमी दूर नापासर-सींथल मार्ग पर स्थित है। यहाँ एक तालाब है। छतरिया शिल्प व सौन्द्रय की जीवन्त उदाहरण है।

9. राजकीय संग्रहालय : सर्किट हाउस के पास गंगा गोल्डन जुबली संग्रहालय (म्यूजियम) के नाम से विख्यात इस संग्रहालय में इतिहास, पुरातत्व, शस्त्र, कला, संस्कृति आदि से जुड़ी वस्तुओं को दर्शनार्थ रखा हुआ है।

10. सूरसागर झील : बीकानेर के जूनागढ़ के आगे स्थित है सूरसागर झील। वर्षों गन्दे पानी के संग्रह स्थल के रूप में रही यह झील अब वापिस अपने मूल स्वरूप में आ गई है। स्वच्छ जल में नौका विहार की सुविधा भी उपलब्ध है। रात्रि में रंग बिरंगी रोशनी के मध्य फव्वारे दर्शकों का मन मोह लेते हैं।

11. राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र (केमल फार्म) : बीकानेर से लगभग 8 किमी दूर जोड़ बीड़ में स्थित यह केन्द्र देश में बीकानेर को पहचान दिलाता है। यहाँ ऊँटों की विभिन्न नस्लों पर अनुसंधान होता है।

12. ऊँट महोत्सव : बीकानेर के पर्यटन में यहाँ आयोजित होने वाले उँट महोत्सव का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। सामान्यतः जनवरी माह में यह आयोजन सम्पन्न होता है। वर्तमान में यह आयोजन जामसर-मालासर के पास लडेरा गाँव में किया जाता है। इससे पूर्व बीकानेर जिला मुख्यालय पर स्थित डॉ. करणीसिंह स्टेडियम में रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया जाता है जिसमें बड़ी संख्या देशी-विदेशी सैलानी भाग लेते हैं। ऊँट महोत्सव में ऊँट विभिन्न करतब दिखाकर दर्शकों का मन मोह लेते हैं।

इस प्रकार थार मरुस्थल की गोद में बसा बीकानेर जिला अपनी शानदार विरासत एवं अद्भुत उपलब्धियों के कारण न केवल देश में ही अपितु पूरे संसार में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि 'बीकानेर क्या है और बीकानेर में क्या है' यह जानने के लिए यह शब्द चित्र तो मात्र एक सीढ़ी का काम कर सकता है। यह जानने के लिए तो आदरणीय पाठक महोदय आपको बीकानेर आना होगा। आप जरूर बीकानेर आइएगा। बीकानेर यहां आने वाले हर व्यक्ति का स्वागत करने के लिए हरदम तैयार मिलेगा।

(लेखक एम.ए. (इतिहास) में गोल्ड मेडलिस्ट हैं)
-शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
जिशिअ (प्रा.शि.) बीकानेर
मो. 9214633947

हमारे संस्थान

राजकीय सेठ आनन्दी लाल पोद्दार मूक बधिर संस्थान, जयपुर

❒ योगेन्द्र सिंह नरुका

मूक-बधिर है तो क्या हुआ,
हम नहीं अंधमति मंद है।
खेल खान ज्ञान कर कौशल,
आनंदी के आनंद है।।

कुछ इसी तरह के भाव लिए राजकीय सेठ आनन्दी लाल पोद्दार मूक बधिर संस्थान, जयपुर के विद्यार्थी संस्थान में अध्ययन, व्यावसायिक कौशल का ज्ञान प्राप्त करके समाज के सृजनशील, सुयोग्य नागरिक के दायित्वों का निर्वहन करते हैं।

इस विशेष संस्थान की स्थापना सर मिर्जा इस्माइल की प्रेरणा एवं नवलगढ़ के उद्योगपति राजा रामदेव पोद्दार के पितृ प्रेम की स्मृति में दिनांक 7 जुलाई, 1945 को की गई। संस्थान परिसर में ही 7 दिसम्बर, 1974 में भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री बी.डी. जत्ती ने आनन्दी लाल वयस्क मूक बधिर व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र की आधारशिला रखी। आज यहां काष्ठकला, चित्रकला, सिलाई व कम्प्यूटर का प्रशिक्षण विशेष विद्यार्थियों को प्रदान किया जाता है जिससे कि वह स्वावलम्बन पूर्ण जीवनयापन कर सके।

संस्थान परिसर में ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का गुड़ियाघर भी स्थापित है, जिसे देखने देशी-विदेशी पर्यटक वर्ष भर आते रहते हैं। गुड़ियाघर में देशी-विदेशी गुड़ियाओं (डॉल्स) का अनूठा संग्रह है। इस गुड़ियाघर की आधारशिला भगवानी बाई सेखसरिया के नाम पर 7 दिसम्बर 1974 में श्री कांति कुमार पोद्दार, मुम्बई शेरिफ ने रखी थी जिसका उद्घाटन 7 अप्रेल 1979 को राजस्थान प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री भैरोंसिंह शेखावत ने किया।

शैक्षणिक दृष्टि से संस्थान में वर्तमान में कक्षा पूर्व प्राथमिक प्रथम से कक्षा बारहवीं तक श्रवण बाधित विद्यार्थियों हेतु सह-शिक्षण अध्ययन व्यवस्था है।

वर्ष 1981-1982 से इस संस्थान में उच्च प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा का प्रारम्भ हुआ जो क्रमशः 1997-1998 में माध्यमिक व 2005-2006 में उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा का मूक बधिर बालकों के लिए एक प्रमुख केन्द्र बन गया। यहां उच्च माध्यमिक स्तर पर बोर्ड विषय-राजनीति विज्ञान, लोक प्रशासन, चित्रकला व हिन्दी है। इस वर्ष (2013-14) से इतिहास विषय को भी प्रारम्भ किया जा रहा है। संस्थान में कम्प्यूटर शिक्षण हेतु कम्प्यूटर लैब स्थापित है जहां विद्यार्थियों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण वर्ष पर्यन्त दिया जाता है।

इस संस्था में राजस्थान सरकार द्वारा वर्ष

1996 में छात्र छात्रावास का आरम्भ किया गया व 2 अक्टूबर 2003 में राजस्थान के तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री बी.डी. कल्ला द्वारा छात्रा छात्रावास का आरम्भ व उद्घाटन किया गया।

इसी क्रम में यशवंत कंवर रणजीत सिंह भण्डारी फाउण्डेशन के प्रबन्ध न्यासी व भामाशाह श्री एस.एस. भण्डारी द्वारा छात्र छात्रावास के द्वितीय तल का निर्माण करवा कर सविता-रणजीत सिंह भण्डारी छात्रावास नामांकरण किया गया। इसी तरह श्री पुरुषोत्तम सेवा संस्थान के प्रबन्ध न्यासी व भामाशाह द्वारा छात्रा छात्रावास के द्वितीय तल का निर्माण करवा कर जमना देवी-पुरुषोत्तम पारीक छात्रावास नामांकरण किया गया। दोनों ही छात्रावासों के द्वितीय तल का उद्घाटन 29 नवम्बर 2008 को राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल श्री एस.के. सिंह द्वारा किया गया।

संस्थान के विद्यार्थियों की प्रतिभा देखते ही बनती है। संस्थान के विद्यार्थी समय-समय पर राज्य व राष्ट्रीय स्तर के खेलों (बधिर खेल) में चुने जाते है। संस्थान की ही एक छात्रा प्रभा शाह आज भारत की जानी-मानी चित्रकार है तथा दिल्ली में रहती है।

यहां के विद्यार्थी समय-समय पर सरकारी व गैर सरकारी सेवाओं में चयनित होकर संस्थान का मानवर्धन करते रहते हैं। संस्थान के शिक्षक अपने शैक्षणिक कौशल में दक्षता के साथ-साथ मानवीय करुणा व सहृदयता से भी परिपूर्ण है। यहां के शिक्षक श्री प्रबुद्ध कुमार शर्मा (व्याख्याता), श्रीमती अन्जू श्रीवास्तव (वरिष्ठ अध्यापक) व श्री कैलाश चन्द कुमावत (वरिष्ठ अध्यापक) को क्रमशः 2009, 2010 व 2011 में राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान प्राप्त हो चुका है। वहीं संस्थान के चित्रकला व्याख्याता श्री योगेन्द्र सिंह नरुका 'फूलैता' राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय कला शिविरों में भागीदारी निभाने के साथ-साथ स्काउट-गाइड के क्षेत्र में राज्यपाल पुरस्कार, राष्ट्रपति पुरस्कार व नवोदित संस्कृत कवि के रूप में दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा सम्मानित हो चुके हैं। हाल ही में संस्थान की वरिष्ठ अध्यापिका श्रीमती प्रीति जैन को राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान-2013 से सम्मानित किया गया है।

यहां पर मूक बधिर विद्यार्थियों को विशेष शिक्षकों द्वारा सांकेतिक भाषा (साईन लैंग्वेज) में अध्ययन-अध्यापन करवाया जाता है व श्रवण व वाणी प्रशिक्षण नियमित रूप से दिया जाता है। वर्तमान में संस्थान में 620 के लगभग विद्यार्थी शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त कर लाभान्वित हो रहे हैं। संस्थान का वर्ष 2012-13 का बोर्ड परीक्षा (कक्षा 10 व कक्षा 12) परिणाम शत-प्रतिशत रहा है।

संस्थान में प्रतिवर्ष 'फोर्टिज' अस्पताल द्वारा समस्त विद्यार्थियों का निःशुल्क दाँत व आँखों का परीक्षण किया जाता रहा है। पिछले वर्षों में 'स्टार की' फाउण्डेशन द्वारा 500 विद्यार्थियों की श्रवण जांच व श्रवण सहायक यंत्र वितरित किये गये। सुसान डेल फाउण्डेशन,

अक्षय पात्र व दीप शिक्षा समिति के सहयोग से समस्त विद्यार्थियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

संस्थान में सभी विद्यार्थियों हेतु निःशुल्क शिक्षण एवं छात्रावास आवासियों हेतु निःशुल्क आवासीय व भोजन व्यवस्था है इसके साथ ही मिड-डे-मील के साथ 200 ग्राम दूध/छाछ प्रतिदिन यशवंत रणजीत भण्डारी फाउण्डेशन, जयपुर के ट्रस्टी श्री एस.एस. भण्डारी के द्वारा निःशुल्क प्रदान किया जाता है।

संस्थान में गरीब व प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति की सुविधा भी उपलब्ध है। विशेष बच्चों की सहायतार्थ इच्छुक दानदाता संस्थान से संपर्क कर दान भी कर सकता है। दान राशि आयकर अधिनियम 80-जी के तहत आयकर मुक्त है। इसके लिए संस्थान दान राशि की रसीद दानदाता को उपलब्ध करवाता है।

संस्थान में हिन्दुस्तान कोका-कोला, जयपुर के सहयोग से वर्षा जल संचयन परियोजना भी संचालित है जिसके माध्यम से वर्षा जल का संचयन कर भूमिगत जल के स्तर को सुधारा जाता है।

संस्थान की भावी योजनाओं में श्रवण बाधितों के वैवाहिक परिचय सम्मेलन का आयोजन, रोजगार दिलवाने में सहायता व प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु विशेष कक्षाओं का संचालन है।

भारत रत्न मदर टेरेसा के पावन चरणों की धूली से लाभान्वित हो चुका यह संस्थान विशेष शिक्षा में दिनों-दिन नवीन आयाम स्थापित कर रहा है।

आनंद मूक प्रेम है, बधिर प्रकृति बयार।
शान्ति संकेत स्वागत, मूक-बूधिर परिवार।।

संस्थान से संपर्क कैसे करें :-
राजकीय सेठ आनन्दी लाल पोद्दार
मूक बधिर संस्थान
त्रिमूर्ति सर्किल, जवाहर लाल नेहरु मार्ग,
जयपुर (राज.) 302004
दूरभाष :
0141-2619359, 2614870 (संस्थान)
0141-2601806 (छात्र छात्रावास)
0141-2614459 (छात्रा छात्रावास)
-व्याख्याता (चित्रकला)
रा.सेठ आनंदी लाल पोद्दार मूक बधिर संस्थान, जयपुर
मो. 9461627191

पाठ योजना

रचना कार्य में मौलिकता के विकास हेतु कथा पाठों की भूमिका

❒ सुरेन्द्र माहेश्वरी

भाषा शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों में ''मौलिकता'' का उद्देश्य विशेष महत्व रखता है भाषा की विभिन्न विधाओं के शिक्षण में मौलिकता के विकास हेतु अवसर मिलते हैं फिर भी'' कथा पाठों'' का इस दिशा में सर्वाधिक महत्व है कहानी, संवाद, नाट्यांश, नाटक, उपन्यास, बोधकथा, लघुकथा, एंकाकी आदि साहित्यिक विधाओं में मौलिकता के उन्नयन हेतु अवसरों की अधिकता रहती है। आवश्यकता इस बात की है कि भाषा शिक्षक कथा पाठों में शिक्षण के समय कौनसी युक्तियां प्रस्तुत करें कि बालक की मौलिक उद्भावनाओं को संबल मिल सके। बालक की निजी कल्पनाएं, उसकी स्वनिर्मित रचनाएं, तथा स्वानुभूत विचारों व भावों को संबल मिल सके, शिक्षक के लिए यह खोज आवश्यक हैं।

वर्तमान युग में उच्च शिक्षा प्राप्ति के बाद बालक को साक्षात्कार, चर्चा, परिचर्चा,भाषण, वार्तालाप तथा समूह चर्चा में अपनी निजी राय का उपयोग उसके लिए अत्यधिक महत्व का होता है। साक्षात्कार के अवसर पर सोची समझी रीति परम्परा से हटकर बालक जब खोज पूर्ण निजी मौलिक उद्भावनाओं को सकारात्मक स्वरूप प्रदान कर स्वयं को प्रस्तुत करेगा तभी उसे सफलता अर्जित होगी।

सामान्तयतः शिक्षक कथा-पाठों को भी गहन अध्ययन निष्ठ पाठों की तरह पढ़ा कर इतिश्री मान लेता है जबकि कथा-पाठों में निहित प्रासंगिक घटनाओं, संवेदनात्मक स्थितियों और घटनागतमोड़ के माध्यम से बालक के मौलिक विचारों को उत्प्रेरण दे सकता है। किन्तु ऐसा अवसर कक्षा शिक्षण के समय बालकों को नहीं मिलता फलतः बालक पुस्तक में लिखी लिखाई भाषा और उन्हीं स्थितियों को उगल देता है इससे केवल स्मृति को अवश्य बल मिल जाये किन्तु बालक की निजी उद्भावनाओं को स्पर्श नहीं मिल पाता। यहां एक कथा पाठ का उदाहरण प्रस्तुत कर प्रासंगिक विषय बिन्दु को स्पष्ट किया जा रहा है।

कथानक-

डॉ. सुदर्शन द्वारा लिखित ''हार की जीत'' कहानी में बाबा भारती नाम के एक साधु गांव के बाहर बने एक मंदिर में निवास करते थे। सभी गांव वालों की उन पर अटूट आस्था थी। बाबा के पास एक अति सुन्दर घोड़ा था जो रूप रंग चाल ढाल से सभी को प्रभावित करता था। उस घोड़े का नाम था ''सुल्तान''। बाबाजी नित्य प्रति 9-10 मील की सैर घोड़े पर बैठकर किया करते थे। उसी क्षेत्र में एक कुख्यात डाकु खडग सिंह भी रहता था। जब खडग सिंह को सुल्तान घोड़े की जानकारी मिली तो वह बाबाजी के मन्दिर में पहुंच गया। परस्पर चर्चाएं की। खडग सिंह ने जाते समय घोड़े को हथिया लेने की बात कह कर बाबा भारती के मन को उद्वेलित कर दिया। अब बाबाजी सदैव चिन्ता ग्रस्त रहने लगे।

एक दिन खडग सिंह ने अपाहिज का रूप धारण कर सड़क के किनारे पेड़ के नीचे कराहने लगा। बाबा भारती घोड़े पर सवार होकर उधर से निकल रहे थे। अपाहिज के कराहने की आवाज सुनकर वे रुके और अपाहिज से पूछा कि तुम कौन हो और कहां जाओगे। मैं रामलला गांव में वेद दीनानाथ जी का सौतेला भाई हूं। रामलला यहां से 3 मील दूरी पर है। कृपा कर आप मुझे अपने घोड़े पर बिठाकर मेरे गांव पहुंचा दे। बाबा भारती ने सहज ही उसे घोड़े पर बिठाकर लगाम थमा दी और स्वयं नीचे खड़े हो गये। ज्योंहि अपाहिज बने खडग सिंह ने अपने हाथों में लगाम थामी घोड़े को ऐसी लगाई वह दौड़कर बहुत दूर चला गया। बाबा भारती देखते रहे और समझ गये कि यह वही डाकू खडग सिंह है।

बाबा भारती ने आवाज लगाई। मैंने तुम्हें पहचान लिया है मेरी एक प्रार्थना सुनते जाओ, वह यह है। ''तुम इस घटना को किसी के सामने प्रकट मत करना''। खडग सिंह समझ नहीं पाया। उसने कहा बाबाजी आपको इससे क्या डर है। तब बाबा भारती ने जवाब दिया। ''लोगों को यदि इस घटना का पता लगा तो वे किसी गरीब

पर विश्वास नहीं करेंगे''। खडग सिंह यह बात सुनकर द्रवित हो गया। उसका हृदय परिवर्तन हुआ और उसी रात अंधेरे में चुपचाप बाबा भारती के मन्दिर के सूने आहते में घोड़े को बाँधकर आ गया। सुबह जब बाबा भारती ने घोड़े को देखा तो सहज ही उसके मुंह से निकल गया ''अब कोई गरीब की सहायता से मुंह नहीं मोड़ेगा।'' सम्पूर्ण कथा क्रम को निम्नांकित प्रासंगिक घटनाओं में विभक्त किया जा सकता है।

प्रासंगिक घटनाएं–

1. बाबा भारती के पास डाकू खडग सिंह का आना और वार्तालाप करना।
2. खडग सिंह द्वारा घोड़े को हथियाने की बात कहना और बाबा भारती का उद्वेलित होना।
3. खडग सिंह द्वारा अपाहिज का रूप धारण कर घोड़े को हथियाना।
4. बाबा भारती के अस्तबल में घोड़ा न देखकर आंसू निकालना।
5. खडग सिंह द्वारा घोड़े को देखकर प्रतिक्रिया व्यक्त करना।
6. बाबा भारती की घोड़े को देखकर प्रतिक्रिया व्यक्त करना।

शिक्षक द्वारा उक्त प्रासंगिक घटनाओं का स्पष्ट विश्लेषण करते हुए घटनागत मोड़ के प्रश्नों का उपयोग किया जाये तो बालक अपनी मौलिक उद्भावनाओं का प्रकाशन करते हुए निजी उत्तर प्रस्तुत कर पायेंगे। प्रश्नों का प्रकार इस प्रकार हो सकता है।

घटनागत मोड़ के प्रश्न–

1. यदि घोड़ा बोलता होता तो डाकू खडग सिंह के व्यवहार का क्या उत्तर देता ?
2. यदि बाबा भारती ने अपाहिज बने डाकू खडग सिंह को पहली बार में ही पहचान लिया होता तो बाबा भारती क्या कहते ?
3. यदि खडग सिंह बाबा भारती की सलाह को नहीं मानकर दूसरों को घटना की जानकारी दे देता तो क्या होता।
4. यदि खडग सिंह को अपाहिज बन घोड़ा हथियाने के नाटक को आप देख रहे होते तो खडग सिंह को क्या सलाह देते।
5. यदि खडग सिंह घोड़ा नहीं लौटाता।

प्रत्येक प्रासंगिक घटना पर जो मोड़ हैं वहां पर मौलिक उद्भावनाओं को विकसित करने हेतु स्थल है। बालकों से घटनागत मोड़ के प्रश्न पूछकर उनके मौलिक उत्तर प्राप्त किये जाएं। श्रेष्ठ उत्तरों की सराहना हो तथा अच्छे उत्तर प्रस्तुति हेतु प्रेरणा मिलेगी तो सहज ही मौलिकता के उद्देश्यों की पूर्ति संभव है।

उपयोजन पाठ–

किसी भी पाठ के माध्यम से विषय-वस्तु को विधा परिवर्तन के साथ प्रस्तुत करना ''उपयोजन'' पाठ कहलाता है। बालकों की मौलिक प्रतिभा को उजागर करने में उपयोजन पाठों की भूमिका भी श्रेयस्कर होती है। यदि किसी वर्षा ऋतु की कविता को पढ़ाने के बाद उसे ''वर्षा ऋतु का एक दिन'' शीर्षक से निबन्ध लिखाया जाए तो पठित ज्ञान का उपयोग विधा के रूप में हो सकेगा। इसी प्रकार स्वयं को बाबा भारती मानकर सम्पूर्ण घटनाक्रम को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिये। अन्य उदाहरण–

1. कहानी का अन्य शीर्षक क्या हो सकता है।
2. किसी घटना का वर्णन पढ़कर उस घटना को पत्र के रूप अभिव्यक्त करना।
3. कहानी को पात्रानुकूल संवाद पाठ के रूप में परिवर्तित करना।
4. किसी एक ही पात्र के मुंह से सम्पूर्ण घटनाक्रम को कहलाना।
5. पठित विषयवस्तु पर आधृत स्वरचित कविता का निर्माण कराना।
6. संवाद पठों की कहानी पाठ के रूप में परिवर्तित कराना।

सद्वृतियों का विकास–

प्रत्येक कथा पाठ मानवीय संवेदनाओं के साथ ही श्रम, सेवा, श्रद्धा, विश्वास, नैतिकता, देशभक्ति आदि जीवन मूल्यों से परिपूर्ण होता है। प्रश्नों, कथनों तथा चर्चाओं के माध्यम से इन गुणों को उभारने की आवश्यकता है। प्रस्तुत कहानी में मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण है। गरीबों के प्रति सहानुभूति, सेवा भावना, पशु प्रेम, जन कल्याण की भावना, समाज सेवा, नैतिकता आदि सद्वृतियों का प्राधान्य है। अब आवश्यकता इस बात की है कि इन मानवीय गुणों के प्रकाशन हेतु शिक्षक द्वारा ऐसी पद्धति प्रयुक्त की जाए की बालक संवेदन शील बनकर श्रेष्ठ नागरिकता की ओर उन्मुख हो सके।

कथा पाठों के पाठ रूप–

1. कथा-पाठ को मौखिक कथा कथन के रूप में पहला पाठ पढ़ाया जाए।
2. घटनागत मोड़ के प्रश्नों के आधार पर (कक्षा को वर्गों में विभक्त कर) रचना पाठ के रूप में दूसरा पाठ हो।
3. बड़ी कक्षाओं में उपयोजन पाठ के रूप में तीसरा पाठ भी संभव है।
4. गहन अध्ययन निष्ठ पाठ के रूप पढ़ाने की आवश्यकता हो तो पढ़ाया जाए।

कक्षा शिक्षण के समय बालकों की मौलिक अभिव्यक्ति को विकसित करने के लिए पर्याप्त स्थलों की खोज करते हुए छात्रों की क्रियाओं को अधिकतम संलग्न किया जाए तथा प्रश्नोत्तर की बहुलता के आधार पर घटनाक्रम को नवीन भावभूमि के निर्माण का अभ्यास दिया जाए तो बालक आगे जाकर अच्छा कहानीकार व कवि ही नहीं अपितु कुशल वक्ता के रूप में भी गतिशील होगा।

वर्तमान युग में जहां वैचारिक क्रान्ति का दौर चल रहा है साथ ही मानसिक दक्षता विकास की दिशा में युवा वर्ग अग्रसर हैं इस दृष्टि से भी बालक की लिखित व मौखिक रचना में मौलिकता का प्रादुर्भाव होना चाहिये।

–प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
कंवलियास (भीलवाड़ा)

निवेदन

शिविरा पत्रिका में प्रकाशन के लिए कृपया

- **आलेख भिजवाने से पूर्व उनका एक बार पुनः अवलोकन कर वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का निराकरण कर दें।**
- **रंगीन फोटोग्राफ भिजवाएं जिनके केप्शन अलग पृष्ठ पर लिखकर भिजवाएं।**
- **अपने अनुभव आधारित ठोस विचार मय स्वयं के फोटो व परिचय के भिजवाएं। –व.सं.**

पर्यावरण संरक्षण

आओ विद्यालय वाटिका लगाएं

❒ विष्णु कुमार गुप्ता

वायु ,जल, भूमि, वनस्पति, पेड़-पौधे, पशु, मानव सब मिलकर पर्यावरण बनाते हैं। प्रकृति में इन सबकी मात्रा और इनकी रचना कुछ इस प्रकार व्यवस्थित है कि पृथ्वी पर एक सन्तुलित जीवन चलता रहे।

मानव सहित समस्त जीवधारियों के समुचित विकास के लिए समृद्ध पर्यावरण का विशेष महत्व है। इसके पलट विगत कुछ वर्षो से मानव के आत्मघाती क्रियाकलापों एवं विलासिता पूर्ण जीवन शैली से पर्यावरण असंतुलन एवं पर्यावरण अवनयन विश्व स्तर पर दृष्टिगोचर हुआ है जिसके लिये विश्वस्तर, राष्ट्र स्तर, स्थानीय स्तर पर गहन विचार किया जा रहा है। वर्षो से पर्यावरण चेतना के साथ साथ पारम्परिक धारणा में बदलाव आया है कि पर्यावरण गुणवत्ता और आर्थिक विकास के बीच विरोध है किन्तु अब लोग मानने लगे हैं कि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। पर्यावरण पर वर्तमान में जो व जितना ध्यान दिया जा रहा है वह न तो नया है और न हीं पर्याप्त। पर्यावरण का विचार भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है।

शुद्ध पर्यावरण से ही स्वस्थ जीवन सम्भव है। आज भौतिक प्रगति के उन्माद में मनुष्य ने निर्ममतापूर्वक प्रकृति के चर और अचर जगत का इतना अधिक दोहन किया है कि पर्यावरण के समस्त घटक प्रदूषित हो गए हैं। मनुष्य के लालच और असंयम के कारण पर्यावरण प्रदूषण सम्पूर्ण सृष्टि के सामने काल बनकर खड़ा है और इसके संमुख मानव-जीवन अन्धकारमय दृष्टिगत होता है। मानव-जीवन के साथ साथ पृथ्वी को बचाने हेतु पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी सरकार, प्रशासन, सामाजिक संस्थाओं या व्यक्ति विशेष पर डालकर हम सभी अपने कतव्यों की इतिश्री मान लेते हैं। इसके विपरीत आज आवश्कता इस बात कि है कि जनता-जनार्दन में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनचेतना जाग्रत कि जाए और समाज-राष्ट्र के भावी नागरिकों अर्थात विद्यार्थियों को उनके प्रारम्भिक जीवन से ही पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाया जाए। विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना जाग्रत हो इसके लिए आवश्यक है कि हम उन्हें विद्यार्थी जीवन से ही प्रकृति के नजदीक लें जाए। विद्यार्थी प्रकृति को निकट से देखें, समझें और इसके महत्व को स्वीकार करें। ऐसा विद्यार्थी को केवल कक्षा कक्ष की चारदीवारी में बन्द करके सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करने से सम्भव नहीं होगा। विद्यार्थियों को पर्यावरणीय जिज्ञासाएं बढ़ेंगी और वह प्रकृति के अधिक निकट जाना चाहेगा। विद्यार्थियों की इसी जाग्रत चेतना के अन्तर्गत उन्हें विद्यालय में वनस्पति उगाने हेतु पौधारोपण के प्रति आकर्षित किया जा सकता है। पौधारोपण के श्रीगणेश सें ही विद्यालय परिसर में एक लघु विद्यालय वाटिका विकसित की जा सकती है।

ग्रामीण क्षेत्रों के साथ साथ शहरी क्षेत्रों के अधिकांश विद्यालयों में इतनी भूमि तो उपलब्ध रहती है जिसमें एक लघु वाटिका विकसित की जा सकें। जिन विद्यालियों में वाटिका हेतु पर्याप्त भूमि उपलब्ध नहीं है। वहां कक्षा-कक्षों के बाहर एक-एक फीट की छोटी क्यारियां विकसित की जा सकती हैं जिनमें सुन्दर व सुगन्धित पुष्पों वाले पौधें लगाए जा सकें। शिक्षालयों में शिक्षक-शिक्षार्थी के लिए शिक्षण-अधिगम का कार्य अधिक रुचिकर और मनोरंजक बने इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक और शिक्षार्थी सबसे पहले एक दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जाने। इसलिए विद्यालय में विद्यार्थियों को उनकी रुचि का कोई भी कार्य दिन में कुछ समय के लिए करने हेतु स्वतंत्रता दी जानी चाहिए और शिक्षक दूर से उनका अवलोकन-मूल्यांकन करें। बालक बचपन से ही मिट्टी में खेलना पसन्द करता है। वह मिट्टी के घर बनाता है, बिगाड़ता है, पौधों से खेलता है, रोपता है। प्रकृति मनुष्य की सखी है इसलिए मानव की संतान का प्रारम्भ से ही झुकाव वनस्पति की ओर रहता है। इसी सनातन प्रवृति के कारण श्रीराम वन में सीता को खोजते-खोजते इतने भावुक और अतिसंवेदनशील हो जाते हैं कि लक्ष्मण के समझाने पर भी वे अपनी अपहृत पत्नी सीता का पता लताओं और वृक्षों से पूछते हैं। कितनी संवेदनशील और हृदय को छूने वाली बात है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम पेड़ों को गले लगाकर उनसे सीता का पता पूछते हैं। वे सीता की खोज में पक्षियों, पशुओं और भौरों तक को अपना सहभागी मानकर अपना दुःख उनके सामने प्रकट करके स्वयं की व्यथा और पीड़ा को दूर करने का प्रयास करते हैं-

लछिमण समुझाए बहु भांति।
पुछत चले लता तरु पाति।
हे स्वग मृग हे मधुकर श्रेनी।
तुम्ह देखी सीता मृगनैनी।

-रामचरितमानस 3/30/8-9

विद्यालय में लघु विद्यालय वाटिका विकसित करने हेतु शैक्षिक सत्र के शुभारम्भ से ही जुलाई माह में विद्यार्थियों में एक विद्यार्थी-एक पौधा योजना प्रस्तावित की जा सकती है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक विद्यार्थी स्वयं या सामूहिक रूप से विद्यालय परिसर में उपलब्ध एक पौधा लगाएगा और उसकी सुरक्षा, संरक्षा और सिंचाई हेतु व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से उत्तरदायी माना जाएगा। विद्यार्थी पौधे की देखभाल विद्यालय समय से पूर्व मध्यान्तर में रिक्त कालांशों में अथवा विद्यालय समय की समाप्ति के पश्चात करेगा जिससे विद्यालय का और उसका स्वयं का अध्ययन कार्य बाधित नहीं होगा। असीमित शक्ति के अक्षय भण्डार विद्यार्थियों और युवाओं को उचित मार्गदर्शन मिले तो वे हमारे समाज और राष्ट्र की कायापलट कर सकते हैं क्योंकि विश्व की सभी क्रान्तियों की सफलता का मापदण्ड युवाओं की सहभागिता को ही माना गया है।

विद्यालय में योजनाबद्ध रूप से विद्यालय वाटिका विकसित करने हेतु इको क्लब का गठन किया जाए जिसका संयोजक स्वैच्छिक रूप से पर्यावरण में रुचि रखने वाले शिक्षक को बनाया जाए। संस्था प्रधान इको क्लब का संरक्षक बनकर सभी का मार्गदर्शन करें। इको क्लब के 20-25 सक्रिय सदस्य विद्यार्थियों में से ही मनोनीत किए जाएं जो विद्यालय वाटिका में पौधरोपण उनकी सुरक्षा एवं सिंचाई में आने वाली समस्याओं के समाधान में सहायता करेंगे और एक तरह से इस कार्यक्रम में समस्या निवारक का कार्य करेंगे। इको क्लब में विद्यालय के समस्त विद्यार्थियों को ही सदस्य बनाने का

प्रयास करना चाहिए और उन्हें सदस्य मानना चाहिए।

मानव ने अपने दृढ़ निश्चय से अनेकानेक असम्भव कार्यों को सम्भव कर दिखाया है। ऐसा ही दृढ़ संकल्प हम सभी अपने-अपने विद्यालियों के विद्यार्थियों को दिलाएं कि जहां तक सम्भव हो सके विद्यालय परिसर में ही निर्मित की जाने वाली विद्यालय वाटिका में एक पौधा अवश्य लगाए और उस विद्यालय में शिक्षा प्राप्ति की समाप्ति तक उस पौधे की देखभाल और सुरक्षा अवश्य करें। पौधरोपण हेतु पौधे राज्य सरकारें एवं कुछ संस्थाएं निःशुल्क प्रदान करती है। यदि शिक्षक अपने संकल्प एवं प्रेरणा से पर्यावरण संरक्षण के प्रति विद्यार्थियों की सोच और दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन ला देता है तो आने वाले वर्षों में भारत की परिस्थिति की संरचना जो वनों के विनाश से बिगड़ चुकी है निश्चित ही सन्तुलित हो जाएगी। वाटिका में पौधरोपण हेतु विद्यार्थियों के अतिरिक्त गांव या शहर के रुचिशील और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भी आमंत्रित किया जा सकता है। उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे भी विद्यालय वाटिका में अपने किसी प्रिय व्यक्ति में या पूर्वजों की स्मृति में पौधरोपण कर सकते हैं। उनके द्वारा लगाए गये पौधे की देखभाल और सुरक्षा का दायित्व विद्यालय परिवार का रहेगा और इसके बदले में वह व्यक्ति आर्थिक अनुदान (लगभग 300 रु. से 500 रु. तक) विद्यालय को देगा, जिससे वाटिका में आवश्यक खर्चों की पूर्ति हेतु धन उपलब्ध हो सकेगा। इससे वर्तमान में विद्यालय और समाज के मध्य जो एक अदृश्य-सी दूरी बन गई है वह समाप्त होगी।

पौधारोपण के लिए पर्यावरण चेतना जाग्रत करने हेतु हमारी सामाजिक धार्मिक आस्थाएं भी सहायक हो सकती हैं। इन धार्मिक मान्यताओं के कारण ही हम वटवृक्ष, पीपल, आँवला, अशोक, तुलसी, खेजड़ी, आम आदि वृक्षों एवं पौधों की पूजा करते हैं। गीता में कृष्ण स्वयं कहते हैं कि मैं कुसुमाकर (10/35) अर्थात् ऋतुओं में बसन्त मैं हूँ। कृष्ण तो अपने आपको सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष, अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां (गीता 10/26) बतलाते हैं। इसका कारण एक मात्र यही हो सकता है कि पीपल (अश्वत्थ) ही विश्व का एकमात्र ऐसा पौधा है जो निरन्तर 24 घण्टे पर्यावरण में ऑक्सीजन छोड़ता है।

विद्यालय परिसर में प्रस्तावित विद्यालय वाटिका के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर पौधारोपण हेतु योजनाएं विद्यालयों द्वारा समय, परिस्थिति, स्थान और अपनी सामूहिक सामर्थ्य के अनुसार बनाई जा सकती है। विद्यालय के बाहर विद्यार्थियों द्वारा पौधारोपण नजदीकी तीर्थस्थल, पर्यटक स्थल, नदी तालाब तथा खेल के मैदान के किनारे-किनारे गांव में स्थित चरनोट की भूमि (पशुओं के लिए आरक्षित चारागाह) शहर में किसी भी औद्योगिक परिसर के आसपास किया जा सकता है। श्रमदान के माध्यम से भी हम इन स्थलों पर विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों एवं नागरिकों के सहयोग से योजनाबद्ध रूप से पौधारोपण कर सकते हैं। पौधारोपण को स्वैच्छिक राष्ट्रीय कार्यक्रम घोषित करके विद्यार्थियों एवं युवा वर्ग के सहयोग से पूर्ण करने के लिए भारत की समस्त शैक्षणिक संस्थाओं में एक विद्यार्थी-एक पौधा योजना स्वैच्छिक रूप से लागू करने हेतु प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

-अध्यापक एवं इको प्रभारी
रा.उ.प्रा.वि., बीठन, जसवन्तपुरा (जालौर)
मो. 9414848022

(पृ. 33 का शेष)

व्यक्त की जाने वाली ज्ञात किया।

अब हम थोड़ा गहराई से चिन्तन करें तो ऋणात्मक पूर्णांकों में ऐसी संख्या 91 होगी।

$4^3 + 3^3 = 64 + 27 = 91$

$6^3+(-5)^3=216+(-125)=216-125=91$

$\therefore 91 = 4^3 + 3^3$

$91 = 6^3 + (-5^3)$

अब चूँकि हार्डी साहब ने रामानुजम् को 1729 की व्याख्या निम्न प्रकार की थी-

$1729 = 7 \times 13 \times 19$

इसमें एक गुणनखण्ड 13 आ रहा है जो यूरोप में अशुभ माना जाता है।

अब 7 तथा 13 का गुणनफल 91 हो रहा है एवं संख्या 19 के अंकों के क्रम को बदल दें तो 91 आ रहा है जो प्रथम दोनों संख्याओं के गुणनफल के बराबर है।

गौर से देखने पर कई बातें उभरकर सामने आ रही हैं, जैसे-$7 \times 13 = 91$, 91 संख्या 1729 का एक गुणनखण्ड है तथा 19 में अंकों के क्रम को उलटने पर 91 आ रहा है जो 1729 का गुणनखण्ड है।

$\therefore$ अन्तःकरण या विवेक से चिन्तन करने पर हम पाते हें कि 91 पर गहराई से विचार किया जा सकता है।

संख्या 91 पर मेरा ध्यान एक और कारण से आकर्षित हो रहा कि विभाज्यता के निमय में 7 और 13 पहली प्रथम दो संख्याएँ हैं जिनका नियम विचित्र और दुर्लभ है, क्योंकि लगभग (सभी) पुस्तकों में 7 तथा 13 से विभाज्यता का नियम उपलब्ध नहीं है। इस प्रकार संख्या 91 पर गहन चिन्तन के पश्चात् मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि अगर 91 पर विचार किया जाय तो यह सबसे छोटी संख्या हो सकती है जिसे हम दो अलग-अलग घनों के रूप में लिख सकते हैं। पहली दो संख्याएँ तो आसानी से उपलब्ध हो गईं पर अगली दो संख्याएँ मुझे परेशान किए रहीं। मैंने अपने तर्क से ऋणात्मक संख्याओं में प्रवेश किया और फल सामने आ गया। इसलिए रामानुजम्-हार्डी संख्या 1729 सबसे छोटी नहीं होकर वह संख्या 91 है। पर यह संख्या पूर्णांक संख्या में जाने पर ही सम्भव है।

* 1729 के गुणनखण्ड पर विचार करें तो कुछ बात निकलकर सामने आ रही है, जैसे-

1729 = 1, 7, 13, 19, 91, 133, 247, 1729

1729 = $1 \times 1729 = (865 + 864)(865 - 864) = 865^2 - 864^2$

1729 = $7 \times 247 = (127 + 120)(127 - 120) = 127^2 - 120^2$

1729 = $13 \times 1729 = (73 + 60)(73 - 60) = 72^2 - 60^2$

1729 = $19 \times 91 = (55 + 36)(55 - 36) = 55^2 - 36^2$

इस प्रकार हम देखते हैं कि 1729 को दो-दो वर्गों के अन्तर के रूप में चार अलग-अलग तरीकों से लिख सकते हैं।

*फिर गहराई से विचार करने पर हम पतो हैं कि संख्या

$1729 \rightarrow 1+7+2+9=19$

$19 \times 91 = 1729$

(साभार-''अंकों का जादूई खेल'' द्वारा श्री अनूप कुमार सिंह आचार्य प्रकाशन : इलाहाबाद)

राष्ट्रीय प्रदूषण निवारण दिवस : 2 दिसम्बर

पर्यावरण संरक्षण-हमारी जिम्मेदारी

❒ किशनलाल प्रजापत

पर्यावरण संरक्षण हर प्राणी का कर्त्तव्य है। मानव जीवन को सुरक्षित रखना है तो पृथ्वी पर जल, वायु, पेड़, जन्तु सभी की देखरेख जरूरी है। हमने हमारी सुविधा के लिए औद्योगिकी विकास की राह पकड़ ली है। परन्तु इस असंतुलित विकास ने पर्यावरण की गणित को बिगाड़ दिया है। जहाँ एक तरफ हम खनन कर जमीन को खोखला कर रहे है वही दूसरी तरफ बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी कर वजन बेहिसाब बढ़ा रहे है। फ्रियान गैसों का उपयोग ओजोन परत को क्षति पहुँचा रही है। फ्रियान गैसों पर नियंत्रण करना होगा। पृथ्वी पर पीने का पानी अल्प मात्रा में है उसका भी हम दुरुपयोग कर रहे हैं। पर्यावरण का हिसाब किताब रखना होगा आज हमें सावचेत होना होगा। नहीं तो वो दिन दूर नहीं हमें शुद्ध प्राणी वायु को भी खरीदना पड़ेगा। जब वृक्षारोपण नहीं होगा तो वायुमंडल में आक्सीजन की प्रतिशत मात्रा कम होगी तब बाजार में आक्सीजन के सिलेन्डर खरीदने पड़ेंगे। संभलना जरूरी है। बढ़ती आबादी भी पर्यावरण संरक्षण में बाधक है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने के लिए प्रत्येक विद्यालय में एक शिक्षक को पाबंद किया जाना चाहिए। वह छात्र छात्राओं को प्रेरित करें। विद्यालय में समय-समय पर पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए। कुछ कार्यक्रमों की रूपरेखा इस प्रकार हैं, जिसे आयोजित करें-

1. पर्यावरण सेमिनार :-

विद्यालय से पाँच छात्र-छात्राओं का चयन कर पर्यावरण पर तैयारी कर अपना लिखित प्रतिवेदन तैयार करें। तत्पश्चात विद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं को एक स्थान पर एकत्र कर इनके विचारों को बारी-बारी प्रस्तुत कराए ताकि विद्यालय में पर्यावरण संरक्षण की जानकारी बढ़े तभी जागरूकता आएगी।

2. पर्यावरण चित्रकला प्रतियोगिता

विद्यालय प्रार्थना सभा में सूचना देकर छात्रों को दस दिन का तैयारी का समय देकर नाम पंजीकृत करें। फिर उन्हें हॉल में बिठाकर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन करें। प्रथम, द्वितीय, तृतीय का चयन कर उन्हें पुरस्कृत करें।

3. पर्यावरण निबंध प्रतियोगिता

प्रार्थना सभा में सूचना देकर 10 दिवस का तैयारी समय देकर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन करें। प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कृत छात्र-छात्राओं के निबंध प्रार्थना सभा में पढ़ाकर सुनाएं ताकि पर्यावरण जागरूकता बढ़े।

इस प्रकार हम कई कार्यक्रम आयोजित कर सकते है। जिला मुख्यालय पर शहर की कई विद्यालयों को सम्मिलित किया जा सकता है। पर्यावरण संबंधी दिवसों की जानकारी जिन दिवसों के उपलक्ष्य में यह कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। कुछ विशिष्ट दिवस इस प्रकार है-

क्रं.	दिनांक	दिवस का नाम
1.	2 फरवरी	विश्व नम भूमि दिवस
2.	21 मार्च	विश्व वानिकी दिवस
3.	22 मार्च	विश्व जल दिवस
4.	22 अप्रेल	विश्व पृथ्वी दिवस
5.	22 मई	अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस
6.	5 जून	विश्व पर्यावरण दिवस
7.	11 जुलाई	विश्व जनसंख्या दिवस
8.	16 सितम्बर	विश्व ओजोन दिवस
9.	1-7 अक्टूबर	वन्य जीव सप्ताह
10.	2 दिसम्बर	राष्ट्रीय प्रदूषण निवारण दिवस

उपर्युक्त दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रमों की सूचना विद्यालय में सात दिन पूर्व प्रकाशित करें ताकि छात्र-छात्राएं तैयारी कर सके। इन आयोजनों के समाचार भी अखबारों में प्रकाशित अवश्य करें ताकि समाज में भी पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़े।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता लानी होगी। एक मिशन के तौर पर कार्य करना होगा। वृक्षारोपण अभी तक 11 प्रतिशत ही हुआ है। राजस्थान में इसे 33 प्रतिशत तक लाने का प्रयास चल रहा है। इसमें विद्यालय का योगदान अधिक हो सकता है।

प्रदूषण की समस्या बहुत ही विकट है। इसे रोकना तो नामुमकिन है पर इसे कम तो किया ही जा सकता है। जल, वायु, ध्वनि प्रदूषण आमतौर पर अधिक है। इस पर नियंत्रण करने के प्रयास करने चाहिए। रासायनिक पदार्थों के निर्माण व उपयोग के कारण बहुत सारा सिस्टम प्रभावित हो रहा है। इस पर ध्यान देना होगा। सौर ऊर्जा को बढ़ावा देना होगा। विश्व में ऐसी घटनाएं जिनसे पर्यावरण प्रभावित हुआ है आम जनता को उससे अवगत करा कर सावधान करना होगा।

इन रासायनिक पदार्थों के निर्माण व उपयोग के दौरान बरती गई असावधानी व अविवेक पूर्ण उपयोग से मानव जीवन खतरे में है। आज इन रसायनिक पदार्थों का उपयोग व निर्माण रोका तो नहीं जा सकता है परन्तु उनके प्रति कुछ कानून अवश्य होने चाहिए। कुछ आम जनता को भी इस बारे में जानकारी होनी चाहिए ताकि किसी अप्रिय घटना के समय उस क्षैत्र के लोग अपना बचाव कर सके। कुछ रासायनिक दुर्घटनाओं का परिचय प्रस्तुत है।

संसार की कुछ रासायनिक दुर्घटनाएं

वर्ष	स्थान	दुघर्टना	कु प्रभाव
1959	मिनिमाता जापान	पानी में पारा मिला	400 मरे 2000 जख्मी
1973	फोर्ट वेयने अमेरिका	वाइनल क्लोराइड के द्वारा रेल दुर्घटना	4500 विस्थापित
1974	फिक्स बोरो लन्दन UK	साइक्लो हेक्सेन द्वारा विस्फोट	22 मरे 3000 विस्थापित
1978	सेवेलो इटली	डाइआक्सीन रिसाव	730 विस्थापित
1978	मैनफ्रेडोथिया इटली	अमोनिया का रिसाव	20,000 को विस्थापित
1979	थ्रीमाइल्स आइजलैंड अमेरिका	न्युक्लीयर रिएक्टर घटना	2 लाख लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले लाया गया।
1980	सोमर चिली अमेरिका	फास्फोरस ट्राइक्लोराइड का रिसाव	300 घायल
1981	बार्किंग अमेरिका	सोडियम साइनाइड प्लांट में आग लगी	22 मरे
1982	टाफ्ट अमेरिका	एक्टोलीन द्वारा विस्फोट	17,000 को सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया।

1984	भोपाल भारत	पेस्टीसाइट प्लांट में गैस लीकेज	2500 मरे
1986	चेर्नोबिल रूस	नुक्लीयर रिएक्टर दुर्घटना	25 मरे
2013	सीरिया	रासायनिक हमला	2000 मरे

पर्यावरण के प्रति सामान्य जागरूकता के तहत आयोजित कार्यक्रमों में रूचिकर व पुरस्कार आधारित कार्यक्रम होने चाहिए। संस्था प्रधानों को अपने विद्यालय परिक्षैत्र में पर्यावरण में दक्षता रखने वाले डॉक्टर, किसान, पर्यावरण विद् को विद्यालय में आमन्त्रित कर वार्ता का आयोजन करना चाहिए।

पर्यावरण वार्ता का प्रभाव बहुत अच्छा रहता है। किसान अपने खेत में खेजड़ी, रोहिड़ा, कैर आदि वृक्षों की देखभाल बहुत अच्छी तरह करते हैं। उनकी वार्ता कभी-कभी हमें यह सोचने का मजबूर करती है। काश हमने समय रहते शहरी क्षेत्रों में भी इस तरफ ध्यान दिया होता तो तस्वीर कुछ अलग ही होती। अतः प्रत्येक माह ऐसी वार्ताओं की आवश्यकता है।

वृक्षारोपण करना अलग बात है। यदि 100 पौधे हमने अभियान के तहत रोपे उनमें से एक वर्ष बाद पुनः देखने पर यदि 4 पौधे भी जीवित नहीं मिले तो 100 पौधे रोपने के पीछे क्या उद्धेश्य अतः हमें चाहिए कि हम एक वर्ष में भले 20 पौधे लगाये। एक वर्ष बाद भी वे जीवित रखे जाये वर्ष पर्यन्त उनकी सुरक्षा करे। उनके खाद, पानी, बाड़े का ख्याल रखे तो 100% उपलब्धि होगी यह 20 पौधे पनप जायेंगे।

अतः हमें विद्यालय में इस पर ध्यान देना चाहिए वैसे इकोक्लब यह काम बहुत अच्छी तरह देख रहे है। मेरे इस लेख का मुख्य उद्देश्य है समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना। आज का बालक छात्र है। वह कल नागरिक है। कल इन्ही छात्रों के हाथों में हमारा राष्ट्र है। अतः पर्यावरण का जिम्मा किसी एक व्यक्ति या छात्र का नहीं वरन विद्यालय परिवार के प्रत्येक छात्र, अध्यापक, मंत्रालयिक कर्मचारी का समान रूप से है।

हरियाली होगी चारों ओर।
खुशहाली होगी चारो ओर।।
धरती करे पुकार
तुम पेड़ लगा दो मेरे आंगन में।
ग्लोबल वर्मिंग से तप रही हूं
कुछ सकून मिलेगा।।
घर-घर जाएंगे
एक एक पौधा नीम का लगाएंगे।
पहली बरसात का पहला काम बताओ।
मेरे विद्यालय में पौधे लगाने का दिन है।
खेजड़ी, रोहिड़ा, कैर, कूमटा खेत में।
नीम, सरेस और करींज विद्यालय में।

इस प्रकार के नारों का लेखन करवाना, इस प्रकार के कुछ अन्य नारे लिखकर छात्रों व समाज में वृक्षारोपण को एक उमंग व जोशीला अभियान स्वरूप दिया जा सकता है। जिसका प्रभाव भी दिखने को मिलेगा।

पर्यावरण को लेकर राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर ने भी एक बहुत बड़ा कदम उठाया है। प्रति वर्ष आयोजित हो रहे विज्ञान व जनसंख्या शिक्षा मेले का नाम भी बदल कर पर्यावरण को प्रमुखता से जोड़ा हे। अब इस मेले का नाम विज्ञान, गणित व पर्यावरण प्रदर्शनी व जनसंख्या शिक्षा मेला रख दिया है। यह मेला प्रति वर्ष सितम्बर माह में जिला स्तर पर आयोजित होता है उसके पश्चात राज्य पर आयोज्य है। अतः पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक कदम और आगे बढ़ा है। अतः विज्ञान क्लब भी अब पर्यावरण पर अधिक कार्य कर सकेगा।

पर्यावरण का बिगड़ता सन्तुलन आज कुछ नहीं है परन्तु आने वाले 50 वर्षों में यह कितना भयावह होगा इसकी कल्पना कर यदि हम आज संरक्षण पर अधिक कार्य करें तो हमारा पर्यावरण संभल सकता है। अतः हमें अधिक योजनाओं को लागू करने पर ध्यान देना चाहिए। यह योजना विद्यालय स्तर पर तैयार होनी चाहिए जिसमें सरपंच व ग्रामीणों की पूरी-पूरी भागीदारी होनी चाहिए। निश्चित तौर पर अच्छे परिणाम आयेंगे। पृथ्वी पर पौधों की प्रतिशत मात्रा में वृद्धि होगी कुछ फ्रियान गैसों के उपयोग में कमी आयेगी। कुछ लोग वाहन कम चलाकर पर्यावरण प्रदूषण को कम करने में भागीदार होंगे।

हम उपर्युक्त तथ्यों का विश्लेषण करें तो पायेंगे कि हमारे यह छात्र आने वाले समय में पर्यावरण संरक्षण के लिए वरदान साबित होंगे। विकास करना है, उद्योग संचालित करने है। परन्तु पर्यावरण की क्षति को रोकना होगा। इसलिए इस दिशा में अधिक कार्य की आवश्यकता है। जिसे करने के लिए एक ललक होनी चाहिए। पर्यावरण संरक्षण में हमारा योगदान होना चाहिए इस भावना को आधार मान कर अधिकाधिक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए। हमारी पृथ्वी का प्राकृतिक स्वरूप बना रहे इसके लिए हमें आवश्यक प्रबन्ध करने होंगे। प्रकृति हमें जल, वायु, भोजन देती है। हम प्रकृति का संरक्षण करें यही हमारा प्रमुख नारा है।

-वरिष्ठ अध्यापक (विज्ञान)
मु.भी.छा. रा.उ.मा.वि., गांधी चौक, बाड़मेर
मो. 9829308486

(पृ. 34 का शेष)

नीरव मैदानों में गूंजेगी उनकी कविता

विजयी विदाई के साथ क्रिकेट के भगवान के आंख में आँसू उनके संवेदनशील इंसान होने का उत्कृष्ट प्रमाण है । भावुकता की पराकाष्ठा के इन लम्हों में हर कोई यह तो सोचता है कि, सचिन की आंख में आंसू है और वे अपने हाथों से आँसू पौंछते हुए ड्रेसिंग रुम की तरफ लौट रहें है लेकिन कोई क्रिकेट के उस मैदान से पूछे, मैदान में बिछे उस घास से पूछे या फिर मैच के दौरान सचिन की साक्षी में यदाकदा आसमानी उड़ान के साथ इस महानतम खिलाड़ी की उपस्थिति का सुकून पाने वाले उन परिंदों से पूछे कि अब उनके आँसू कौन पौछे ? चाहे यह मैदान, यह घास और वे परिंदे भारत के सबसे बड़े मैदान के रूप में ईडन गार्डन के हो या फिर आस्ट्रेलिया के सीडनी और पर्थ के । वे मैदान वेस्टइंडीज के जमैका, ब्रिज टाउन जार्ज टाउन के हो या फिर दक्षिण अफ्रिका के खूबसूरत वन क्षैत्र के निकट बसे जोहान्सबर्ग के मैदान या फिर न्यूजीलैण्ड के क्राइस्टचर्च। वो मैदान क्रिकेट का मक्का कहे जाने वाले इग्लैण्ड का लार्ड्स हो या फिर उपमहाद्वीपीय देशों के रूप में अपने ही सरजमी के सपूत के रूप में अपने लाडले का क्रिकेट देखते रहे कराची, कोलम्बों और ढाका के मैदान हो । सचिन की क्रिकेट से विदाई के बाद इन मैदानों के सूनेपन, रिक्तता और नीरवता में सुनाई देगी सिर्फ उनकी कलाई और कदमों से लिखी गई क्रिकेट की कविता और क्रिकेट की रुबाई ।

-कार्यक्रम अधिकारी
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, बांसवाड़ा
मो. 9414101857

राजस्थान के शीर्षस्थ लेखक विजयदान देथा का जन्म 1 सितंबर 1926, बोरुंदा (जोधपुर) ने अपनी लेखन-यात्रा हिन्दी से शुरू की थी। हिन्दी में नियमित स्तंभ लेखन और अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन तथा सह-लेखन करते हुए अकस्मात् आपके जीवन में एक निर्णायक मोड़ आया। सन् 1959 में आपने हिन्दी छोड़कर राजस्थानी में लिखने का संकल्प लिया। बातां री फुलवाड़ी शीर्षक से लोक-कथाओं के पुनर्सृजन की आपकी यात्रा यहीं से आरंभ हुई। 14 भागों में से एक बातां री फुलवाड़ी (भाग-10) पर आपको राजस्थान भाषा का पहला साहित्य अकादमी पुरस्कार सन् 1974 में प्राप्त हुआ।

बातां री फुलवाड़ी 14 भागों के अलावा मुख्यत: हिन्दी में प्रकाशित आपकी रचानाएं इस प्रकार हैं:- अनोखा पेड़ (बाल कथाएं), दुविधा व अन्य कहानियां, उलझन, फुलवाड़ी भाग-10, कब्बूरानी (बाल कथाएं), चौधराइन की चतुराई, महामिलन प्रिय मृणाल, मेरो दरद न जाने कोय, लाजवंती, प्रतिशोध (उपन्यास)।

अंग्रेजी में प्रकाशित दि डिमेला एंड अदर स्टोरीज (अनु. रूथ वनित)ा एवं मराठी द्वंद (अनु. वनिता सावंत) तथा बातां री फुलवाड़ी के गुजराती, मराठी, ओड़िया, बाड्ला और उर्दू अनुवादों के कारण आपको भरपूर ख्याति मिली है। आठ भागों में प्रकाशित राजस्थानी-हिन्दी कहावत कोश दोनों भाषाओं को आपका एक अमूल्य अवदान है।

कथा-लेखन के अलावा आपने संग्रहण, संपादन एवं पाठ-शोधन जैसे कार्य विपुल परिमाण में अचूक कौशल से संपन्न किए हैं। सन् 1987 में प्रकाशित रुख एक अद्भुत ग्रंथ है, जिसमें आपने अपने पढ़े गए में से एक श्रेष्ठ चयन नयाभिराम प्रस्तुति के साथ हिन्दी पाठकों को भेंट किया है। आपके द्वारा संपादित परंपरा राजस्थान (त्रैमासिक) के तीन विशिष्ट अंक लोकगीत, गोरा हट जा तथा जेठवे रा सोरठा राजस्थानी साहित्य की थाती है। सन् 1960 में प्रख्यात लोक कलाविद् कोमल कोठारी के साथ आपने 'रूपायन संस्थान' के नाम से लोक-संस्कृति केन्द्र की स्थापना कर विपुल मात्रा में लोकवाद्यों, लोकगीतो, लोक-संस्कृति के उपादानों का संग्रहण भी किया।

विजयदान देथा की कहानियों का जादू फ़िल्मकारों, नाट्य-निर्देशकों एवं सीरियल-निर्माताओ के भी सिर चढ़कर बोला है। मणि कौल, श्याम बेनगल, प्रकाश झा और अमोल पालेकर ने आपकी कहानियों पर फ़िल्में बनाई है। साहित्य अकादमी ने आप पर एक वृतचित्र का निर्माण किया है। आपकी कहानियों की दूरदर्शन-प्रस्तुति और नाट्य-मंचन हुए हैं। प्रख्यात रंग-निर्देशक हबीब तनवीर द्वारा निर्देशित आपकी कहानी पर आधारित नाटक 'चरणदास चोर' को देश-विदेश में बेहद सराहना मिली है।

आपको अब तक अनेक पुरस्कारों से समादृत किया जा चुका हैं, उनमें साहित्य अकादमी समेत भारतीय भाषा परिषद (कोलकाता), बिहारी पुरस्कार, के.के. बिड़ला फाउंडेशन (दिल्ली), नाहर पुरस्कार (मुंबई), राजस्थानी श्री (जयपुर), राजस्थान रा रतन (अजमेर), दी ग्रेट सन ऑफ़ राजस्थान प्रमुख हैं। साहित्य अकादमी ने अपना सर्वोच्च सम्मान महतर सदस्यता और दूरदर्शन एवं आकाशवाणी ने श्री देथा को इमेरिटस फ़ेलोशिप देकर समादृत किया है।

(साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'विजयदान देथा रचना संचयन' के फ्लेप से साभार।)

श्रद्धांजलि

नहीं भूल पाएंगे बिज्जी आपको

विश्वास नहीं हो पा रहा कि राजस्थान रत्न विजयदान देथा 'बिज्जी' नहीं रहे। रविवार, 10 नवम्बर 2013 को उन्होंने अन्तिम सांस ली। हिन्दी और राजस्थानी दोनों भाषाओं में समान अधिकार से साहित्यसृजन करने वाले विजयदान देथा 'बिज्जी' नाम से प्रख्यात थे। उनकी लम्बी बीमारी के बावजूद प्रशंसक बिज्जी के इस तरह छोड़कर चले जाने से व्यथित हैं। जीवन भर साहित्य का श्रीवर्द्धन करने वाले बिज्जी ने एक बार कहा था, ''मृत्यु तो जीवन का शृंगार है। यह न हो तो कैसे काम चले? सोचो मेरे सारे पुरखे साथ होते तो क्या होता?'' तो मृत्यु का अलिंगन कर, उसे अपना शृंगार बनाकर बिज्जी अपने पुरखों के पास चले गए हैं। वे राजस्थान की माटी में जन्मे देश के दूसरे रवीन्द्रनाथ टैगोर थे। तभी तो उनका नाम विश्व के सर्वोच सम्मान नोबल पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया था। सर्वोच्च नागरिक अलंकरणों में पद्मश्री अलंकरण से विभूषित विजयदान देथा सूर्यनगरी जोधपुर के बोरूंदा गॉव के सपूत थे। बोरूंदा उनके लिए सर्वोच्च था। माटी के उपकार को हर वक्त जेहन में रखने वाले बिज्जी के कारण बोरूंदा का नाम देश-दुनिया में जाना गया। आखिर यही तो होता हैं माटी के प्रति ऋण चुकाना। कितने हैं जो बिज्जी की तरह माटी को मस्तक पर लगाते हैं। अपनी माटी से बड़ा मोह था उन्हें। यह हमारे लिए सीख भी है। बिज्जी का जन्म पहली सितम्बर 1926 के दिन बोरूंदा में चारण परिवार में हुआ था। उनके दादा जुगतीदान एवं पिता सबलदान प्रसिद्ध कवि थे। प्राथमिक शिक्षा अपने भाई सुमेरदान के पास जैतारण में ग्रहण करने के बाद उनकी आगे की पढ़ाई बिहार व बाड़मेर में हुई। विजयदान देथा शरतचन्द्र के साहित्य से बहुत प्रभावित थे बल्कि कहना चाहिए कि उन्हीं से प्रेरणा पाकर उन्होंने कलम पकड़ी। वे चेखोव और रवीन्द्र के भी प्रशंसक थे।

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के द्वारा बिज्जी के रचना संसार को लेकर सवा सता सौ पृष्ठ का वृहत् ग्रंथ वर्ष 2009 में प्रकाशित किया 'विजयदान देथा रचना संचयन' शीर्षक से। ग्रंथ का संपादन मूर्धन्य साहित्यकार कैलाश कबीर ने किया। यह बिज्जी के साहित्य का एक तरह से प्रतिनिधि ग्रंथ है। इसमें बिज्जी के पाठकप्रिय उपन्यास महामिलन एवं 20 कहानियों के साथ ही विभिन्न विधाओं में उनका सृजन व साक्षात्कार सम्मिलित किया गया है।

बिज्जी से मेरा परिचय वर्ष 1995-96 में हुआ था। उन दिनों मैं लोक जुम्बिश डाइट, बीकानेर में उपप्रधानाचार्य था। तब डाइट भवन में बातपोशी पर आयोजित एक कार्यशाला में बीकानेर पधारे थे बिज्जी। बोर्दिया साहब भी आए थे। कुछ संस्थान की जिम्मेदारियों की व्यस्तता और कुछ ''इतने बड़े साहित्यकार से कैसे वार्ता करें'' की झिझक। एक-दो बार रू-ब-रू होने पर हाथ जोड़कर रामासामी हो गई थी। इन्हें इतना पता हो गया था कि मैं डाइट का एक अधिकारी हूँ। बस। उस दरम्यिान कोर ग्रुप की एक बैठक में बोर्दिया साहब ने सहज बातचीत में मुझे राजस्थानी भाषा का साहित्यकार बताते हुए मेरी पुस्तक 'कहावतां रो संसार' निनाण में रो चक्कर कथा को सुनाया। इत्तफाक से बिज्जी ने वह पुस्तक देख रखी थी। बाद में मेरे प्रकाशक के बताया कि उन्होंने पुस्तक की प्रतियां विशिष्ट महानुभावों को भिजवाई थीं, जिनमें बिज्जी भी थे। बोर्दिया जी से यह सुनकर तपाक से बिज्जी बालें, ''अच्छा, आप वे ओमप्रकाश जी हैं। बढ़िया लिखते हो भाई। बीच-बीच में अंग्रेजी के शब्द लेखन को प्रभावी बना देते है। मैंने आपकी किताब पढ़ी है।'' मैं अवाक् रह गया। सब अपने आप हो गया। कुछ न बोलकर बस उनको धोक लगाने के लिए मस्तक झुक गया। राजस्थान

के रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सामने मैं बैठा था और वे मेरा उत्साह बढ़ा रहे थे। बोर्दिया-बिज्जी दोनों अब नहीं हैं। उनको किन शब्दों में अपनी श्रद्धाजंलि पेश करूं। आंसू और आह ही इसके साधन दिख रहे है। उन्हें सआंसू विनम्र प्रणाम।

बातपोशी कार्यशाला से वापिस जाते समय बिज्जी ने अपने आशीर्वाद में मुझे अधिक से अधिक पढ़ने व लिखने का आशीर्वाद प्रदान किया। वर्षों बाद, वर्ष 2007-08 में पुन: संयोग बना। मैं निदेशालय में शिक्षक प्रशिक्षण कार्य का अधिकारी था। बिज्जी के सुपुत्र श्री महेन्द्र देथा के बी.एड. कॉलेज, बोरून्दा के सिलसिले में महेन्द्रजी व उनके साथियों से सम्पर्क में बिज्जी की यादों को स्मरण करते हुए मेरा प्रणाम उन तक पहुँचाने का निवेदन किया। मेरे लिए इससे अधिक हर्ष व गर्व की बात और क्या होगी कि बिज्जी ने न केवल मुझे पहचान कर अपना आशीर्वाद भिजवाया बल्कि अपनी सद्य प्रकाशित पुस्तक दोहरी जिन्दगी प्रकाशक पेंगुइन बुक्स की एक प्रति भी प्रसाद स्वरूप मुझे भिजवाई जो आज भी मेरे निजी पुस्तकालय की शोभा बढ़ा रही है। बिज्जी को 2002 में बिहारी पुरस्कार एवं 2007 में पद्मश्री अर्पित किए गए। इससे पूर्व 1974 में राजस्थानी भाषा के अन्तर्गत साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। पिछले वर्ष ही उन्हें राजस्थान रत्न अवार्ड से विभूषित किया गया था। भारतीय भाषा परिषद् पुरस्कार (1992), मरुधरा पुरस्कार (1995), साहित्य चूड़ामणि पुरस्कार (2006) सहित अनेक पुरस्कारों से उन्हें नवाजा गया था। उनकी कहानियों पर आधारित कुछ फिल्में भी बनी। उनके लेखन में बातां री फुलवारी प्रमुख है जो 14 खण्डों में लिखी गई। यह लेखन कार्य 1960 से 1975 के मध्य हुआ। इसके अलावा बापू के हत्यारे (1946) अनोखा पेड़ (1968) चौधराईन की चतुराई (1996) सपन प्रिया (1997) मेरा दर्द न जाने कोय (1997) महामिलन (1998) प्रिय मृणाण (1998) भी उनके उल्लेखनीय सृजन हैं।

आज बिज्जी हमारे मध्य नहीं है। शरीर नहीं रहा मगर शब्द जिन्दा है। वे सदैव जिन्दा, अमर रहेंगे। बिज्जी अक्षर के उपासक थे। अक्षर, अक्षर होते हैं। उनका क्षरण नहीं होता, क्षय नहीं होता। शिविरा के विशाल पाठक परिवार की ओर से दिवंगत पुण्यात्मा को श्रद्धा सुमन व प्रणाम।

-ओमप्रकाश सारस्वत
वरिष्ठ संपादक (शिविरा)

नहीं रहे हँस के सम्पादक

राजेन्द्र यादव : हँसा मानसरोवर छूटा

नई कहानी के प्रमुख पैरोकार-यशस्वी साहित्यकार श्री राजेन्द्र यादव नहीं रहे। उन्होंने 28 अक्टूबर 2013 के दिन दिल्ली में अन्तिम श्वांस ली। उनका जन्म भी 28 तारीख को हुआ था-28 अगस्त 1929 को ऐतिहासिक नगर आगरा में। राजेन्द्र यादव को लेखन के संस्कार जैसे बाल्यकाल में ही मिल गए थे। अपना आत्मकथ्य निवेदन करते हुए राजेन्द्रजी कहते हैं, 'बचपन में, जब मेरी उम्र कोई 13-14 साल की रही होगी, एक झगड़े में मेरी टाँग टूट गई। साल भर इलाज होने के लिए लकड़ी के एक फ्रेम में मेरी टांग बंधी रही। इस बीच शारीरिक गतिविधियां नहीं थीं, तो मैं एक कल्पना की दुनिया में चला गया। जो पढ़ता था, उसी तरह की चीजें लिखना शुरू की। उस समय हमारी प्रिय किताब चन्द्रकान्ता संतति थी तो हमने भी तिलिस्मी उपन्यास लिखना शुरू किया। एक योजना थी कि 20-25 दिनों में एक उपन्यास लिखा जाएगा और लिख डाला।''

इस प्रकार 13-14 वर्ष की बाल्यावस्था में कलम को सम्भालने वाले राजेन्द्र यादव 83-84 वर्ष की आयु तक सतत लिखते-पढ़ते रहे। सात दशक का यह कलम का शानदार सफर भारत के साहित्य क्षेत्र में किसी इतिहास से कम नहीं है। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द्र का हँस पिछले 28 वर्षों से आप ही संभाल रहे थे। संभाल क्या रहे थे बल्कि कहना चाहिए कि बंद हँस को उन्होंने न केवल पुनः प्रारम्भ किया अपितु ऊंचाइया प्रदान की। वे कहते, ''पिछले 28 वर्षों से तो हँस के सम्पादकीय और हँस को ओढ़ना-बिछाना जारी है। किसी ओर की तरफ देखने का मौका ही नहीं मिलता। लगभग तीन दशक के उनके हँस सम्पादककाल में देश के कितने साहित्यकारों को लिखने-पढ़ने का सौभाग्य मिला होगा। वे साहित्य जगत के दैदीप्यमान सितारे थे जिनके प्रकाश से हजारों शब्द साधकों को साहित्य साधना की पृष्ठभूमि प्राप्त हुई।

राजेन्द्र यादव बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी साहित्य मनीषि थे। नयी कहानी के प्रमुख सूत्रधार के रूप में प्रतिष्ठित रहे राजेन्द्र जी के कई कहानी संग्रह प्रकाशित हुए जिनमें खेल-खिलौने, किनारे से किनारे तक, देवताओं की मूर्तियां, जहाँ लक्ष्मी कैद है, अभिमन्यु की आत्महत्या, छोटे-छोटे ताजमहल, ये जो आतिश गालिब, चौखटे तोड़ते त्रिकोण, किनारे से किनारे तक आदि मुख्य है। उनके द्वारा रूपक के रूप में लिखी कथा कृति में 'ढोल और अन्य कहानियां' का बहुत नाम है।

कहानी के साथ उपन्यास लिखने में भी उनका अधिकार था। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की उज्ज्वल परम्परा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कई उपन्यास लिखे जिन्हें साहित्य जगत में अद्भुत पहचान एवं प्रतिष्ठा मिली। इन उपन्यासों में उखड़े हुए लोग, एक इंच मुस्कान, प्रेत बोलते हैं, कुल्टा, अनदेखे अनजाने पुल, शह और मात आदि प्रमुख हैं। राजेन्द्र यादव ने कहानी व उपन्यास लेखन के समान्तर महत्वपूर्ण अनुवाद भी किए। भाषा व शैली पर उनका इतना अधिकार था कि उनके द्वारा किए गए अनुवाद मूल से कतई कम नहीं आंके गए। उनके द्वारा किए गए प्रमुख अनुवादों में तीन बहनें, चेरी का बगीचा तथा सीगल नाटक है। उनके द्वारा अनुदित उपन्यासों के टक्कर(चेख़व), अजनबी (कामू), बसन्त प्लावन (तुर्गनेव), हमारे युग का एक नायक (लर्मन्तोव), प्रथम प्रेम (तुर्गनेव), एक मछुआ-एक मोती (स्टाइन बैक) आदि उल्लेखनीय हैं।

राजेन्द्र यादव ने कहानीकार डॉ. मन्नू भण्डारी के साथ विवाह किया और 35 वर्षों तक वैवाहिक जीवन जीने के बाद दोनों अलग हो गए। मन्नू भण्डारी स्वयं विख्यात साहित्यकार हैं।

आज राजेन्द्र यादव हमारे बीच नहीं है। सच तो यह है कि वे शरीर रूप में अब हमारे मध्य नहीं है मगर उनका साहित्य और साहित्य को प्रदत्त योगदान चिरस्मरणीय रहेगा। इसीलिए साहित्यकार अमर होते हैं। वे कभी मर नहीं सकते। सदैव अमर रहेंगे। उनके जीवन में अंक 28 बहुत महत्वपूर्ण रहा। उनका जन्म और मरण दोनों 28 तारीख को हुई-जन्म तिथि 28 अगस्त और मरण तिथि 28 अक्टूबर। उन्होंने हँस पत्रिका का 28 वर्ष तक सम्पादन किया और अन्ततः हँस का सम्पादन करते-करते यह हँसा जैसे मानसरोवर को उड़ गया। उनकी पावन स्मृति को सादर प्रणाम।

-मदनलाल पुरोहित, प्र.अ.
रा.मा.वि., फतेहपुर, संगरिया (हनुमानगढ़)
मो. 9460688160

बोध कथाएं/कलानाथ शास्त्री/अंशुल प्रकाशन, बोहराजी का बाग, टोंक रोड़, जयपुर-15/संस्करण 2012/पृष्ठ सं. 88/ मूल्य ₹ 150.00

समीक्षात्मक पुस्तक बोध कथाएं शृंखला भाग-1 में 78 लघु कहानियों का संग्रह है। प्रत्येक कहानी सफल जीवन के लिए व्यावहारिक संदेश देती है। यदि प्रदत्त संदेशों को व्यवहार में उतारें तो जीवन उन्नत हो सकता है। किन्हीं भी कथाओं की प्रशंसा अथवा आलोचना की सार्थकता तभी है जबकि उनके पीछे कोई ठोस तर्क हों। समदृष्टि के बिना यह महत्वहीन है। लेखक का यह विचार बहुत सराहनीय है कि धार्मिक आचार की अनुपालना आस्था के आधार पर ही उचित है उसके लिये जोर जबरदस्ती ठीक नही है। समीक्ष्य पुस्तक में जो बोध कथाएं संकलित हैं, वे सभी सारगर्भित हैं। इसके संदेशों को आत्मसात करने से जीवन विस्तृत/उदार हो जाता हैं।

'आँखे खुली रखो' के माध्यम से लेखक ने यह संदेश देने का प्रयास किया है कि सफल प्रशासन के लिये यह आवश्यक है कि चर्म चक्षु के साथ-साथ ज्ञान चक्षु भी खुले रहें। कहानी 'सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था' के द्वारा लेखक ने यह संदेश दिया है कि दीपोत्सव अमावस्या पर किसी गरीब के घर, बस्तियों, पहाड़ियों, तलहटियों आदि में रोशनी करें अर्थात् समभाव रखते हुए सभी को साथ लेकर विकास का प्रयास करें।

कथा 'शौक के वश में न हो' के माध्यम से आलसी समाज के सामन्तवादी शौक पर कटाक्ष करते हुए लेख ने यह प्रेरणा दी है कि शौक, इच्छाएं रखें जरूर लेकिन इनके वशीभूत नही हो अथवा जीवन में समस्याएं आ सकती है। कहानी 'कर्म को छोड़कर भजन करना' में महामना मदनमोहन मालवीय ने भगवान श्रीकृष्ण का गीता में कहा गया श्लोक ''परिहाय निजं कर्म कृष्ण कृष्णेति वादिन: मद्द्रोहिणस्ते विज्ञेया यत कर्ममयो हमा' का स्मरण करवाया है अर्थात् जब व्यक्ति कर्म छोड़कर भजन आदि में समय व्यतीत करता है तो अकर्मण्यता पनपती है। अपने कार्यों एवं जिम्मेदारियों को निष्ठा एवं समर्पित भाव से पूर्ण करना ही ईश्वर की सबसे बड़ी आराधना है।

समीक्ष्य पुस्तक में जीवन में श्रम के महत्व को कहानी 'श्रम: साफल्य साधनम्' के माध्यम से उजागर किया है। आज लोग शारीरिक श्रम के कार्य को हीन भावना से देखते है। संभवत: यह पाश्चात्य संस्कृति के अंध अनुसरण का ही प्रभाव है। हम इस बात को भूल रहे है कि न ते श्रान्तस्य सख्याय देवा: अर्थात जो व्यक्ति स्वयं श्रम नहीं करते देवता भी उनकी सहायता नहीं करते। योगेश्वर भगवान श्री कृष्ण, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, गोपालकृष्ण गोखले, लाल बहादुर शास्त्री जैसी महान विभूतियों ने श्रम के बल पर ही जीवन में श्रेष्ठ मुकाम हासिल किया।

समीक्षात्मक पुस्तक में मूल्य सम्प्रेषित करने वाली कथाओं की भाषा सरल एवं रुचिकर है। कहानियां संक्षिप्त है। व्यस्तता के युग में यह पुस्तक पढ़ने की प्रवृति को बनाए रखने का प्रशंनीय कार्य करेगी। ये कथाएं समाज के नैतिक मूल्यों का पोषण करने में सक्षम होंगी।

-सुनीता चावला, सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर
मो.9414426063

फिर कभी बतलाएंगे/माधव नागदा/ऋचा इंडिया पब्लिशर्स, बिस्सों का चौक, बीकानेर/ संस्करण 2013/पृ.सं. 126/मूल्य ₹ 200.00

प्रसिद्ध शायर बकहम शेख अब्दुल हमीद का एक लोकप्रिय शेर है-मुख्सतर सी दास्ताने गम है लेकिन क्या करें/कौन मानेगा समीक्ष्य पुस्तक का नामकरण - फिर कभी बतलाएंगे। भाई माधव नागदा बहुविध बहुदिश लेखक और सच तो यह है कि बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी व्यक्ति है। साहित्य में कहानी, लघुकथा, कविता आदि का लेखन इतने अधिकारपूर्वक करते हैं कि जिस विधा में भी उन्हें पढ़ रहे होते हैं, लगता है कि यही उनकी प्रमुख विधा है और भाषा की दृष्टि से देखें तो हिन्दी व राजस्थानी दोनों भाषाओं पर उनकी बराबर की पकड़ है।

'फिर कभी बतलाएंगे' डायरी विधा में माधव विरचित सवा सौ पृष्ठों की कृति है। माधव नागदा की सन् 2000 से 2004, पांच वर्षों की डायरी से उदधृत सम्पादित अंश इस पुस्तक में दिए गए हैं। डायरी लिखना कोई आसान काम नहीं है। वैसे कुछ भी लिखना आसान नहीं होता, मगर डायरी तो नियमितता व एकाग्रचित्ता दोनों की बराबर अपेक्षा रखती है। अपेक्षा ही नहीं वरन अनिवार्य क्योंकि पहले तो दिन भर के घटनाक्रम को मस्तिष्क में करीने से अपलोड करना और फिर दैनिक कार्यों की तरह रात्रि में उसका अपनी दृष्टि से लेखन करना होता है। डायरी लेखन के लिए ये जरूरी शर्ते हैं। माधव इस दृष्टि से विशुद्ध ईमानदार डायरी लेखक बनकर उभरते हैं।

माधव ने बतौर आत्मकथ्य फ्लेप पर जो लिखा है, उसे पढ़ने के बाद वे पाठकों के अन्तर्मन में और महान बन जाते हैं। किशोरावस्था में पढ़ाई के लिए पैसों का जुगाड़ करने हेतु कुल्फी बेचने का सत्य यों उद्घाटित करना लेखकीय ईमानदारी व साहित्यिक प्रमाणिकता का उदाहरण है।

फिर कभी बतलाएंगे की शुरूआत 'दिल ढूंढता है' शीर्षक से पहली जनवरी 2000 की डायरी से होता है। इस दिन नया वर्ष ही प्रारम्भ नहीं हुआ था बल्कि इसे नवसहस्त्राब्दी का भी श्रीगणेश मानते हैं। तब क्रिसमिस-डे से एक दिन पूर्व, 24 दिसम्बर 1999 को काठमाण्डू हवाई अड्डे से हुए भारतीय विमान के अपहरण का लोमर्हक दृश्य चित्रण करते हुए लिखा है, 'आतंकवादियों के पास न तो दिल होता है और न दिमाग। वे हाथों में बन्दूक थामे मात्र रोबोट होते हैं। ब्रेनवाश के पश्चात उनकी प्रथम परीक्षा सम्भवतः यही होती होगी कि वे अपने किसी आत्मीय के सीने में गोलियां दाग कर दिखाएं इस शर्त के साथ कि ऐसा करते हुए उनके चेहरे पर अफसोस की एक शिकन तक न उभरे।'

माधव की डायरी है तो उसमें साहित्यिक पुट तो होगा ही। बात कहेंगे मगर साहित्यिक अंदाज में। वर्ष 2000 के पंचायत चुनाव का दृश्य देखिए, 'वैसे कई लोग मैदान में कूद पड़े हैं और अपने-अपने अखाड़े बना लिए हैं।... कुछ लोग सुबह किसी एक अखाड़े पर नजर आते हैं, दोपहर दूसरे पर तो शाम को तीसरे पर लड़खड़ाते दिखाई देते हैं। असली वारे-न्यारे चुनाव की पूर्व रात्रि में होंगे। जो जितना बांटेगा, वह उतना ही काटेगा।' उर्दू लेखक अली सरदार जाफरी की पुस्तक 'लखनऊ की पाँच रातें' पढ़ कर उसके

बारे में माधव की डायरी लेखन (19.1.2000) पुस्तक की समीक्षा से कम नहीं है।

माधव में कहानी पढ़ने और अन्ततः पढ़ने व लिखने के संस्कार उत्पन्न होने का सच 31 मार्च 2000 की डायरी में दस दिवसीय दशामाता व्रत अनुष्ठान के वर्णन में आया है। वे लिखते हैं, 'मुझमें कहानी के प्रति लगाव, उसे कहने का चाव इन कथा गोष्ठियों से ही उत्पन्न हुआ। बचपन में माँ के साथ मैं भी जाता। बिना नागा। मन में असीम उमंग कि कहानियां जरूर सुननी है चाहे इन दिनों पढ़ाई क्यों न छूट जाए। घर आकर मैं माँ से दुबारा सुनता। रात को सोते वक्त भी।' कहानीकार बनने के लिए इतना समर्पण चाहिए।

'मन उद्वेलित है' शीर्षकाधीन डायरी लेखन में पहली जनवरी 2002 को लिखी डायरी, जो इस संकलन की सबसे छोटी मगर, ...घाव करे गंभीर की तर्ज पर उद्वेलनकारी प्रस्तुति है। जरा देखिए-

अखबार मैं एक कार्टून छपा है।

पत्नी, 'दो हजार दो।'

पति, 'कहां से दूं दो हजार? जेब में फूटी कौड़ी भी नहीं है।'

'फिर कभी बतलाएंगे' अध्याय में विद्यालय के चपरासी को पात्र बनाकर बहुत खूब लिखा है, चपरासी का सम्मानजनक नाम है सहायक कर्मचारी। यह वर्ग अभी तक हमारी संस्था की स्टाफ काउंसिल का सदस्य नहीं था। कोई पार्टी हो रही है या विदाई समारोह तो अलग-थलग कटे-कटे से।

बहरहाल, ये कतिपय बानगियां है जो माधव की डायरी पर प्रकाश डालती है। समीक्षा के सार रूप में कह सकते हैं कि जो भी लिखा है, अद्भुत है जिसकी अनुभूति सार नहीं, सारा पढ़ने से होगी। उनके द्वारा 28 मार्च 2004 की डायरी में लिखे शहरयार के शेर को यहां उद्धृत करना उपयुक्त होगा-लो जलाते हैं फिर से चराग/ऐ हवा हौंसला दिखा अपना।

और यह भी; स्याह रात नहीं लेती नाम ढलने का/यही तो वक्त है सूरज तेरे निकलने का।

पुस्तक का मुद्रण गुणवत्तापूर्ण है। प्रूफ सम्बन्धी त्रुटियां नहीं है। कवर पेज व समग्र प्रस्तुति उत्तम है। लेखक एवं प्रकाशक दोनों की मेहनत बोलती नजर आती है। **-ओमप्रकाश सारस्वत**

वरिष्ठ सम्पादक (शिविरा)

बागवान/लोकेश शुक्ल/वाङ्मय प्रकाशन, वाङ्मय हाउस, ई-776/7, लाल कोठी योजना, जयपुर-15/संस्करण 2012/पृष्ठ सं. 96/मूल्य ₹ 150.00

साहित्य का पर्याय मानी जाने वाली कविता आधुनिक काल में छायावाद के उच्चतम शिखर का स्पर्श कर, छायावादोत्तर काल में अपना आकार बदलने लगी और प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा नई कविता के सोपानों को पाकर साठोत्तरी कविता के रूप में अवतरित हुई। अब कविता में यथार्थपरक बौद्धिकता और पम्परा के प्रति पूर्ण अनास्था व अस्वीकार के साथ भाषा में बेलौस सपाट बयानी के दर्शन हुए जिससे प्रतिबद्ध कविता, नई कविता, शमशानी कविता और अकविता जैसे आंदोलनों का जन्म हुआ अत: शिल्प की दृष्टि से भी रूपाकारों में परिवर्तन हुआ। लंबी कविता, नवगीत और मंत्र कविता का प्रादुर्भाव हुआ जिसने सामाजिक यथार्थ को नई भाषा में शब्दबद्ध किया। विद्वानों के अनुसार-

'लंबी कविताओं का सृजन नए कवियों की उस चेतना को रेखांकित करता है जिसके सहारे कवि समकालीन संकट बोध और उससे जुड़े हुए प्रश्नों-उपप्रश्नों को उठाते हुए परिवेश के प्रति अइपनी साझेदारी प्रकट करते हैं और हरेक बिंदु पर अपनी उपस्थिति बतलाते हैं।'

'बागवान' पिता व संतानों के आपसी संबंधों को उकेरती ऐसी ही एक लंबी कविता है न कि काव्य-संग्रह। बागवान पिता, जो संतानों के उत्थान हेतु नींव की ईंट बन मौन देवदूत सा घर के लिए समर्पित हो चुपचाप चलता रहता है। संतति की सुरक्षा के लिए बाड़ बनकर खड़ा हो जाता है। उनके कष्ट निवारण हेतु जान की बाजी लगाने में भी नहीं हिचकता। उनकी कठिनाईयों का लाइफ लाइन की तरह समाधान कर, पथ के कंटकों को बुहार, उन्हें उच्चतम शिखर पर प्रतिष्ठित करने को तत्पर रहता है। वह अपनी संतति को अपनी क्षमता से बढ़कर सुंदर जीवन देने का सफल प्रयास करते हुए उनकी उपलब्धियों पर हर्षित होता है। वह जानता है उसकी संतति ही अगली पीढ़ी को संसार में अवतरित करेगी।

यही बागवान तब हतप्रभ हो जाता है जब उसकी यही संतान उसे सीढी की तरह प्रयोग कर स्वयं दृढ़ स्थिति में पहुँच, उसे हेय समझ, हाशिए पर ला खड़ा करती है। उसे कबाड़ और पिछड़ा हुआ जान, उससे कन्नी काटने लगती है और पिता के परिश्रम व तपस्या को उसके कर्त्तव्य की संज्ञा देती है। चुकती शक्ति, शिथिल व रोगग्रस्त शरीर का वृद्ध बागवान उपेक्षा से व्यथित हो तय नहीं कर पाता कि इसे वह पीढ़ियों का अंतराल कहे या वक्त का बौनापन। उपेक्षा व तिरस्कार से भरी जीवनयात्रा में यदि उसे अब जीवनसाथी से बिछड़कर रहना पड़ता है तो वह पूरी तरह से टूट जाता है। उसे लगता है कि सब कुछ देकर, त्यागपूर्ण जीवन बिताकर भी वह घर का रहा न घाट का। संतान के व्यवहार से दु:खी बागवान को यदि कहीं से भी प्रेम व सम्मान मिलता है तो वह स्वयं को धन्य समझ, संतति को सफलताओं का आशीष देता है।

पौत्र-पौत्रियों के रूप में नए पुष्पों का आगमन, उनसे प्राप्त प्यार व आदर बागवान को आनंदित करता है। 'मूल से प्यारे सूद' के समान पौत्र दादी के इलाज व दादू के चश्मे के लिए गुल्लक तोड़कर पैसे देने के लिए डाँट खाने से भी गुरेज़ नहीं करती। यह सुगंधित बयार बागवान को सहारा देती है। रचना का विषय युगीन संदर्भ से प्रेरित है।

किसी अनगढ़शिला पर आकृति का आभास कराते यहाँ-वहाँ किए गए रेखांकर सा अनुभव 'बागवान' को देखकर हुआ। इसे अकविता की श्रेणी में रखते हुए कहा जा सकता है कि यह कविता न होकर भी कविता है और कविता होकर भी कविता नहीं है। यह भावों को शब्दों के जमावड़े से उभारने का प्रयास मात्र है। रचना में सख्श, निजिता, श्रद्धा, रूसवाह, कोताई जैसी अनेक वर्तनीगत अशुद्धियाँ उसे कमजोर करती हैं। रचनाकार बागवान नामक चलचित्र से बेहद प्रभावित लगते हैं। चलचित्र की घटनाओं के अलावा जीवन से जुड़ी अन्य घटनाओं को भी उकेरा जा सकता था। रचनाकार को प्रतिष्ठित रचनाकारों की श्रेष्ठ रचनाओं का अधिकाधिक पठन व मनन करना चाहिए ताकि लेखनी निखरे। चित्रांकन अच्छा है पर पृष्ठानुसार काव्य के विषय पर आधारित होता तो सुंदर की श्रेणी में आता। **-डॉ. उषा किरण सोनी**

ज्ञान कुंज, 307, गाँधीनगर
लालगढ़, बीकानेर-334001
मो. 9929181526

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता है। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं। -वरिष्ठ सम्पादक

'मित्रों' को खेत में बुलाएंगे कैप्सूल

50 कैप्सूल प्रति हैक्टेयर कारगर खेतों में मोयला व लट्ट सतेत अन्य शत्रु कीट दिखाई देने पर किसानों को प्रति हैक्टेयर 50 कृत्रिम खुशबुदार कैप्सूल अलग-अलग दूरी से लगाने होंगे, जो हवा के साथ खेतों में खुशबु फैलाकर मित्र कीटों को आमंत्रित करेंगे। कपास व चावल की फसल को बर्बाद करने वाले शत्रु कीटों को खात्मे के लिए राष्ट्रीय कृषि प्रमुख कीट ब्यूरो (एनबीएआईआई), बेंगलूरू की ओर से ऐसे खुशबूदार कृत्रिम कैप्सूल तैयार किए गए है। जिनकी सुगंध पाकर मित्र कीट खेतों में आएंगे और शत्रु कीटों को खाकर नष्ट कर देंगे। आगामी समय में इस प्रकार के कैप्सूलों का जिला स्तर पर भी प्रदर्शन किया जाएगा।

इसलिए पड़ी जरूरत-दरअसल, इससे पहले खेतों में शत्रु कीटों को नष्ट करने के लिए कृषि वैज्ञानिकों की ओर से कृत्रिम मित्र कीट भी तैयार किए गए थे, लेकिन महंगे होने व वातावरण के अनुरूप नहीं ढलने के कारण यह विधि विशेष सफल नहीं हो पाई। ऐसे में कीट ब्यूरों एनबीएआईआई के वैज्ञानिकों ने दुश्मन कीट पतंगा की त्वचा से निकलने वाली एक खुशबू (ट्राइकोसेन) को कृत्रिम रूप से बनाने की विधि विकसित की है। इससे कैप्यूल बनाए गए हैं। जिसे पाकर किसान मित्र कीट खेतों में आएंगे और खेतों में मौजूद दुश्मन कीटों की खत्म करेंगे। कैप्सूल प्रयोग में भी कारगर साबित हुआ हैं। ये कृषि प्रयोगशालाओं में आएंगे। हम शीघ्र ही इनका जिला स्तर पर प्रदर्शन करेंगे।

ब्लड प्रेशर की दवा से छुट्टी दिलाएगी छोटी सी तकनीक

रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) नियंत्रित करने की एक छोटी सी तकनीक आपको हमेशा के लिए दवाओं से छुट्टी दिला सकती है। ऍजियोग्राफी की तरह की जाने वाली इस विधि में किडनी के रास्ते से रक्तचाप का इलाज किया जाता है। प्रक्रिया में मात्र 10 से 15 मिनट का समय लगता है।

इस तकनीक को अपनाने की अनुमति देश में केवल 11 केन्द्रों को मिली है। जिसमें मेट्रो ग्रुप ऑफ अस्पताल भी शामिल है। अस्पताल के एमडी पद्मश्री डॉ. पुरुषोत्तम लाल ने बताया कि उच्च रक्तचाप वाले 15 प्रतिशत लोगों में इसका स्तर बेहद गंभीर होता है। ऐसे में तीन-चार दवाओं से भी यह नियंत्रित नहीं होता। इसके लिए अब अति सुक्ष्म सर्जरी के विकल्प को लिए अपनाया जाएगा।

प्रक्रिया : कैथेडर के जरिए किडनी में मौजूद नर्व फाइबर को रेडियोफ्रिक्वेंसी के जरिए जला दिया जाता है। इसे एक तरह से धमनियों की रूकावट कहा जाता है। इस फाइवर को रक्तचाप बढ़ाने का कारण माना जाता है। इसके बाद मरीज को कुछ दिनों तक सामान्य डाइट पर रख कर बीपी नियंत्रित करने वाली दवाएं बंद कर दी जाती हैं। विदेशों में 12 से 20 प्रतिशत मरीजों पर इसका प्रयोग किया जा चुका है।

तकनीक इसलिए जरूरी : 30-40 साल के युवाओं में रक्तचापको नियंत्रित करने के लिए अधिक 'एमजी' की दवाएं नहीं दी जा सकती। अधिक रक्तचाप का दीर्घकालीन असर किडनी पर पड़ता है। साथ ही दिल की धमनियों की बीमारी भी हो सकती है। ऐसे में किडनी को सुरक्षित रखते हुए रक्तचाप का इलाज करना चुनौती होता है। जबकि सुक्ष्म सर्जरी कर दिल और किडनी दोनों के खतरों को कम किया जा सकता है।

यूरिन से चार्ज होगा मोबाइल

बिजली जाने पर अब मोबाइल चार्ज करने की समस्या नहीं सताएगी। ब्रिटेन के 'ब्रिस्टल रोबोटिक्स लेबोरेटरी' के वैज्ञानिकों ने ऐसी तकनीक विकसित की है जिसके बारे में उनका दावा है कि इससे मानव मूत्र का इस्तेमाल कर मोबाइल फोन को चार्ज किया जा सकेगा।

इस तकनीक के तरह मूत्र के प्रयोग से बिजली का उत्पादन किया जाता है जिससे मोबाइल चार्ज होता है। ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए मूत्र को माइक्रोबियल ईंधन कोशिकाओं (एमएफसीज) के कैसकेड से प्रवाहित किया जाता है जिससे बिजली उत्पन्न होती है। वृहद स्तर पर इस तकनीक के इस्तेमाल से आने के बाद मोबाइल चार्ज करने के लिए ऊर्जा के प्राकृतिक स्रोतों जैसे सूर्य और हवा पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। यह तकनीक पूरी तरह से ईको-फ्रेंडली है क्योंकि मूत्र जैसे अपशिष्ट पदार्थ को बिजली उत्पन्न करने के लिए ऊर्जा के रूप में प्रयोग करने से पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुंचता। यूनिवर्सिअी ऑफ द वेस्ट ऑफ इंग्लैंड (यूडब्ल्यूई) के विशेषज्ञ डॉ. लोएनिस लेरोपौलस ने कहा कि ऐसा दुनिया में पहली बार हुआ है जब मूत्र को मोबाइल चार्ज करने के लिए इस्तेमाल में लाया गया है। इस तरह से चार्ज किए गए मोबाइल फोन से एसएमएस संदेश भेजने, वेब ब्राउजिंग के इस्तेमाल और संक्षिप्त फोन कॉल करने जितनी ऊर्जा उत्पन्न की जा सकती है।

घड़ी बताएगी बची उम्र

सुनने में यह भले अजीब या डरावना लगे मगर स्वीडर के एक निर्माता ने एक ऐसी डिजिटल घड़ी बनाने का दावा किया है जो यह बताएगी कि उसके जीवन में अब कितने दिन शेष हैं। तकनीक की दुनिया से जुड़े लोग भले ही इसे 'मौत की घड़ी' करार दे रहे हों मगर इसे बनाने वाले फ्रेड्रिक कोल्टिंग इसे 'खुशी बांटने वाली घड़ी' कहते हैं।

इसे पहलनने की तमन्ना रखने वालों को अपनी सेहत और पारिवारिक पृष्ठभूमि से जुड़े कुछ सवालों के जवाब देने होंगे। इससे मिले आंकड़ों में से व्यक्ति की मौजूदा उम्र घटाने पर उसकी अनुमानित शेष उम्र का पता चलेगा। इसके साथ ही टिकर पर उलटी गिनती शुरू हो जाएगी। इसमें उम्र से घटते पल को साल, दिन, घंटे, मिनट और सेकेंड में दिखाया जाएगा। इसके निर्माता कोल्टिंग का मानना है कि इस घड़ी की मदद से लोग अपनी जिंदगी के हर पल को भरपूर जीने की कोशिश करेंगे। इसकी स्क्रीन पर पहली पंक्ति में साल, महीने और दिन नजर आते हैं। दूसरी पंक्ति में घंटे, मिनट और सेकेंड दिखते हैं। तीसरी व अंतिम पंक्ति में स्थानीय समय दिखता है।

हमारे भामाशाह

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रूपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। प्रति वर्ष 28 जून, भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरजोग भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। **-वरिष्ठ संपादक**

अजमेर

रा.उ.मा.वि., नरबदखेड़ा में श्रीमती गंगादेवी रावत द्वारा 11,000 रुपये की लागत से विद्यालय का मुख्य दरवाजा लोहे का तथा स्टाफ व विद्यार्थियों के लिए वाटर कूलर लागत 30,000 रुपये। गुप्त दान ब्यावर शहर के भामाशाह द्वारा प्याऊ में आर.ओ. सिस्टम लागत 11,000 रुपये। ग्रामवासियों के जन सहयोग से विद्यार्थियों के लिए 50 सैट टेबिल-स्टूल लागत 50,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., अशोक नगर (ब्यावर)** को श्री द्वारका प्रसाद रावत (पूर्व प्रधानाचार्य) द्वारा 1,00,000 रुपये की लागत से विद्यार्थियों हेतु स्टूल-टेबल शाला को भेंट। **रा.उ.मा.वि., दादिया** को समस्त ग्रामवासी द्वारा 70 सेट टेबल स्टूल लोहे के लागत 70,000 तथा 8 छत पंखें लागत 9,000 रुपये। स्वं श्री बिरदी चन्द शर्मा, रूपसिंह कोठारी, रामधन बोहरा द्वारा एक वाटर कूलर लागत 30,000 रुपये। श्री रामदयाल सिंह से एक प्रिन्टर लागत 5,600 रुपये। जन सहयोग से नकद 1,900 रुपये, स्वं श्री रतन गोदारा, स्व. रामकरण गोदारा से प्रत्येक से 550 रुपये नकर। सर्व श्री रामचन्द्र बेहरा, जनसहयोग, मंगलाराम नेहरा, स्व. लादूराम जाट, राधाकिशन कासोटिया, रतन लक्षकार प्रत्येक से 500-500 रुपये नकद। श्री रामधन बोहरा से 250 रुपये नकद। श्री हेमा खोखर से 700 रुपये नकद। श्री सूरज मान सिंह बडवा से 2,250 रुपये नकद। श्री विनोद कुमार, सुनील कुमार पाटनी से 5,000 रूपये नगर। श्री माणकचन्द मट्टड़ से 5,000 रुपये। जन सहयोग से 1,995 रुपये। स्वं श्री बिरदीचन्द शर्मा, रामधन बोहरा, रूप सिंह कोठारी प्रत्येक से 2,500 रुपये नकद। श्री गफ्फार मोहमद से 2,100 रुपये नकद।

अलवर

रा.उ.मा.वि., भौकर में श्री विजय कुमार गर्ग द्वारा 45,000 रुपये की लागत से विद्यालय परिसर में छात्रा शौचालय जिसमें 2 लघुशंका व एक शौचालन का निर्माण करवाया गया। **रा.बा.उ.मा.वि., मुण्डावर** में श्री रामकुमार द्वारा 50,000 रुपये की लागत से 25×20 का चबुतरा तथा एक सबमर्सिबल लगवाकर दिया। **रा.मा.वि., हमीदपुर** को श्री अशोक कुमार द्वारा 75 स्वेटर छात्रों को वितरित की गई। श्री हरफूल सिंह से सात (07) सिलिंग पंखें सप्रेम भेंट। ग्राम विकास समिति हमीदपुर से 500 वर्ग फुट जाली लोहे की प्राप्त हुई। **रा.मा.वि., सबलगढ़ बनेठी (मुण्डावर)** में श्री छतरमल हवलदार द्वारा स्टेज निर्माण लागत 13,000 रुपये। श्री मानसिंह से 15 सैट मेज-स्टूल (लोहे के) लागत-13,000 रुपये। केप्टन धर्मपाल से 11 सैट मेज-स्टूल (लोहे के) लागत 11,000 रुपये। सर्व श्री कैलाश चन्द, छाजूराम तथा ग्रामवासियों द्वारा प्रत्येक से 05-05 सैट मेज-स्टूल (लोहे के) प्रत्येक की लागत 5,000-5,000 रुपये।

उदयपुर

रा.उ.मा.वि., रूण्डेड़ा को श्री मोदी लाल रावतमल सिरोहिया (सोने-चांदी के व्यापारी) से साईकिल स्टैण्ड निर्माण हेतु 15,000 रुपये प्रदान। **रा.बा.उ.मा.वि., गोगुन्दा** को श्री पुना शंकर मेहता से 3,200 रूपये नकद, एस.बी.आई. गोगुन्दा से तीन छत पंखें एवं एक्वागार्ड प्राप्त हुए। **रा.मा.वि., मटून (गिर्वा)** को वेदान्ता-हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड उदयपुर की मटून माईन्स इकाई से 40 टेबल, 40 स्टूल (छात्र/छात्रा), 10 टेबल 10 कुर्सी (शिक्षक हेतु) 30 डेस्क बेन्च (प्राथमिक छात्र/छात्रा हेतु) 50 दरी पट्टी (छात्र-छात्रा हेतु) तथा एक सेनीटेशन किट प्राप्त हुए। **रा.उ.प्रा.वि., मंगरीफला (बोरतलाई)** को सर्वश्री नवीन मेहता, दलपत सिंह जैन एवं कांता लोढ़ा द्वारा स्थानीय विद्यालय के 140 विद्यार्थियों को वेशभुषा लागत 35,000 रुपये श्री राजू भाई बोहरा से छः टेबल एवं छः स्टूल, अध्यापक श्री अम्बालाल चौबीसा से चार प्लास्टिक कुर्सियां, गांव के नवयुवकों द्वारा बीस कुर्सियाँ, दो ब्रेंचे तथा प्रधानाध्यापक श्री सुरेश कुमार खटीक द्वारा सभी विद्यार्थियों को टाई उपलब्ध करवाई गई।

श्री गंगानगर

रा.उ.प्रा.वि., बिरधौल (प.स. सूरतगढ़) को श्री ओमप्रकाश सुषार से साइन बोर्ड लागत 2,500 रुपये। श्री लियाकत अली से 15 कुर्सियां लागत 5,100 रुपये। श्री राजेन्द्र कुमार से 25 बेबी चेयर, 8 स्टूल प्लास्टिक लागत 7,100 रुपये। श्री रामचन्द्र थोरी से एक छत पंखा लागत 1,500 रुपये। श्री लियाकत अली से एक छत पंखा लागत 2,000 रुपये। श्री पृथ्वीराज थोरी, ख्याली राम थेरी, अमर चन्द थोरी से 5 बेंच छोटे तथा 21 बेबी चेयर लागत 8,000 रुपये। सर्व. श्री दुरजाराम सांसी, मनफूल राम थोरी, रामकुमार से प्रत्येक से 1,500 रुपये। श्री सीमेन्ट लिमिटेड परिवार से टंकी मय स्टेण्ड, टी गार्ड, श्री छगनलाल से एक लेजर प्रिण्टर लागत 5,800 रुपये। श्री शीलू राम से 2 बेंच बड़े, 10 स्टूल प्लास्टिक लागत 5,000 रुपये। श्री सुगनाराम से 6 बेंच बड़े, 25 स्टूल प्लास्टिक लागत 10,000 रुपये। श्री ओम प्रकाश मूण्ड से इनवर्टर एक लागत 20,000 रूपये। सर्व. श्री साहब राम (वार्ड पंच), कादर खान (सरपंच), पृथ्वीराज थोरी से प्रत्येक से 7 बेबीचेयर लागत प्रत्येक की 1,100 रुपये। श्री आत्माराम थोरी, इन्द्र सिंह राजपूत, धनराज थेरी से 10 कुर्सिया लागत 3,000 रुपये। श्री परमानन्द थोरी, शंकर लाल नायक से एक एम्पलीफायर, रबड़े स्पीकर, 2 माईक लागत 11,000 रुपये। **रा.उ.प्रा. वि., 9-10 बी.एन.डब्ल्यू., सादुलशहर** को 15 अगस्त 2013 को जनसहयोग से नकद 1,500 रुपये, श्री महेन्द्र कुमाद गोदारा से एक छत पंखा। श्री हेतराम कस्वा से 1,100 रुपये नकद प्राप्त हुए।

प्रतिध्वनि

शिक्षा और शिक्षक

पिछले महीने की ग्यारह तारीख (11 नवम्बर 2013) को शिक्षा दिवस था। ग्यारह नवम्बर भारत के प्रथम शिक्षामंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद का जन्म दिन है जो शिक्षा दिवस (Education Day) के रूप में मनाया जाता है। पाँच सितम्बर डॉ. राधाकृष्णन् का जन्म दिन शिक्षक दिवस (Teachers Day) के रूप में मनाया जाता ही है। इस प्रकार शिक्षा व शिक्षक दोनों के दिवस भारत में समारोहित किए जाते हैं जो दो महान शिक्षाविदों के जन्म दिन है।

शिक्षा व शिक्षक के पृथक-पृथक व परस्पर अर्थ एवं सम्बन्ध पर विचार करें। मोटे रूप में **शिक्षा साध्य (End) है और शिक्षक साधन (Mean)** सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का तानाबाना इसलिए रचा गया है कि व्यक्ति शिक्षा रूपी साध्य प्राप्त कर अपने जीवन को सफल व सुरुचिपूर्ण बना सके। मनुष्य जीवन का उद्देश्य उसे अर्थपूर्ण, सुखी व समझयुक्त बनाना है अर्थात यह उसका साध्य है तथा शिक्षा उसकी साधन है। इस प्रकार यहां शिक्षा साध्य से साधन बन जाती है-शिक्षा साधन तथा सुखी जीवन साध्य। भारतीय मनीषा में जीवन का चरम उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति कर लेना बताया है। **'सा विद्या या विमुक्तये'** का अर्थ गहराई से समझना चाहिए। खैर जहां तक शिक्षक की बात है वह तो साधन है। इसीलिए शिक्षा व शिक्षकों के विभाग को मानव संसाधन विकास विभाग नाम दिया गया है।

शिक्षक का पुरातन नाम गुरु है। जो विद्या प्रतिदान कर अंधेरे को मिटाए उसे हमारी संस्कृति में गुरु कहा गया है। इस प्रकार प्राप्त ज्ञान से व्यक्ति के जीवन की राह सुगम बनती है। वह सांसारिक झंझावातों एवं प्रतियोगिता में स्वयं को जीने लायक समझता है, जिसका आधार शिक्षा है। उसमें आत्मविश्वास की वृद्धि होती है। कितना बड़ा काम है शिक्षक का । कितने उपकार छिपे हैं उसके योगदान में। यदि कोई हमारे किसी बिगड़े उपकरण को ठीक कर देता है तो हम उसके प्रति आभार प्रकट करते हैं। शिक्षक तो किसी मशीन-उपकरण को नहीं बल्कि हमारे जीवन को ठीक करने वाला है। जीवन रूपी मशीन को शिक्षक रूपी इंजीनियर ठीक करके इस प्रकार चला देता है कि वह फिर जीवनपर्यन्त चलती ही रहती है। शिक्षा न केवल स्वयं उसका जीवन रसमय, रंगमय एवं उद्देश्यमय बना देती है अपितु परिवार, समाज, देश प्रदेश सबके लिए कान्तिमय बनकर वह पेश आता है। ऐसे उदाहरण हमारे जीवन में बहुतेरे देखने को आते हैं और यह काम शिक्षक करता है। कितनी बड़ी भूमिका है उसकी! तभी तो उसे पिता का दर्जा दिया गया है। इस पर थोड़ा विस्तार से चर्चा कर लेते हैं।

भारतीय दर्शन में पाँच महानुभावों को पिता का दर्जा दिया गया है, पितृतुल्य माना गया है, उनमें एक शिक्षक है। ये पांच पिता इस प्रकार है-

1. जन्मदाता अर्थात जो जन्म दे।
2. जीवनदाता अर्थात जो जीवन दे।
3. विद्यादाता अर्थात जो शिक्षा दे।
4. त्राणदाता अर्थात जो भयमुक्त करे।
5. कन्यादाता अर्थात जो कन्यादान करे।

जन्म देने वाला तो पिता होता ही है लेकिन कई बार परिस्थितिवश जन्म देने वाला जन्म देने के पश्चात पालन-पोषण कर पाने में असमर्थ होता है। ऐसे में जो पालनपोषण, शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करता है, वह पिता से कम नहीं होता। इसे वासुदेव एवं नन्दबाबा के उदाहरणों से भलीभांति समझा जा सकता है। भगवान कृष्ण का जन्म वासुदेव ने दिया मगर जन्म के कुछ ही समय में उन्हें नन्दबाबा के घर पहुंचा दिया गया । आगे का सारा काम नन्दबाबा करते हैं। सोचिए, नन्द बाबा पिता हुए कि नहीं। बाल कृष्ण के लिए तो नन्दबाबा ही पिता है।

इंसान के रूप में जन्म तो मिल गया लेकिन समुचित शिक्षा कौशल न मिले तो उसका जीवन कष्टमय हो जाता है, मान प्रतिष्ठा की तो बात ही छोड़ दें। यह काम गुरु करता है। गुरु से प्राप्त शिक्षा के बल पर व्यक्ति का जीवन रसमय, रंगमय व यशमय बन जाता है। अत: उसे पिता का दर्जा दिया गया है। हम शिक्षकों को इस पर गर्व करना चाहिए। जो हमें भयमुक्त करे। उसके प्रति बड़ी श्रद्धा व सम्मान हमारे मन में रहता है। आधुनिक समय में भयमुक्त करने वाले को गॉड फादर कहा जाता है। कई बार छोटी आयु वाले व्यक्ति के समक्ष बड़ी अवस्था वाले व्यक्ति को झुकते हुए देखते हैं। बड़ा विचित्र लगता है। लेकिन वह आधारमय होता है। छोटी अवस्था वाला हैसियत में बड़ा होता है जिसके कारण बड़ी अवस्था वाला स्वयं को सुरक्षित व सहाय महसूस करता है। ऐसे त्राणदाता गॉड फादर पिता तुल्य माने जाते हैं। हमें इन मान्यताओं के प्रति श्रद्धा रखकर उनका सम्मान करना चाहिए।

शिक्षा दिवस के अवसर पर शिक्षा व शिक्षक को इस रूप में समझा जाना चाहिए। दिशाकल्प एवं प्रतिध्वनि में शिक्षक महिमा में प्रकाशित होने वाले शब्दों को लेकर व्यापक पाठक प्रतिक्रियाएं मिलती रहती हैं जिनमें अधिकांश, बल्कि लगभग सभी में शिविरा की प्रशंसा होती है। पाठकों की इस कृपा के लिए उनके प्रति विनम्र आभार एवं सविनय प्रणाम। शिविरा भविष्य में और बेहतर भूमिका निभा सके ऐसे आशीर्वाद की आदरणीय गुरुजन से प्रार्थना है।

शिविरा में प्रकाशित करने हेतु रंगीन फोटो, शैक्षिक समाचार एवं अनुभवजन्य विचार भिजवाने का अनुरोध है। इस माह के दिशाकल्प में निदेशक महोदया ने शिविरा को हेल्पलाइन के रूप में विकसित करने की महत्वपूर्ण बात कही है। यह शिविरा पत्रिका एवं उसके लाखों पाठकों के लिए अतिशय गर्व एवं और अधिक कर्त्तव्यपराण होकर कार्य करने की प्रेरणा देने वाली बात है।

शिविरा के ग्राहक बनने के लिए विभिन्न स्थानों से एक तरह से पाठक क्लब बनकर सुधि महानुभाव चन्दा राशि भिजवा रहे हैं। बहुत अच्छा लगता है। प्रथम और अन्तिम, हमारा तो यही कहना है कि पत्रिका आप पाठकों की है। आप ही इसे गौरव तथा गरिमा प्रदान करते हैं। आशा है, आशा व उत्साह की यह सरिता इसी प्रकार सतत प्रवाहित रहेगी।

-ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.
opsaraswat58@gmail.com

शिविरा पत्रिका मासिक/दिसम्बर2013 अंक/प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक डॉ. वीना प्रधान, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा द्वारा डिपार्टमेन्ट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेन्ट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर-334011 से प्रकाशित एवं हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : डॉ. वीना प्रधान

शिविरा, दिसम्बर–2013
चित्र समाचार

झुंझुनू

राजकीय माध्यमिक विद्यालय, हेमतसर में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में एक छात्र को पुरस्कार प्रदान करते हुए संस्था प्रधान।

अजमेर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चांपानेरी में वरिष्ठ अध्यापक श्री रामगोपाल बैरवा के नेतृत्व में वृक्षारोपण करते विद्यार्थी।

जयपुर

राजकीय सेठ आनन्दीलाल पोद्दार मूक बधिर विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा प्राप्त करते हुए विशेष छात्रगण।

श्रीगंगानगर

प्रधानाध्यापक वाक्पीठ का आयोजन सूरतगढ़ मुख्यालय पर हुआ जिसमें माँ सरस्वती को माल्यार्पण के क्षण।

चौमूं (जयपुर)

राजकीय बालिका उ.मा.विद्यालय, चौमूं में बाल दिवस पर आयोजित बाल मेले का अवलोकन करती प्राचार्या श्रीमती साधना गर्ग।

बूंदी

राजकीय माध्यमिक विद्यालय, भैरुपुरा औझा में बालिकाओं को साइकिल वितरण किया गया।

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

जम्भेश्वर मन्दिर, मुकाम (बीकानेर)

बिश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक जाम्भोजी महाराज का मुक्तिधाम बीकानेर जिले की नोखा पंचायत समिति से 16 किमी. दूर स्थित है। यह स्थान बिश्नोई सम्प्रदाय के अनुयायियों के लिए अत्यन्त श्रद्धा का केन्द्र है। मुकाम के तालवा नाम स्थान पर गुरुदेव का भव्य मन्दिर है जिसमें उनकी समाधि स्थित है। यहां प्रतिवर्ष फाल्गुन तथा आसोज की अमावस्या को मेले भरते हैं जिनमें राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश सहित विभिन्न राज्यों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंच कर मत्था टेकते हैं। इस अवसर पर एक सम्मेलन भी आयोजित होता है। बिश्नोई सम्प्रदाय को आडम्बरों एवं जटिलताओं से मुक्त कर मर्यादित जीवन जीने के लिए जाम्भोजी ने 29 नियमों का प्रतिपादन किया। इन उन्नतीस (बीस + नौ) नियमों के कारण ही इस सम्प्रदाय का नाम बिश्नोई पड़ा। कहा जाता है-

उणतीस धर्म री आंकड़ी, हृदय धरियो जोय।
जम्भेश्वर किरपा करें, बहुरि जलम न होय।।

सौजन्य : **ओम प्रकाश बिश्नोई**, व.लि., (पुरस्कृत) माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर मो. 9413481029